हिंदी–छत्तीसगढ़ी एवं संस्कृत

कक्षा – 3

सत्र 2024–25

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे –> **App** की समस्त अनुमति को स्वीकार करें –> उपयोगकर्ता **Profile** का चयन करें।

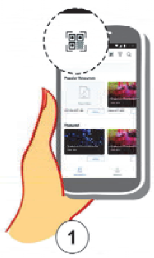

1 पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

2 मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

3 सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

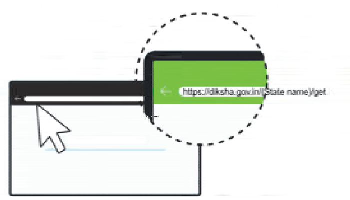

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

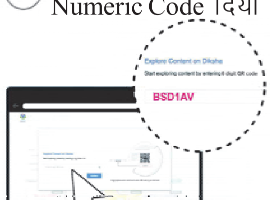

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

नि:शुल्क वितरण हेतु

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

प्रकाशन वर्ष 2024

मार्गदर्शन

डॉ. हृदयकांत दीवान, विद्या भवन, उदयपुर

संयोजक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

मुख्य समन्वयक

श्री आर. के. वर्मा

विषय समन्वयक

बी. आर. साहू, विद्या डांगे

लेखक मण्डल

हिंदी	छत्तीसगढ़ी	संस्कृत
डॉ. सी.एल.मिश्र, बी. आर. साहू, डॉ. एस.एस. त्रिपाठी, राजेन्द्र पाण्डेय, गजानन्द प्रसाद देवांगन, श्रीमती उषा पवार, डॉ.(श्रीमती) रचना अजमेरा, अजय गुप्ता, विनय शरण सिंह, दिनेश गौतम।	एम.एस.वर्मा, दिनेश गौतम, भूषण लाल परगनिहा, एम. जाकिर, रामकुमार वर्मा, रमेश यादव, श्रीमती तृप्ता कश्यप, शिवकुमार अंगारे, योगेन्द्र बेलचंदन	डॉ. सुरेश शर्मा, बी.पी. तिवारी,(समन्वयक) डॉ. कल्पना द्विवेदी, ललित कुमार शर्मा, डॉ. संध्यारानी शुक्ला, डॉ. राजकुमार तिवारी

चित्रांकन

राजेन्द्र सिंह ठाकुर, रेखराज चौरागड़े, समीर श्रीवास्तव, प्रशांत, गिरिधारी साहू

आवरण पृष्ठ एवं ले–आउट

रेखराज चौरागड़े

प्रकाशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

प्राक्कथन

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़, रायपुर को सत्र 2002–03 में छत्तीसगढ़ शासन की ओर से प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम तैयार करने तथा उस पर आधारित पाठ्यपुस्तकों की रचना करने का दायित्व सौंपा गया। यह निर्णय भी लिया गया था कि नवरचित पाठ्यपुस्तकों का दो वर्षो तक राज्य के विभिन्न अंचलों के चयनित विद्यालयों में क्षेत्र–परीक्षण किया जाएगा और फिर विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रधान अध्यापकों, पालकों और विषय विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर उनमें संशोधन उपरांत राज्य के समस्त विद्यालयों हेतु उपलब्ध कराया जाएगा। तदनुसार सत्र 2007–08 से कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक को राज्य के समस्त विद्यालयों में अध्ययन हेतु उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस पुस्तक को अंतिम रूप देते समय विषय के विशेषज्ञों द्वारा क्षेत्र के विद्यालयों में भ्रमण कर विद्यार्थियों, शिक्षकों और भाषा के अन्य विशेषज्ञों से चर्चा की गई और विद्यार्थियों के ज्ञान के स्तर, शिक्षकों तथा समुदाय से प्राप्त सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक संशोधन, परिवर्तन किया गया है।

भाषा–शिक्षण का मूल उद्देश्य है–सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान, भाषा प्रयोग तथा सृजनात्मकता का विकास करना। इस पुस्तक में इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति करने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक के द्वारा हमने विद्यार्थियों को साहित्य की विभिन्न विधाओं–निबंध, कहानी कविता, पत्र, आत्मकथा, एकांकी आदि से परिचित कराया है। साहित्य की इन विधाओं का परिचय उनकी अभिरुचि को परिष्कृत करके उनको श्रेष्ठ साहित्य के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा, यह हमारा विश्वास है।

इस पुस्तक में जिन विचारों और मानवीय मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है उनमें पारस्परिक सद्भाव, सामाजिक सहयोग, साहस, पर्यावरण चेतना को विशेष स्थान दिया गया है। पुस्तक को स्तरानुकूल और रोचक बनाने में राज्य तथा राज्य के बाहर के अनेक शिक्षकों, विद्वानों, शिक्षाविदों का महत्वपूर्ण योगदान है। पाठों के चुनाव करने में हमें डॉ. हृदयकान्त दीवान विद्याभवन, उदयपुर एवं प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली का विशेष रूप से मार्गदर्शन मिला है। परिषद् उनके बहुमूल्य सहयोग के लिए आभारी है। लेखक मंडल के सदस्यों ने जिस कर्मठता और लगन से इस पुस्तक को अंतिम रूप प्रदान किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। पुस्तक में जिन कवियों/लेखकों की रचनाएँ संकलित की गई हैं, हम उनके या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों से कुछ बातें

शिक्षक मित्रो! हिंदी कक्षा–3 आपके हाथ में है। यों तो इसका प्रायोगिक संस्करण वर्ष–2005–06 में ही प्रकाशित हो गया था, किंतु वह राज्य के मात्र दो सौ विद्यालयों में ही प्रचलन में था। क्षेत्र परीक्षण के दौरान विद्यार्थियों को आई कठिनाइयों, अपने राज्य के तथा राज्य के बाहर के शिक्षाविदों तथा राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक समिति के सुझावों के उपरांत प्रायोगिक संस्करण में आवश्यक सुधार करके प्रस्तुत संस्करण का स्वरूप प्रदान किया गया है। फलस्वरूप वर्तमान संस्करण में आपको काफी परिवर्तन दिखाई पड़ेगा।

इस संस्करण में हमने गतिविधियों पर काफी बल दिया है। प्रत्येक पाठ को पढ़कर विद्यार्थी परस्पर मौखिक प्रश्न पूछें और उनके उत्तर दें। इससे विद्यार्थियों में प्रश्न गढ़ने की कला विकसित होगी और पाठों के प्रति उनकी समझ विकसित होगी। विद्यार्थियों के परस्पर प्रश्नोत्तर के बाद आप भी कुछ मौखिक प्रश्न उनसे पूछें। इससे आपको भी यह परीक्षण करने का अवसर मिलेगा कि विद्यार्थी पाठ को आत्मसात कर पाए हैं या नहीं।

अभ्यास में दिए गए प्रश्न कई तरह के हैं। कुछ प्रश्न तो सीधे–सीधे सूचना आधारित प्रश्न हैं, जो सीधे पाठ से खोजे जा सकते हैं; कुछ प्रश्न कार्य–कारण संबंध वाले हैं तथा कुछ अन्य प्रश्न कल्पना व सृजनात्मकता वाले हैं। ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने में बच्चों को सोचना पड़ेगा; अतः ऐसे प्रश्नों से वे अधिक सीख सकेंगे। बच्चों को सोचने के लिए प्रोत्साहित करें। इसी प्रकार के प्रश्नों के उत्तर यदि बच्चे अपनी भाषा में दें या लिखें तो अच्छा है।

विद्यार्थियों के उच्चारण पर भी आप ध्यान दें। विद्यार्थी बहुधा श–स; छ–क्ष, र, ऋ के उच्चारण में भेद नहीं कर पाते। इन वर्णों से बने शब्दों का अधिक–से–अधिक उच्चारण कराएँ। निरंतर अभ्यास से उच्चारण दोष अवश्य दूर होते हैं।

यही प्रक्रिया शब्दार्थ के संबंध में भी अपनाई गई है। शब्द का अर्थ विद्यार्थी की समझ में आ गया, यह तभी सही माना जाएगा, जब विद्यार्थी उस शब्द को वाक्य में प्रयोग कर सकेगा। बच्चे इन शब्दों का उपयोग कर जितने वाक्य बता सकेंगे उतना ही अच्छा है।

उच्चारण दोष के साथ–ही–साथ विद्यार्थियों के वर्तनी संबंधी दोषों को दूर करने के लिए श्रुतिलेखन पर भी प्रस्तुत पुस्तक में बल दिया गया है। श्रुतिलेख की जाँच के लिए बच्चों को परस्पर एक दूसरे की अभ्यास–पुस्तिका देखने को दें। ये अभ्यास पुस्तिकाएँ बच्चे आपके मार्गदर्शन में देखेंगे। इससे उन्हें शब्दों के शुद्ध और अशुद्ध रूप को पहचानने में सहायता मिलेगी। श्रुतिलेख के द्वारा बच्चों को सुधार लेख लिखने का भी अभ्यास होगा।

योग्यता–विस्तार के अंतर्गत कुछ ऐसे अभ्यास दिए गए हैं जिनमें बच्चों की सृजनशीलता का विकास होगा। ये अभ्यास अलग– अलग प्रकार के हैं, जैसे कहीं बच्चों से ढूँढ़कर या पूछकर या सोचकर कुछ लिखने को कहा गया है। कहीं चित्र या टिकटें या पत्तियाँ संग्रह करने को कहा गया है; कहीं किसी पक्षी या पशु के बिंदु–चित्र से उसका पूरा चित्र बनाने के लिए कहा गया है; कहीं किसी घटना का कक्षा में या बालसभा में वर्णन करने को कहा गया है। ऐसे क्रियाकलापों से बच्चों का

रचनात्मक और सृजनात्मक विकास होगा। समय—समय पर कक्षा या बालसभा में वादविवाद, अंत्याक्षरी, चित्र—निर्माण आदि का आयोजन करने से या उन्हें ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण करवाने और उस पर लेख लिखवाने के क्रियाकलापों से भी बच्चों की क्षमताओं का विकास होगा। आपको यह देखना है कि इन क्रियाकलापों में सभी विद्यार्थियों की सहभागिता रहे। शिक्षण के क्षेत्र में पाठ्यपुस्तक, सहायक सामग्री तथा अन्य शैक्षिक गतिविधि कोई भी इतना सुझाव नहीं दे सकती जितना एक सुयोग्य शिक्षक दे सकता है। वह शिक्षक ही है जो, नीरस विषयवस्तु को सुगम और सरस बना देता है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक के शिक्षण में राज्य के सभी संबंधित शिक्षक अपनी इस प्रतिभा का सही उपयोग करेंगे।

प्रत्येक शिक्षक अपने ढंग से शिक्षण—पद्धति को अपनाता है। शिक्षण की उसकी अपनी शैली रहती है। फिर भी हम अपेक्षा करते हैं कि हमारे इन सुझावों पर आप विचार करेंगे और यदि इन सुझावों को उपयोगी समझें तो अवश्य अपनाएँगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

विषय–सूची

हिंदी

क्र.	पाठ	पृष्ठ
	हिंदी	
1.	सीखो	1–4
2.	सच्चा बालक	5–9
3.	मुसवा रइथे जी (छत्तीसगढ़ी)	10–13
4.	बंदर बाँट	14–19
5.	मीठे बोल	20–22
6.	कबूतर और मधुमक्खियाँ	23–27
7.	चाँद का कुरता	28–32
8.	चलव खेलबो (छत्तीसगढ़ी)	33–39
9.	आदिमानव	40–44
10.	चुहिया की शादी	45–49
11.	दादा जी	50–54
12.	हाथी	55–60
13.	होनहार लइका नरेन्द्र (छत्तीसगढ़ी)	61–63
14.	कौन जीता	64–67
15.	मैं हूँ महानदी	68–72
16.	अगर पेड़ भी चलते होते	73–76
17.	सतवन्तिन गाय बहुला (छत्तीसगढ़ी)	77–83
18.	जंगल में स्कूल	84–87
19.	तेल का गिलास	88–92
20.	अब बतलाओ	93–98
21.	मैत्रीबाग (छत्तीसगढ़ी)	99–103
22.	क्या तुम मेरी अम्मा हो?	104–108
23.	कविता का कमाल	109–115
24.	बालसभा	116–118
	पुनरावृत्ति के प्रश्न	119–123
	संस्कृत	124–136
	राजू की कहानी	i–xvi

3JIDKQ

सीखने के प्रतिफल

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया	सीखने की संप्राप्ति **(Learning Ourcomes)**
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें :– • अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बातचीत करने की भरपूर आज़ादी और अवसर हों। • हिन्दी में सुनी गई बात, कविता, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने–सुनाने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने, प्रतिक्रिया देने के अवसर उपलब्ध हों। • बच्चों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिन्दी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या जिन भाषाओं के बच्चों कक्षा में हैं) में दोहराने के अवसर उपलब्ध हों। इससे भाषाओं को कक्षा में समुचित स्थान मिल सकेगा और उनका शब्द–भंडार, अभिव्यक्तियों का भी विकास करने के अवसर मिल सकेंगे। • 'पढ़ने का कोना/पुस्तकालय' में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की रोचक सामग्री; जैसे – बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ऑडियो–वीडियो सामग्री उपलब्ध हो। • तरह–तरह की कहानियों, कविताओं, पोस्टर आदि को चित्रों और संदर्भ के आधार पर समझने–समझाने के अवसर उपलब्ध हों। • विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों का कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे – किसी कहानी में किसी जानकारी को खोजना, किसी जानकारी	बच्चे – **LH301.** कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से समझते हुए सुनते और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्ति करते हैं। **LH302.** कहानी, कविता आदि को उपयुक्त उतार–चढ़ाव, गति, प्रवाह और सही पुट के साथ सुनाते हैं। **LH303.** सुनी हुई रचनाओं की विषय–वस्तु घटनाओं, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, राय बताते हैं/अपने तरीके से (कहानी, कविता आदि) अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं। **LH304.** आस–पास होने वाली गतिविधियों/घटनाओं और विभिन्न स्थितियों में हुए अपने अनुभवों के बारे में बताते, बातचीत करते और प्रश्न पूछते हैं। **LH305.** कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को समझते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं। **LH306.** तरह–तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (मौखिक/लिखित रूप से) देते हैं। **LH307.** अलग–अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं/अपनी राय देते हैं/शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (मौखिक, सांकेतिक) देते हैं।

को निकाल पाना, किसी घटना या पात्र के संबंध में तर्क, अपनी राय दे पाना आदि।

- सुनी, देखी बातों को अपने तरीके से, अपनी भाषा में लिखने के अवसर हों।
- अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर हों।
- संदर्भ और उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त शब्दों और वाक्यों का चयन करने, उनकी संरचना करने के अवसर उपलब्ध हों।
- अपना परिवार, विद्यालय, मोहल्ला, खेल का मैदान, गाँव की चौपाल जैसे विषयों पर अथवा स्वयं विषय का चुनाव कर अनुभवों को लिखकर एक–दूसरे से बाँटने के अवसर हों।
- एक–दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उन पर अपनी राय देने, उनमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग–अलग ढंग से लिखने के अवसर हों।

LH308. अलग–अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थ सुनिश्चित करते हैं।

LH309. तरह–तरह की कहानियों, कविताओं/रचनाओं की भाषा की बारीकियों (जैसे – शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा, सर्वनाम, विभिन्न विराम चिह्नों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग करते हैं।

LH310. अलग–अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं/अपनी राय देते हैं/ शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं।

LH311. स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व–नियंत्रित लेखन (कनवैंशनल राइटिंग) करते हैं।

LH312. विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में शब्दों के चुनाव, वाक्य संरचना और लेखन के स्वरूप (जैसे–दोस्त को पत्र लिखना, पत्रिका के संपादक को पत्र लिखना) को लेकर निर्णय लेते हुए लिखते हैं।

LH313. विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम–चिह्नों, जैसे– पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।

LH314. अलग–अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर अपनी प्रतिक्रिया लिखते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (लिखित/ब्रेल लिपि आदि में) देते हैं।

विषय–सूची (Contents)

अध्याय	पाठ का नाम	सीखने के प्रतिफल
1.	सीखो	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH307, LH308, LH309, LH311
2.	सच्चा बालक	LH301, LH303, LH305, LH306, LH307, LH308
3.	मुसवा रइथे जी (छत्तीसगढ़ी)	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH307, LH308, LH311, LH312
4.	बंदर बाँट	LH301, LH302, LH308, LH309, LH310, LH311
5.	मीठे बोल	LH301, LH302, LH304, LH305, LH306, LH307, LH308
6.	कबूतर और मधुमक्खियाँ	LH301, LH302, LH303, LH304, LH306, LH308, LH312
7.	चाँद का कुरता	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH308, LH311
8.	चलव खेलबो (छत्तीसगढ़ी)	LH301, LH302, LH303, LH304, LH306, LH307, LH308
9.	आदिमानव	LH301, LH302, LH303, LH305, LH306, LH308
10.	चुहिया की शादी	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH308
11.	दादा जी	LH301, LH302, LH304, LH305, LH306, LH307, LH308
12.	हाथी	LH301, LH302, LH304, LH305, LH308, LH309
13.	होनहार लइका नरेन्द्र (छत्तीसगढ़ी)	LH301, LH302, LH304, LH305, LH307, LH308, LH309
14.	कौन जीता	LH301, LH302, LH304, LH305, LH306, LH307, LH308, LH311
15.	मैं हूँ महानदी	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH306, LH307, LH309, LH311, LH312
16.	अगर पेड़ भी चलते होते	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH306, LH307, LH309, LH310, LH311, LH312
17.	सतवन्तिन गाय बहुला (छत्तीसगढ़ी)	LH301, LH302, LH304, LH305, LH308
18.	जंगल में स्कूल	LH301, LH302, LH304, LH305, LH307, LH308
19.	तेल का गिलास	LH301, LH302, LH304, LH305, LH306, LH307, LH308, LH309
20.	अब बतलाओ	LH301, LH302, LH304, LH305, LH306, LH307, LH312
21.	मैत्रीबाग (छत्तीसगढ़ी)	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH306, LH307, LH308, LH310, LH311
22.	क्या तुम मेरी अम्मा हो?	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH308, LH309, LH312
23.	कविता का कमाल	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH307, LH308, LH309, LH311, LH312
24.	बालसभा	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH306, LH309, LH311, LH312

उदाहराणार्थ रूब्रिक्स

Chapter अध्याय	**Sub-Topics** उप-विषय	**Level -1** स्तर-1	**Level -2** स्तर-2	**Level -3** स्तर-3	**Level -4** स्तर-4
After the lesson, students will be able to : **पाठ के बाद, विद्यार्थी कर सकेंगे :**		**Remember, Recall, List, Locate, Label, Recite** **याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करना, खोजना लेबल करना, वर्णन करना**	**Understand, explain, Illustrate, summaries, match** **समझना, व्याख्या करना, संक्षेप में लिखना, उदाहरण देना, मेल करना**	**apply, organize, use, solve, prove, draw** **प्रयोग करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, चित्रण करना**	**evaluate, hypothesis, analyses, compare, create, categories** **मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, तुलना करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना**
1	2	3	4	5	6
सीखो	• लयपूर्वक वाचन व हाव भाव से वाचन • अर्थ समझना • शब्दार्थ • प्रकृति से जुड़ाव • विशेषण	• कविता याद होना। • समानार्थी व पर्यायवाची शब्दों को बताना। • प्रकृति को समझ पाएगा।	• अर्थ समझ जाता है। • पाठ में आए शब्दों के विलोम शब्द बता पाना। • प्रकृति से प्राप्त चीजों को जानेगा।	• अपनी भाषा में अर्थ को व्यक्त कर पाना। • कविता को आगे बढ़ा पाना। • प्रकृति की सुरक्षा तथा दोहन की समझ बनेगी।	• अर्थ के साथ–साथ निहित भाव को समझना। • संबंधित पाठ के आधार पर कोई और कविता सुना पाता है। • प्रकृति से प्राप्त चीजों की विशेषता को समझ कर अपनी भाषा में लिख पाना

पाठ 1

सीखो

प्रकृति की वस्तुओं से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। फूल हमें हँसना सिखाते हैं, भौंरे गुनगुनाना और दीपक हमें जलकर भी प्रकाश देना सिखाता है। हमें चाहिए कि हम प्रकृति की चीजों से सदा कुछ सीखते रहें।

फूलों से नित हँसना सीखो,
भौंरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित,
सीखो शीश झुकाना।।

सीख हवा के झोंकों से लो,
कोमल भाव बहाना।
दूध तथा पानी से सीखो,
मिलना और मिलाना।।

सूरज की किरणों से सीखो,
जगना और जगाना।
लता और पेड़ों से सीखो,
सबको गले लगाना।।

मछली से सीखो,
स्वदेश के लिए तड़पकर मरना।
पतझड़ के पेड़ों से सीखो,
दुख में धीरज धरना।।

दीपक से सीखो,
जितना हो सके अँधेरा हरना।
पृथ्वी से सीखो प्राणी की,
सच्ची सेवा करना।।

जलधारा से सीखो,
आगे जीवन–पथ में बढ़ना।
और धुएँ से सीखो,
हरदम, ऊँचे ही पर चढ़ना।।

शब्दार्थ

तरु	=	पेड़, वृक्ष	धीरज	=	धैर्य
शीश	=	सिर	स्वदेश	=	अपना देश
नित	=	रोज			

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर लिखो।

जलधारा – ————————

हरदम – ————————

पथ – ————————

(हमेशा, रास्ता, बहता पानी)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. फूलों से हम क्या सीख सकते हैं?

प्र.2. सूरज की किरणें हमें क्या संदेश देती हैं ?

प्र.3. दीपक दिन–रात जलकर हमें क्या सिखाता है ?

प्र.4. जलधारा हमें क्या सिखाती है ?

प्र.5. ये बातें हमें कौन सिखाता है?

क– जगना और जगाना

ख– मिलना और मिलाना

ग– नित्य गाना

घ– जीवन–पथ में आगे बढ़ना

ङ– हरदम ऊँचे पर ही चढ़ना।

प्र.6. दीपक हमें प्रकाश देता है, ये चीजें हमें क्या देती हैं ?

मधुमक्खी ....

पेड़ ....

मिट्टी ....

बादल ....

प्र.7. तुम रोज सुबह कितने बजे उठते हो ?

प्र.8. तुम घर के किन कामों में अपनी माँ या बड़ों की मदद करते हो ?

भाषा–अध्ययन एवं व्याकरण

• शिक्षक श्रुतिलेख के रूप में एक पद बोलेंगे, विद्यार्थी लिखेंगे। बाद में अभ्यास –पुस्तिकाएँ अदल–बदलकर विद्यार्थी जाँचेंगे।

प्र.1. इस कविता में आए उन शब्दों को लिखो, जिनकी तुक मिलती हो, जैसे बढ़ना–चढ़ना।

प्र.2. समान अर्थवाले शब्दों की जोड़ी बनाकर लिखो।

सुमन	पृथ्वी
वृक्ष	सूरज
वायु	फूल
रवि	पवन
धरा	तरु

प्र.3. पढ़ो, समझो और लिखो।

जगना	जगाना
मिलना	....
झुकना	....

योग्यता विस्तार

- **सोचो, यदि ऐसा हो तो क्या होगा?**

- हवा न बहे।
- सूरज न उगे।
- पेड़ न हों।
- दीपक जलकर रोशनी न करे।

- अपने आस–पास ध्यान से देखो कि वहाँ क्या–क्या है? फिर उनके नाम इस तालिका में लिखो। और उनमें से जो तुम्हें पसंद हो, उनके चित्र बनाओ ।

फूलों के पौधे	वृक्ष	लताएँ	जलधारा / नदी

शिक्षण–संकेत

- कविता को लय और गति के साथ पढ़ाएँ।
- दो–दो पंक्तियाँ अलग–अलग विद्यार्थियों से पढ़वाएँ और उनके अर्थ पूछें।
- प्रकृति के बारे में बच्चों से चर्चा करें एवं उनके अनुभव सुनें ।

3K2CP1

पाठ 2

सच्चा बालक

3KB1QN

यह पाठ गोपालकृष्ण गोखले के बाल – जीवन की एक घटना पर आधारित है, जिसमें उन्होनें अपनी सच्चाई का परिचय दिया । आगे चलकर उन्होने देश को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आओ, हम माननीय गोपाल कृष्ण गोखले के बाल–जीवन की यह घटना पढ़ें और इससे शिक्षा ग्रहण करें।

एक दिन गुरु जी ने अपनी कक्षा के बच्चों को गणित का एक प्रश्न दिया। बच्चे प्रश्न को उस समय हल नहीं कर पाए। गुरु जी ने कहा, '' अच्छा इसे घर से करके लाना।'' इसके बाद छुट्टी हो गई और सब बच्चे अपने–अपने घर चले गए।

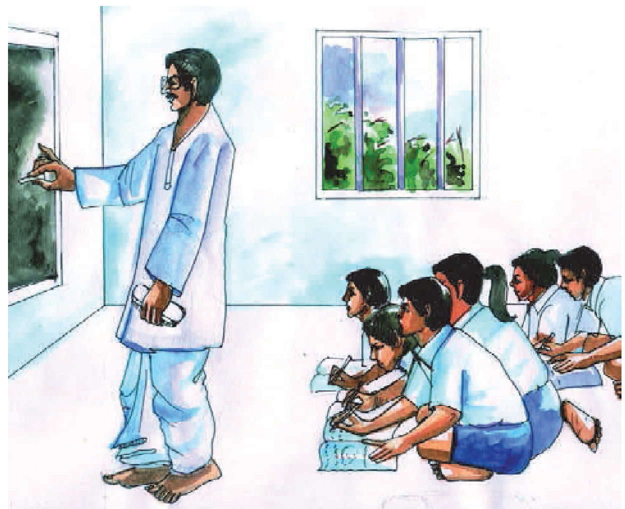

अगले दिन जब बच्चे शाला में पहुँचे तो सबने अपना–अपना गणित का हल किया हुआ प्रश्न गुरु जी को दिखाया। गुरु जी ने प्रत्येक बच्चे का प्रश्न जाँचा, परंतु किसी का भी हल ठीक नहीं निकला। कुछ बच्चों ने तो प्रश्न को हल करने का प्रयत्न ही नहीं किया था।

जब सब बच्चे अपनी–अपनी कॉपी दिखा चुके तब गोपाल ने अपनी कॉपी दिखाई। प्रश्न का उत्तर ठीक था। गुरु जी प्रसन्न हो गए और गोपाल की प्रशंसा करने लगे। अपनी प्रशंसा सुनकर सभी खुश होते हैं, परंतु गोपाल के चेहरे पर उदासी छा गई। गुरु जी ज्यों–ज्यों उसकी प्रशंसा करते गए त्यों–त्यों उदासी बढ़ती गई। अपनी अधिक प्रशंसा सुनकर वह बालक फूट–फूटकर रोने लगा।

गोपाल को रोता देखकर गुरु जी और सभी बच्चे आश्चर्यचकित रह गए। तब गुरु जी ने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा, '' बेटा! तुम तो बहुत योग्य बच्चे हो, भला रो क्यों रहे हो?''

गोपाल सिसकियाँ भरते हुए कहने लगा, '' गुरु जी! आप मेरी प्रशंसा कर रहे हैं, किंतु यह प्रश्न मैंने अपने आप हल नहीं किया। यह तो मैंने अपने बड़े भाई से पूछकर हल किया था। मुझे अपनी झूठी प्रशंसा सुनकर दुख हो रहा है।''

गोपाल कृष्ण गोखले

गुरु जी ने गोपाल की बात सुनी तो उनका हृदय गद्‌गद् हो गया। उन्होंने उसकी सच्चाई की प्रशंसा करते हुए कहा, ''बेटा, एक दिन तुम अवश्य अपना व अपने देश का नाम उज्ज्वल करोगे।"

बड़ा होकर वह बालक गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुआ। देश को स्वतंत्र कराने में गोखले जी का बहुत बड़ा योगदान रहा।

शब्दार्थ

योगदान	=	सहयोग
सपूत	=	अच्छा पुत्र
प्रसिद्ध	=	मशहूर
स्वतंत्र	=	आजाद
उज्ज्वल	=	स्वच्छ, साफ, चमकता हुआ

नीचे लिखे शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर लिखो।

प्रयत्न = ————————————

प्रत्येक = ————————————

प्रशंसा = ————————————

(तारीफ, कोशिश, हर एक)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. गुरु जी द्वारा अपनी प्रशंसा सुनकर गोपाल दुखी क्यों हुआ ?

प्र.2. गोपाल को सच्चा बालक क्यों कहा गया ?

प्र.3. गोखले जी क्यों प्रसिद्ध हुए ?

प्र.4. गोपाल की जगह तुम होते तो क्या करते ?

प्र.5. कोई तुम्हारी झूठी प्रशंसा करे तो तुम उससे क्या कहोगे ?

प्र.6. अपनी प्रशंसा सुनकर सभी बच्चे प्रसन्न होते हैं। इस संबंध में तुम्हारा क्या कहना है ?

प्र.7. इन वाक्यों को पाठ के अनुसार क्रम से लिखो।

क. गोपाल ने अपनी कॉपी दिखाई।

ख. गुरु जी ने प्रत्येक बच्चे की कापी जाँची।

ग. बड़ा होकर यह बालक गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

घ. गुरु जी ने उसकी सच्चाई की प्रशंसा की।

ङ. गुरु जी ने गणित का एक प्रश्न हल करने को दिया।

प्र.8. हर खाने में से एक–एक शब्द/शब्द–समूह लेकर वाक्य बनाओ।

सब	अपनी–अपनी	हल करने का	दिखाई।
कुछ बच्चों ने	स्वतंत्र कराने में	अपने–अपने घर	महत्वपूर्ण हाथ था।
देश को	प्रश्न	कॉपी	प्रयत्न ही नहीं किया।
सब बच्चों ने	बच्चे	गोखले जी का	चले गए।

प्र.9. सही जोड़ी बनाओ।

अ	आ
गुरु जी	फूट–फूटकर रोने लगा।
देश	का सवाल किसी ने हल नहीं किया।
गोपाल	स्वतंत्र हो गया।
गणित	प्रसन्न हो गए।

प्र.1. पढ़ो, समझो और छाँटकर अलग–अलग तालिका में लिखो।

क्रम, प्रार्थना, कार्य, पूर्व, प्रशंसा, भ्रम, दर्शक, कर्म, नम्र, प्रकाश।

रेफ वाले शब्द	रकार वाले शब्द
जैसे – कर्म	जैसे– प्रकाश

प्र.2. इन शब्दों में से सही शब्द चुनकर लिखो।

प्रशंसा/प्रशंशा, गुरु जी/गुरू जी, प्रश्न/प्रशन, कॉपी/कौपी, अधिक/अधीक

प्र.3. 'पुनः' इस शब्द में अः (:) लगा हुआ है। दो ऐसे शब्द लिखो जिनमें : का प्रयोग होता है।

प्र.4. तुमने बारहखड़ी क,का,कि,की,कु,कू,के,कै,को,कौ,कं पढ़ी है। इन शब्दों को इसी क्रम में लिखो।

मीत, मेरा, मुझे, मौका, मोर, मंद, मैना, मत, मूठ, मिलना, मान।

प्र.5. इनका प्रयोग करते हुए खाली स्थान भरो और शब्द पूरे करो।

न, ना, नि, नी, नु, नू, ने, नै, नो, नौ, नं।

अ –क, – तिक, – म, – शानी, सु–, –का, – द, सु – गे, – कसान, – तन।

समझो

- नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ो–

क. गुरु जी ने प्रत्येक बच्चे का उत्तर जाँचा।

ख. गुरु जी गोपाल की प्रशंसा करने लगे।

ग. गोपाल कृष्ण गोखले ने देश की सेवा की।

'क' वाक्य में 'गुरु जी' और 'बच्चे' शब्दों का प्रयोग हुआ है। गुरु जी शिक्षक के लिए कहा गया है। 'ख' वाक्य में 'गोपाल' और 'प्रशंसा' शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'गोपाल' व्यक्ति का नाम है और 'प्रशंसा' भाव का। वाक्य 'ग' में 'देश' शब्द का प्रयोग हुआ है। यह स्थान का नाम है। वस्तु, व्यक्ति, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

प्र.6. क. दो व्यक्तियों के नाम लिखो, जैसे– राम, गीता आदि ।

ख. दो वस्तुओं के नाम लिखो, जैसे–कुर्सी मेज आदि ।

ग. दो स्थानों के नाम लिखो, जैसे – रायपुर,राजिम आदि ।

घ. दो भावों के नाम लिखो, जैसे – अच्छाई, भलाई आदि ।

प्र.7 इस पाठ में ज्यों–ज्यों, सों–सों, अपनी–अपनी जैसे शब्दों की आवृति वाले शब्दों का प्रयोग हुआ है। अब निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग

करो–

अपना–अपना, जल्दी–जल्दी, सुबह–सुबह शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

रचना

- अपने आसपास की किसी ऐसी घटना के बारे में लिखो जो तुम्हें अच्छी लगी हो या अच्छी ना लगी हो।

योग्यता विस्तार

- अन्य महापुरुषों के बचपन की घटनाओं की जानकारी लो और कक्षा में सुनाओ।

3KJHSB

शिक्षण–संकेत

- पाठ का आदर्श वाचन करें और विद्यार्थियों से अनुकरण वाचन कराएँ।
- पठन–कौशल के विकास के लिए अतिरिक्त पाठ्य–सामग्री दें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ और उनका वाक्यों में प्रयोग कराएँ।
- महापुरुषों के बचपन की ऐसी ही घटनाएँ खोजने और कक्षा में सुनाने को कहें।

पाठ 3

मुसवा रइथे जी

पाठ परिचय– अलग–अलग जीव के रहे के ठिकाना अलग–अलग रहिथे। जइसे चिरइ मन खोंधरा बना के रहिथे अउ गेंगरुवा ह कच्चा माटी म रहिथे। ए गीत म किसम–किसम के जीव के रहे के ठिकाना बताए गे हावय।

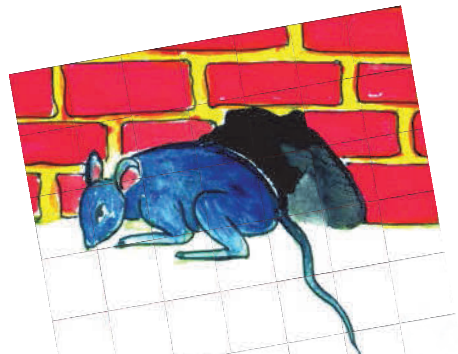

कउँवा रइथे खोंधरा म अउ,
बिला म मुसवा रइथे जी ।
कोलिहा रइथे खेत–खार म,
पानी म केछवा रइथे जी ।।

चाँटी रेंगय भुइयाँ म अउ,
मछरी तउँरय पानी म।
मेचका रइथे दुनो जघा म,
कोठा म गरुवा रइथे जी।।

कुकुर ह रइथे खोर–गली म,
मिट्ठू रुख–राइ म जी ।
रेरा चिरइ के खोंधरा सुघ्घर,
माटी म गेंगरुवा रइथे जी ।।

शिक्षण संकेत– कविता ल राग ले पढ़ँय अउ लइका मन ल पढ़वावँय। लइका मन के दल बना के दूदी पंक्ति एकक दल ले सरलग बोलवावयँ। पाठ म आए जीव–जंतु ल छोड़ अउ आने जीव–जंतु के नाँव अउ उँखर रेहे के जघा के गोठ–बात करँय।

केकरा घलो बिला म रइथे,
खुसरा रइथे खोंड़रा म।
भँइसी रइथे भँइसथान म,
कोठा म पँड़वा रइथे जी।।

हाथी रइथे बन–जंगल म,
बेंदरा डारा–खाँधा म ।
हवा म किंजरत रइथे फाँफा,
माँड़ा म बघवा रइथे जी ।।

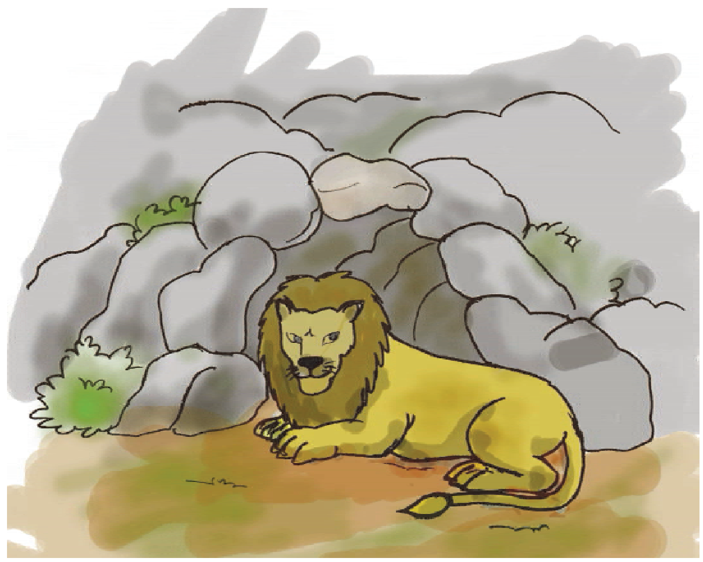

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने –

रेरा = बया चिड़िया,	खोंधरा = घोंसला	गेंगरुवा = केंचुवा
पँड़वा = भैंस का बच्चा	माड़ा = गुफा	खोंड़रा = कोटर
डारा–खाँधा = पेड़ की शाखा		

खाल्हे म लिखाय शब्द मन के अर्थ हिन्दी म लिखव–

सुग्घर	=	केकरा	=
बिला	=	कुरिया	=
मुसवा	=		

प्रश्न अउ अभ्यास

गतिविधि–

गुरुजी कक्षा ल दू दल म बाँट देवँय। दुनो दल एक दूसर ले मुँहअखरा प्रश्न पूछँय। पाछू गुरुजी ह घलो मुँहअखरा प्रश्न पूछँय। कुछ प्रश्न अइसन हो सकथे–

(क) कोलिहा कहाँ रइथे ?

(ख) काखर खोंधरा सुग्घर होथे ?

बोध प्रश्न–

प्रश्न 1. ए प्रश्न मन के उत्तर लिखव ?

(क) कउँवा कहाँ रइथे ?

(ख) बिला म कोन–कोन रइथे ?

(ग) कोन जीव ह पानी अउ भुइयाँ दूनों जघा म रइथे ?

(घ) गरुवा मन कहाँ बँधाथे ?

(ङ.) पानी म रहइया जीव–जंतु के नाँव लिखव ?

भाषा–अध्ययन अउ व्याकरण–

प्रश्न 1. पढ़व समझव अउ लिखव

1.	कउँवा	–	काँव–काँव।	4.	बेंदरा	–	.... ।
2.	कोलिहा	–	.... ।	5.	मिट्ठू	–	.... ।
3.	मेचका	–	.... ।				

प्रश्न 2. जोड़ी मिलावव–

1.	पिंजरा	–	बघवा
2.	कोठा	–	मछरी
3.	माड़ा	–	केकरा
4.	पानी	–	मिट्ठू
5.	बिला	–	गरुवा

प्रश्न 3. खाल्हे म लिखाय वाक्य मन ल हिन्दी म लिखव

(क) रेरा चिरइ के खोंधरा सुग्घर होथे।

(ख) फाँफा हवा म किंजरत रइथे।

(ग) केकरा घलो बिला म रइथे।

(घ) मछरी पानी म तउँरथे।

समझव – कतकोन जीव–जंतु के नाँव ल सँघरा बोले जाथे।

जइसे : कुकुर – बिलइ

प्रश्न 4. ए पाठ म आय शब्द मन बर जोड़ी (सँघरा अवइया शब्द) खोज के लिखव।

1. खेत – .... ।

2. गाय – .... ।

प्रश्न 5. पढ़व, चिन्हव अउ सबले अलग ल छाँट के लिखव–

(क) बघवा, कउँवा, हाथी, कोलिहा

(ख) खोंधरा, बिला, जलेबी, पिंजरा

(ग) रेरा चिरइ, मिट्ठू, कोइली, केकरा

(घ) बेंदरा, मछरी, केछवा, मेचका

प्रश्न 6. खाली जघा ल सही शब्द छाँट के भरव–

(क) मछरी ह .... । (उड़थे/तउँरथे)

(ख) चाँटी ह .... । (रेंगथे/दउँड़थे)

(ग) मिट्ठू ह .... । (उड़थे/भूँकथे)

(घ) केकरा ह .... । (दउँड़थे/रेंगथे)

योग्यता विस्तार–

1. मछरी, मेंचका, कउँवा अउ मिट्ठू के चित्र बनावव।
2. चिरइ मन अपन खोंधरा ल कइसे बनाथें ? देख के बतावव।
3. मुसुवा अऊ बेंदरा के अलग–अलग कहिनी खोजव अउ कक्षा म सुनावव।
4. चार प्रकार के चिरइ मन के खोंधरा के बारे म लिखव–

   (1) खोंधरा बनाए के जघा कोन तिर हे ?

   (2) खोंधरा बनाए बर का–का जिनिस के उपयोग होए हे?

   (3) खोंधरा ह दूसर चिरई के खोंधरा ले का–का बात म अलग हे ?

3L3NVL

3LCJX9

पाठ 4

बंदरबाँट

आपस की लड़ाई का परिणाम बुरा होता है। यदि उस लड़ाई का फैसला किसी चालाक आदमी को करने को दे दिया जाए तब तो स्थिति और बिगड़ जाती है। एक रोटी के लिए दो बिल्लियों में झगड़ा हुआ। बंदर ने उसका फैसला किया। दोनों बिल्लियों को उस रोटी से हाथ धोना पड़ा, इसलिए हमें आपस में मिल–जुलकर रहना चाहिए। झगड़ा हो तो आपस में ही निपटारा करना चाहिए।

(म्याऊँ–म्याऊँ की आवाज़ होती है। एक ओर से काली बिल्ली और दूसरी ओर से सफेद बिल्ली प्रवेश करती है।)

काली बिल्ली : बिल्ली बहिन, नमस्ते।

सफेद बिल्ली : नमस्ते बहिन, नमस्ते।

काली बिल्ली : अच्छी तो हो?

सफेद बिल्ली : अच्छी क्या हूँ, भूखी हूँ।
खाने को कुछ ढूँढ़ रही हूँ।

काली बिल्ली : उसी खोज में मैं भी निकली।

सफेद बिल्ली : मुझे महक रोटी की आती।

काली बिल्ली : हाँ, मेरी भी नाक बताती, पास कहीं है।

सफेद बिल्ली : रखी मेज पर है वो रोटी
लपकूँ? कोई आ जाए तो ......

काली बिल्ली : तू डर; मैं तो लेने को जाती हूँ।
(काली बिल्ली लपकती है और रोटी लेकर भागने लगती है।)

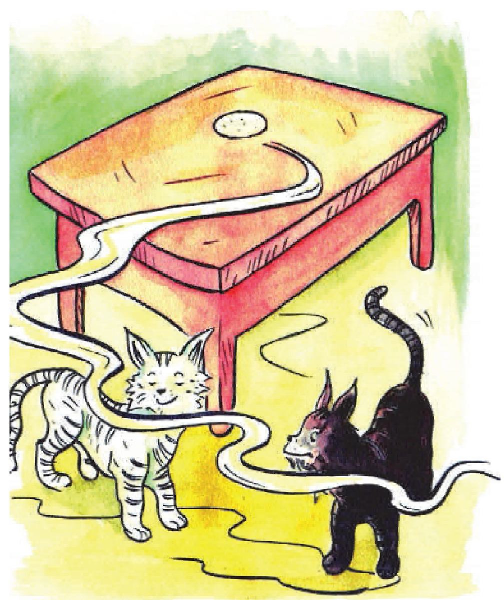

सफेद बिल्ली : ठहर, कहाँ भागी जाती है,
रोटी लेकर, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : रोटी तेरी! कैसे तेरी? रोटी मेरी।

सफेद बिल्ली : मैं न दिखाती तो तू जाती?

काली बिल्ली : अच्छा, क्या मैं खुद न देखती?
जा, डरपोक कहीं की; जा भग, रोटी मेरी।

सफेद बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

(दोनों झगड़ती हैं, 'रोटी मेरी, रोटी मेरी' कहकर एक दूसरी पर गुर्राती हैं।)

(बंदर का प्रवेश)

बंदर : क्यों तुम दोनों झगड़ रही हो?

तुम कहती हो रोटी मेरी। (सफेद बिल्ली से)

तुम कहती हो रोटी मेरी। (काली बिल्ली से) रोटी किसकी?

मैं इसका फैसला करूँगा।

चलो कचहरी, मेरे पीछे–पीछे आओ।

(बंदर रोटी छीनकर अपने हाथ में लेकर चलता है। दोनों बिल्लियाँ बंदर के पीछे–पीछे जाती हैं।)

(दूसरा दृश्य – बंदर की कचहरी)

(बंदर मेज पर बैठा है। रोटी का टुकड़ा सामने रखा है।

दोनों बिल्लियाँ मेज के सामने इधर– उधर खड़ी हैं।)

बंदर : बोलो तुमको क्या कहना है?

सफेद बिल्ली : श्रीमान्! पहले मैंने ही रोटी देखी थी, इससे रोटी पर पूरा हक मेरा बनता।

बंदर : *(काली बिल्ली से)*

बोलो, तुमको क्या कहना है?

काली बिल्ली : श्रीमान्! पहले मैं झपटी थी रोटी लेने, इससे रोटी पर मेरा हक पूरा बनता।

बंदर : बात बराबर, बात बराबर।

है मेरा फैसला कि रोटी तोड़–तोड़कर

तुम्हें बराबर दे दी जाए।

मेरे पास धरमकाँटा है।

(बंदर मेज के नीचे से तराजू निकालकर लाता है। रोटी को दो हिस्सों में तोड़कर दोनों पलड़ों पर रखता है और तराजू उठाता है। एक पलड़ा नीचे रहता है, दूसरा ऊपर।)

बंदर : यह टुकड़ा, कुछ भारी निकला।

इसमें से थोड़ा खाकर के हल्का कर दूँ। *(खाता है।)*

(फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा नीचे हो जाता है, दूसरा ऊपर।)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला।

अब इसको थोड़ा खा करके हल्का कर दूँ।

(फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा ऊपर हो जाता है, दूसरा नीचे।)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला।

मुँह थक गया बराबर करते

और तराजू उठा–उठाकर हाथ थक गया।

(बिल्लियों को बंदर की चालाकी का पता चल जाता है।)

सफेद बिल्ली : आप थक गए,

अब न उठाएँ और तराजू।

काली बिल्ली : बचा–खुचा जो हमको दे दें।

हम आपस में बाँट खाएँगी।

बंदर : नहीं, नहीं तुम फिर झगड़ोगी।

मैं झगड़े की जड़ को ही काटे देता हूँ।

बचा–खुचा भी खा लेता हूँ।

(इतना कहकर बंदर बची–खुची रोटी भी खा जाता है और तराजू लेकर भाग जाता है।)

दोनो बिल्लियाँ: आपस में झगड़ा करने से, हाथ नहीं कुछ आता।

जैसे बंदर चालाकी से, रोटी है खा जाता।

शब्दार्थ

महक = सुगंध

कचहरी = न्यायालय

धरमकाँटा = एक विशेष प्रकार की तौलने की मशीन जिस पर बहुत भारी वस्तुएँ, जैसे–ट्रक आदि तौले जाते हैं। यहाँ इसका अर्थ है 'तराजू'।

नीचे लिखे शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर खाली स्थान में लिखो।

हक – ————————

पलड़ा – ————————

हड़पना – ————————

(तराजू का पल्ला, दूसरे की वस्तु को अनुचित रूप से ले लेना, अधिकार)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. कहानी का शीर्षक बंदर बॉट क्यों है ?

प्र.2. तुम इस नाटक को क्या नाम देना चाहोगे और क्यों ?

प्र.3. सफेद बिल्ली और काली बिल्ली दोनों रोटी पर अपना हक क्यों जता रहीं थी?

प्र.4. बंदर ने दोनों बिल्लियों से क्या कहकर स्वयं उनका फैसला करने की बात कही?

प्र.5. बंदर ने बिल्लियों के झगड़े का क्या निर्णय दिया?

प्र.6. सोचकर लिखो कि अगर बंदर न आता तो बिल्लियाँ अपना झगड़ा कैसे निपटातीं।

प्र.7. बिल्लियाँ यदि बंदर से फैसला कराने से मना कर देतीं तो क्या होता?

प्र.8. अगले दिन दोनों बिल्लियों को एक तरबूज मिला। दोनों सोंचने लगीं इस तरबूज को कैसे बाँटा जाए ? तभी फिर से बंदर आ गया। आगे क्या हुआ होगा?

प्र.9. नीचे लिखे वाक्यों में से जो वाक्य सही हों, उनके सामने 'सत्य' और जो गलत हों, उनके सामने 'असत्य' लिखो।

क– रोटी पहले सफेद बिल्ली ने देखी। ( )

ख– रोटी सफेद बिल्ली ने ही पहले लपकी। ( )

ग– सफेद बिल्ली ने काली बिल्ली को डरपोक कहा। ( )

घ– दोनों बिल्लियों ने बंदर से फैसला करने को कहा। ( )

ङ– बंदर ने तराजू पर रोटी के टुकड़े तौले। ( )

प्र.10. इन पंक्तियों को कविता के रूप में लिखो।

क. मेरा फैसला है कि रोटी तोड़–तोड़कर तुम्हें बराबर–बराबर दी जाए।

ख. तुम दोनों झगड़ क्यों रही हो ?

भाषा–अध्ययन एवं व्याकरण

- शिक्षक पाठ के किसी एक अनुच्छेद को श्रुतिलेख के रूप में बोलें और विद्यार्थी लिखकर परस्पर अभ्यास–पुस्तिकाओं का परीक्षण करें।

प्र.1 निम्नलिखित शब्दों के जोड़ों में से सही शब्द छाँटकर लिखो।

मुंह/मुँह, उठाँए/उठाएँ, तोड/तोड़, खुद/खूद।

प्र.2 नीचे लिखे शब्दों का अर्थ लिखो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

महक, हक, पलड़ा, पछताना, बचा–खुचा।

प्र.3 दिए गए शब्दों का प्रयोग करते हुए नीचे लिखे वाक्यों के खाली स्थानों की पूर्ति करो।

डरपोक, लपक ली, पलड़े, न्यायालय ।

क– हमारे झगड़ों का न्याय .... में होता है।

ख– तराजू के .... सम पर आने चाहिए।

ग– जो .... होते हैं, वे युद्ध–क्षेत्र से भागते हैं।

घ– चेतन ने बॉल को शॉट मारा लेकिन मोहिंदर ने बॉल ....।

पढ़ो, समझो और लिखो

मैं खाना खाऊँगा। फिर विद्यालय जाऊँगा।
इन दो वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य इस प्रकार लिखा जा सकता है –
मैं खाना खाकर विद्यालय जाऊँगा।

प्र.4. नीचे वाक्यों के जोड़े दिए गए हैं। दोनों वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाओ।

क. काली बिल्ली ने रोटी ली। फिर वह भागी।

ख. कचहरी चलो। मैं वहाँ न्याय करूँगा।

प्र.5. नीचे पहली पंक्ति में लिखे शब्दों की लय से मिलते–जुलते दो–दो शब्द तालिका में से छाँटकर लिखो।

झपटी, रोटी, नाक, थोड़ा, धरम, कहना, बंदर,
सहना, चरम, खाक, सुंदर, अंदर, लिपटी, कोड़ा,
खोटी, घोड़ा, कपटी, करम, डाक, बोटी, बहना ।

रचना

शिक्षक की मदद से इस नाटक को संक्षेप में कहानी के रूप में लिखो।

योग्यता विस्तार

1. अपने साथियों की सहायता से बिल्ली और बंदर का रूप बनाकर, इस पाठ का अभिनय करो ।
2. आपस में लड़ाई का क्या परिणाम होता है, इस पर कक्षा में बातचीत करो।
3. बंदर ने जो न्याय किया, क्या वह उचित था ? तुम यदि न्याय करते तो क्या फैसला देते ?
4. यह कविता भी पढ़ो–

   दो बिल्ली एक रोटी लाई, पर दो टुकड़े कर नहीं पाई।
   बंदर एक वहाँ पर आया, दोनों को उसने समझाया;
   लड़ना छोड़ तराजू लाओ, तौल बराबर रोटी खाओ।
   बिल्ली दौड़ तराजू लाई, लगा तौलने बंदर भाई।
   भारी पलड़े से कुछ टुकड़ा, लगा डालने अपने मुखड़ा।
   इसी तरह सब रोटी खाई, बिल्ली बैठ रहीं ललचाई।
   बोलीं आपस में तब बिल्ली, लड़ना छोड़ चलें अब दिल्ली।

3LLFYH

शिक्षण–संकेत

- पाठ को कहानी के रूप में परिवर्तित कर बच्चों को सुनाएँ।
- बच्चों से कहानी के पात्रों के अनुसार अभिनय कराएँ।
- सरल प्रश्न पूछें तथा उत्तर देने के लिए बच्चों को प्रेरित करें।

3LVC1J

पाठ 5

मीठे बोल

बोलचाल से हमारे स्वभाव का पता लगता है। कौआ और कोयल दोनों का रंग–रूप एक–सा होता है, लेकिन कोयल अपनी मीठी बोली के कारण सबको प्यारी लगती है। कौआ अपनी कर्कश बोली के कारण अप्रिय लगता है। मीठा बोलकर हम दूसरों का मन जीत लेते हैं। मीठे बोल से बढ़कर संसार में कोई दूसरी चीज नहीं होती। मीठे बोल का महत्व इस कविता में पढ़ें।

मीठा पेड़ा, मीठा खाजा,
मीठा होता हलुआ ताजा।
मीठे होते लड्डू गोल,
सबसे मीठे, मीठे बोल।।
मीठे होते आम रसीले,
पके–पके और पीले–पीले।
मीठे सेव, संतरे गोल,
सबसे मीठे, मीठे बोल।।
मीठा होता गुलगुल भजिया,
गरम जलेबी सबसे बढ़िया।
मीठे रसगुल्ले अनमोल,
सबसे मीठे, मीठे बोल।
मीठी होती खीर हमारी,
मीठी होती कुल्फी न्यारी।
मीठा होता रस का घोल,
सबसे मीठे, मीठे बोल।।

शब्दार्थ

मीठे बोल — प्रिय बोलना, नम्रता से बोलना

रसीले — रस भरे

नीचे लिखे शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर खाली स्थान में लिखो।

अनमोल ——————————————

न्यारी ——————————————

(जिसकी कीमत न आँकी जा सके; निराली, सबसे अलग)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. मीठे बोल से कवि का क्या तात्पर्य है ?

प्र.2. चार मीठे फलों के नाम लिखो।

प्र.3. हमें मीठे बोल क्यों बोलने चाहिए ?

प्र.4. इस कविता में रसगुल्ला को अनमोल मीठा क्यों बताया गया है ? सोचकर लिखो कि मीठा रसगुल्ला अनमोल होता है या मीठे बोल अनमोल होते हैं?

प्र.5. कठोर बोल मीठे होते हैं या कोमल बोल?

प्र.6. क और ख में से अधूरी पंक्ति लेकर कविता की पंक्तियाँ पूरी करो और लिखो।

क्र.सं.	क	ख
1.	मीठी होती	लड्डू गोल
2.	मीठा होता	मीठे बोल
3.	मीठे होते	खीर हमारी
4.	सबसे मीठे	रस का घोल

प्र.7. जलेबी, आम, लड्डू, मीठे होते हैं। नीचे बने खण्डों में कुछ खट्टी, कड़वी और तीखी चीजों के नाम लिखो।

खट्टी चीजें	कड़वी चीजें	तीखी चीजें
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

प्र 8. जब कोई तुमसे प्यार से बातें नहीं करता तब तुम्हें कैसा लगता है ?

भाषा—अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. नीचे दिए गए शब्दों से मिलते—जुलते तुकवाले दो—दो शब्द सोचकर लिखो।

क— न्यारे   ग— ताजा   ख— गोल   घ— प्यारी

प्र.2. नीचे दिए गए शब्दों के विपरीत अर्थवाले शब्द लिखो।

क— मीठा   ख— ताजा   ग— पके   घ— गरम

प्र3. पहचानकर लिखो – सबसे अलग कौन?

क— सेब, केला, पपीता, इमली ।

ख— पेड़ा, गुलाबजामुन, समोसा, जलेबी ।

ग— सूर्य, चंद्रमा, तारे, चिड़िया ।

घ— कार, गिलास, स्कूटर, साइकिल ।

प्र4. नीचे दिए गए वर्णों से चार शब्द बनाकर वाक्यों में प्रयोग करो।

आ	के	सं	म	सी	फ	ला	ता	त	ल	रा

रचना

- मीठे बोल कविता पढ़कर तुमने क्या समझा ? अपने शब्दों में लिखो।

योग्यता विस्तार

- इस दोहे को पढ़ो, याद करो और इसका अर्थ समझकर कक्षा में बताओ।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होय।।

3M5837

शिक्षण—संकेत

- कविता का सस्वर वाचन करें और अनुकरण वाचन कराएँ।
- दिए गए चित्रों पर बच्चों से चर्चा कराएँ।
- स्वाद में मीठी वस्तुओं के नाम पूछें
- छत्तीसगढ़ी व्यंजनों की सूची बनवाएँ।
- मीठे बोल और कड़वे बोल के बारे में बच्चों से चर्चा करें।

पाठ 6

कबूतर और मधुमक्खियाँ

मुसीबत में एक दूसरे की सहायता करना हमारा धर्म है। पशु–पक्षी भी कभी–कभी यह धर्म निभाते हैं। यह कहानी हमें सिखाती है कि हम भी मुसीबत में फँसे अपने साथियों की सहायता करें।

3ME44U

किसी नदी के किनारे एक पेड़ था। पेड़ पर मधुमक्खियों का छत्ता था। छत्ते में बहुत–सी मधुमक्खियाँ रहती थीं। उनमें एक रानी मक्खी भी थी।

एक दिन की बात है। रानी मक्खी छत्ते से बाहर निकलते ही नदी में गिर गई। उसने पानी से निकलने का बहुत प्रयत्न किया, पर वह निकल न सकी। वह नदी की धारा में बहने लगी। नदी के किनारे एक कबूतर पानी पी रहा था। उसे मक्खी पर बहुत दया आई। वह उसे बचाने की बात सोचने लगा। अचानक उसे एक उपाय सूझा। वह तेजी से उड़कर पेड़ के नीचे पहुँच गया। पेड़ के नीचे से एक सूखा पत्ता लेकर उसने अपनी चोंच में दबाया और नदी के किनारे–किनारे उड़ने लगा। थोड़ी ही दूर पर उसे रानी मक्खी दिखाई दी। उसने पत्ता मधुमक्खी के बिल्कुल आगे डाल दिया। मक्खी पत्ते पर चढ़ गई। पत्ता धीरे–धीरे किनारे से लग गया। रानी मधुमक्खी डूबने से बच गई।

कबूतर का ध्यान पत्ते पर ही था। उसने देखा कि मधुमक्खी तो बिल्कुल हिल–डुल नहीं रही है। वह चोंच में पत्ता दबाकर, पेड़ के नीचे आ गया। कुछ देर तक वह इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि मधुमक्खी हिलती–डुलती है या नहीं।

मधुमक्खी अब कुछ हिलने लगी। वह धीरे–धीरे पत्ते पर चढ़ने भी लगी। उसने कबूतर की ओर

देखा। कबूतर को विश्वास हो गया कि अब मक्खी बच जाएगी। रानी मक्खी ६ ीरे–धीरे उड़कर अपने छत्ते में चली गई। रानी मधुमक्खी के छत्ते में न होने से सभी मधुमक्खियाँ परेशान थीं। उसको छत्ते में आया देखकर सभी को बड़ी प्रसन्नता हुई।

कुछ दिनों के बाद एक शिकारी उधर आया। वह नदी के किनारे घूम–घूमकर चिड़ियों का शिकार करने लगा। उसके भय से सभी पक्षी इधर–उधर छिपने लगे। जिस कबूतर ने रानी मक्खी को बचाया था, वह भी उड़ता हुआ उसी पेड़ के पास आया। डर के मारे वह पेड़ के पत्तों में छिप गया। रानी मक्खी ने उस कबूतर को देखा तो तुरन्त मधुमक्खियों से कहा, ''हमें किसी भी तरह इस कबूतर की रक्षा करनी चाहिए।''

रानी मधुमक्खी की बात सुनते ही कई मधुमक्खियाँ छत्ते से निकल पड़ीं। उधर शिकारी ने कबूतर को देख लिया था। वह उसकी ओर निशाना साध ही रहा था कि मधुमक्खियाँ तेजी से उसकी ओर झपटीं। उन्होंने कई जगह शिकारी को काट खाया। शिकारी घबरा गया। उसका निशाना चूक गया। कबूतर ने तीर की सनसनाहट सुनी। उसने भय के मारे अपनी आँखें बंद कर लीं। थोड़ी देर बाद उसने अपनी आँखें खोलीं तो देखा, शिकारी अपना सिर पकड़कर बैठा है। उसे कुछ मधुमक्खियाँ उड़ती हुईं पेड़ की ओर आती दिखाई दीं।

कबूतर सब कुछ समझ गया। उसने मधुमक्खियों की ओर देखा और मन–ही–मन उनको धन्यवाद दिया।

शब्दार्थ

प्रयत्न	–	कोशिश	परेशान	–	चिंतित
प्रतिक्षा	–	इंतज़ार	राह देखना	–	बाट जोहना
छटपटाना	–	बेचैन होना, व्याकुल होना			

प्रश्न और अभ्यास

प्र. 1. मधुमक्खियाँ कहाँ रहती थीं ?

प्र. 2. रानी मक्खी किस मुसीबत में फँस गई थी ?

प्र. 3. कबूतर क्यों डर गया था ?

प्र. 4. मधुमक्खियों ने कबूतर की कैसे सहायता की ?

प्र. 5. यदि कबूतर मधुमक्खी की सहायता न करता तो क्या होता ?

प्र. 6. तुमने मधुमक्खियों का छत्ता लटका हुआ देखा होगा। पता करो कि मधुमक्खियाँ अपने छत्ते में शहद कैसे इकट्ठा करती हैं ?

प्र. 7. तुमने अपने आसपास किसी जानवर या पक्षी का शिकार होते हुए देखा या सुना होगा। तुम्हें क्या लगता है कि लोग इनका शिकार क्यों करते होंगे ? तुम्हारे विचार से यह सही है या नहीं ?

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्यों के खाली स्थान भरो।

(भिनभिना, खटखटा, गड़गड़ा, गिड़गिड़ा)

क. भिखारी –––––––– रहा था।

ख. मेहमान दरवाजा –––––––– रहा था।

ग. मक्खियाँ मिठाई पर –––––––– रही थीं।

घ. बादल –––––––– रहे हैं।

समझें

लड़का	–	लड़के	–	लड़कों
कमरा	–	कमरे	–	कमरों
गमला	–	गमले	–	गमलों

'लड़का' का अर्थ है एक लड़का। 'लड़कों' का अर्थ है बहुत से लड़के।

'लड़के/लड़कों' बहुवचन में आता है।

पढ़ो :– क. छत्ते में बहुत–सी मधुमक्खियाँ रहती थीं।

ख. नदी के किनारे एक सीधा–सादा कबूतर पानी पी रहा था।

ग. पेड़ के नीचे एक सूखा पत्ता पड़ा था।

अब समझो–

क. छत्ते में कितनी मधुमक्खियाँ रहती थीं ?

ख. नदी में पानी पीने वाला कबूतर कैसा था ?

ग. पेड़ के नीचे कैसा पत्ता पड़ा था ?

पहले वाक्य में 'बहुत–सी' शब्द मक्खियों की विशेषता बता रहा है। दूसरे वाक्य में 'सीधा–सादा' कबूतर की विशेषता बता रहा है। तीसरे वाक्य में 'सूखा' शब्द 'पत्ता' की विशेषता बता रहा है। विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

प्र.2 नीचे दिए गए एकवचन शब्दों को बहुवचन में बदलकर लिखो।

झोला, मुर्गा, मेला, ठेला, बोरा, बकरा, कुत्ता।

प्र.3 नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ो। इनमें कुछ त्रुटियाँ हैं। उन्हें दूर करके अनुच्छेद फिर से लिखो।

नदी के कीनारे जामून का एक पेड था। उस पर एक बंदर रहता था। वह मिठे–मिठे जामून खाता था। एक मगर से उसकी दोसती हो गई थी। बंदर मगर को भी जामून खीलाता था। मगर पानी में रहता था। उसकी पतनि को जामुन बहुत पसंद था।

वाक्यों को पढ़ो और समझो

अ	ब
क. चूहे ने रोटी खा डाली।	क. चूहों ने कपड़ों को कुतर डाला।
ख. बछड़े ने रस्सी तोड़ डाली।	ख. पेड़ के नीचे बछड़े बैठे हैं।
ग. बस्ता बहुत भारी है।	ग. बाजार में अच्छे–अच्छे बस्ते मिलते है।

खंड 'अ' के वाक्यों में रेखांकित शब्द एकवचन में हैं और ब खंड में रेखांकित शब्द बहुवचन में है।

प्र.4 'चूहा', 'कुत्ता', 'लड़का' शब्दों का प्रयोग एकवचन और बहुवचन रूप में अलग–अलग वाक्यों में करो।

रचना

प्र.1. कबूतर का चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो।

प्र.2. इस कहानी को अपने शब्दों मे लिखो।

योग्यता विस्तार

यह भी जानो–

- मधुमक्खियों का छत्ता मोम का बना होता है।
- मधुमक्खियों द्वारा एकत्र किया गया फूलों का रस ही शहद या मधु रस कहलाता है।
- एक छत्ते में खूब सारी मक्खियाँ रहती हैं।
- मधुमक्खियों के डंक होते हैं, जिनके चुभने से बहुत पीड़ा होती है।
- भूलकर भी मधुमक्खियों के छत्ते पर पत्थर नहीं मारना। ये बिखरकर इधर–उधर उड़ती हैं । उस समय ये क्रोध में किसी को भी काट सकती हैं ।

शिक्षण–संकेत

- पाठ का आदर्श वाचन करें और अनुकरण वाचन कराएँ।
- प्रस्तुत पाठ में आए हुए एकवचन एवं बहुवचन के शब्दों की सूची बच्चों से बनवाएँ।
- कक्षा में 3 या 4 समूह बनाकर कहानी पर चर्चा कराएँ और अपना अनुभव सुनाने के लिए कहें।
- पक्षियों के नामों की सूची बनवाएँ।

3MMZ6H

पाठ 7

चाँद का कुरता

3MHV85

शीत ऋतु में बहुत ठंड पड़ती है। इससे बचने के लिए सब लोग गरम कपड़े पहनते हैं। पशु–पक्षियों को भी ठंड लगती होगी। इस कविता में चंद्रमा एक बच्चे के रूप में बताया गया है। वह भी ठंड से बचना चाहता है। इसके लिए वह अपनी माँ से कुछ माँग रहा है। इस पाठ में चन्द्रमा और उसकी माँ के बीच हुई बातचीत का वर्णन पढ़ें।

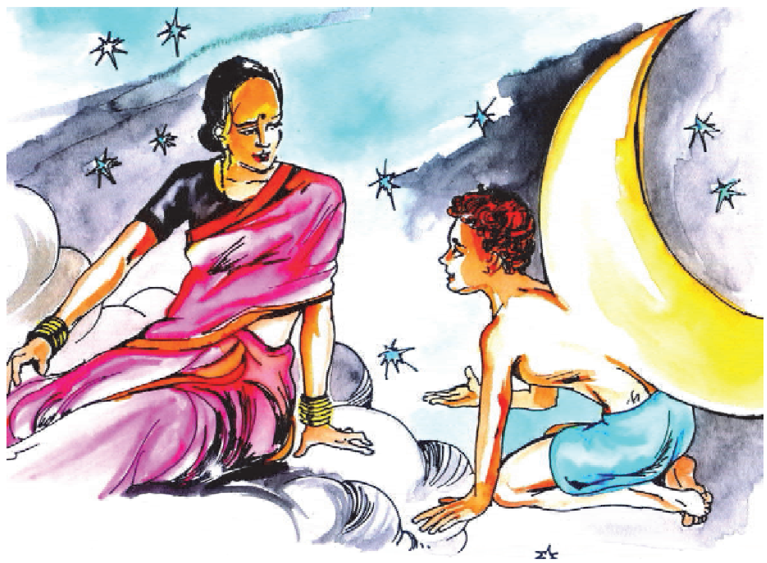

हठ कर बैठा चाँद, एक दिन माता से यह बोला।
सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।।
सन्–सन् करती हवा, रात–भर जाड़े से मरता हूँ।
ठिठुर–ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।।
आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का।
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही, कोई भाड़े का।।
बच्चे की बातें सुनकर बोली उससे यह माता।
सचमुच जाड़े का मौसम तो तुझको बहुत सताता।।
जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ।
एक नाप में कभी नहीं, तुझको देखा करती हूँ।।

कभी एक अंगुल–भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा।
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा।।
घटता–बढ़ता रोज किसी दिन, ऐसा भी करता है।
नहीं किसी की आँखों को तू, दिखलाई पड़ता है।।
अब तू ही यह बता, नाप तेरा किस रोज़ लिवाएँ ?
सी दूँ एक झिंगोला, जो हर रोज बदन में आए।।

शब्दार्थ

हठ – जिद

झिंगोला – झबला

यात्रा – सफर

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हुए हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर लिखो।

भाड़ा ....

सलोने ....

बदन ....

ठिठुरकर ....

(सुंदर, किराया, ठंड से काँपकर, शरीर)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. हमें चाँद कब दिखाई देता है?

प्र.2. चाँद ने माँ से किस चीज की मांग की ?

प्र.3. ऊनी कपड़े किस मौसम में पहने जाते हैं ?

प्र.4. चाँद कब दिखाई ही नहीं देता ?

प्र.5. पूरा गोल चाँद कब दिखता है ?

प्र.6. माता ने चाँद को झिंगोला देने में क्या कठिनाई बताई ?

प्र.7. चाँद कब घटता और कब बढ़ता है ?

प्र.8. पूर्णमासी और अमावस्या के दिन चाँद की क्या स्थिति रहती है ?

प्र.9. चाँद पर आधारित किन त्यौहारों को मनाया जाता है?

क– कार्तिक मास की अमावस्या को ....

ख– फागुन की पूर्णिमा को ....

ग– सावन की पूर्णिमा को ....

घ– रमजान के रोजे पूरे होने के बाद मनाया जाने वाले त्यौहार ....

प्र.10. अगर चींटी और हाथी के लिए झबला बनवाया जाए, तो क्या बन पाएगा? कारण बताते हुए उत्तर लिखो।

प्र.11. जैसे चन्द्रमा ने अपने लिए झिंगोला दिलवाने की जिद की, इसी तरह तुम भी अपनी माँ से किन – किन चीजों के लिए जिद करते हो ?

इनमें से कौन सी जिद पूरी होती है और कौन सी नहीं, नीचे तालिका में लिखो।

जिद	पूरी होती है	पूरी नहीं होती है
मैं खेलने जाऊँगा	....	....

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

- कक्षा को दो समूह में बाँटेंगे एवं दोनों समूह परस्पर शब्दों के अर्थ और उनका वाक्य–प्रयोग करने की गतिविधि करें।
- शिक्षक एक अनुच्छेद श्रुतिलेख के लिए बोलेंगे जिसे विद्यार्थी अपनी–अपनी कॉपी में लिखेंगे और आपस में कॉपी बदल कर परीक्षण संबंधी कार्य कराएँगे।
- रवि पहले कमज़ोर था किंतु आजकल ताकतवर हो गया है।

  इस वाक्य में 'कमजोर' का उल्टे अर्थवाला शब्द 'ताकतवर' है।

प्र.1 नीचे लिखे गए शब्दों के उल्टे अर्थ वाले (विरोधी) शब्द लिखो व एक–एक वाक्य बनाओ।

क– जाड़ा ख– मोटा ग– रात घ– बड़ा ङ– स्पष्ट च– दूर

प्र.2. नीचे दिए गए शब्दों को शुद्ध करके लिखो।

जादु, दीखलाई, कुसल, मौसिम, आसमन।

प्र.3. पढ़ो और समझो।

चंदा – गंदा, मंदा

इसी तरह नीचे दिए गए शब्दों से मिलते–जुलते दो–दो शब्द लिखो।

क– माता ख– मोटा ग– नाप घ– डरती

समझो

क. ''नमन गाना गा रहा है।'' ख. ''रचना खेल रही है।''

क वाक्य में गाना गाने का काम हो रहा है। ख वाक्य में खेलने का काम हो रहा है। **''जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का ज्ञान होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।''**

प्र.4. पाठ के अनुसार चांद कभी एक अंगुल भर चौड़ा तो कभी एक फुट मोटा हो जाता था। आओ देखें इनमें कौन – कौन सी चीजें मापी जाती है –

इकाई	चीजों के नाम
लीटर मीटर किलोग्राम	

प्र.5. नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया शब्दों को चुनकर लिखो ।

क– मैं अपने दोस्त को किताब दूँगा।

ख– दर्जी कपड़ा सिल रहा था।

ग– माँ पुस्तक पढ़ रही है।

रचना

प्र.1. चाँद, सूरज व सितारों का चित्र बनाकर उसके बारे में अपने विचार लिखो।

प्र.2. चाँद और माँ की कहानी बातचीत के रूप में लिखो।

प्र.3 नीचे लिखी कविता की पंक्तियों के शब्द उलट–पुलट गए हैं। शब्दों को सही स्थान पर रखकर कविता की पंक्तियाँ बनाओ।

घण्टा	बोला	मदरसे	चलो
जल्दी	अपने	घर से	निकलो
कपड़े	पहनो	ले लो	बस्ता
घर से	निकलो	निकलो	निकलो

योग्यता विस्तार

- चंदा मामा की कोई अन्य कविता खोजो, पढ़ो और कक्षा में लिखकर लगाओ।
- जो रोज छोटा–बड़ा हो, उसके लिए कपड़े सिलवाना संभव नहीं होता। सोचकर बताओं कि चांद की माँ का कहना ठीक था या गलत।
- तुम्हे जब ठण्ड लगती है तो गरम कपड़े पहनते/ओढ़ते हो। जिनके पास गरम कपड़े नहीं होते वे ठण्ड से कैसे बचते हैं।

3N6R9S

शिक्षण–संकेत

- कविता का सस्वर वाचन कर दो–तीन बार कक्षा में सुनाएँ।
- बच्चों से भी कविता का सस्वर वाचन करवाएँ, उनके उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।
- कविता में आए चित्र पर बच्चों से बातचीत करें।
- बच्चों से कविता के भावार्थ पर बातचीत करें।

पाठ 8

चलव खेल खेलबो

3NFMBF

पाठ परिचय– लइका मन ल खेलइ–कुदइ बने लागथे। कइसनो बेरा–कुबेरा, घाम–छाँव, जाड़–सीत चाहे पानी बरसत राहय, ओमन खेले बर नइ छोड़ँय। भूख लागही तभो सँगी–सँगवारी मन सँग खेलहिच। जुरमिल के खेलइ बने बात आय। खेल म हार–जीत होबेच करथे, फेर हार जाए म दुख झन मानय। कोनो किसम के छल–बल करके जीत जाय ले हार जाय तेने बने।

मुँधियार होतेच खंभा मन के लट्टू मन बग–बग ले बरगे। तहाँ ले बिमला ह गुलाबो, चमेली, आरती, बबलू, अमित ल गोहार पार के बलइस "आवव अँधियारी–अँजोरी खेलबो"। ओहा घर के चौरस चौरा म आके ठाड़ होगे।

थोरकेच म लइका मन बिमला के तीर म आगे। ओहा लइका मन ल पूछिस– "चलव बतावव, आज सबले पहिली का खेल खेलबो"? सबो कलेचुप होगे। बिमला फेर पूछिस। त गुलाबो कहिस–"बिल्लस खेलबो"। बबलू कहिस–"चलव खुडुवा खेलबो"। आरती किहिस "चलव नूनसूर खेलबो"। जे लइका ते ठन खेल के नाँव बतइन।

त बिमला कहिस–" चलव आज हमन अँधियारी–अँजोरी खेलबो"। अतका म आरती किहिस–"बिमला हमन तो ए खेल खेल डरबो फेर ए रीता ह नइ खेल सकय। एला बताय बर लगही। त आन लइका मन पूछिन–"रीता ह कोन ए आरती"?

ओ कहिस "ए ह मोर ममा के बेटी आय। एमन मुम्बई म रहिथें।" बिमला कहिस – "आरती , तभे मँय ह गुनत रेहेंव, ए नवा सँगवारी ह कोन आय?" चल खेलत–खेलत हमन रीता ल ए खेल ल सिखो देबो।"

तहाँ ले बिमला कहिस– "देखव बहिनी हो ! मँय हा अँधियारी ...... कइहूँ तहाँ ले दँउड़ के

शिक्षण संकेत– गाँव के लइका मन कोन–कोन खेल खेलथें? ऊँकर बारे म चर्चा करँय। गुरुजी लइका मन ले खेल अउ ओकर जिनिस मन के सूची बनवावँय। पत्र–पत्रिका म छपे फोटू ल सकेले बर काहँय। खेल फोटू जमा करावँय। संज्ञा–सर्वनाम, विशेषण के अवधारणा (मायने) करावँय।

जउन–जउन मेर अँधियार हे तउन–तउन मेर जाके ठाड़ हो जहू। कहुँ अंजोरी कइहूँ त अँजोर मेर जाके ठाड़ हो जहू।

रीता पूछिस – ''दीदी ! मेहा कहुँ झट कन नइ जा पाहूँ त का होही ? बिमला कहिस दाम देवइया ह तोला छू दिही, तहाँ ले तोला दाम दे बर परही। तँय ह देखबे, कोन अँधियार म खड़े हे? कोन अँजोर म खड़े हे ?''

आरती कहिस –''चलव आज मँय ह दाम देवत हँव।'' अउ चिल्लइस ''अँधियारी''.....। ''तहाँ सबो लइका मन झटकन अँधियार जघा म जा के ठाड़ होगे। फेर रीता हा अँजोर म ठाड़े रहिगे। हुरहा दउड़े बर ओला नइ सूझिस।

तहाँ ले आरती ह झटले रीता ल छू दिस। ओहा रीता ल कहिस– ''चल अब तँय ह दाम दे।'' त रीता ह दाम दीस। कभू अँधियारी काहय त कभू अँजोरी काहय। लइका मन झटले जघा पोगरा लँय। अड़बड़ बेर होगे, रीता कोनो ल नइ छू सकिस। ओ हा थक गे।

बिमला कहिस–''चलव अब दूसर खेल खेलबो। कइसे रीता, तोला खेल बने लगिस ? ''बिमला बहिनी! मँय ह भले ए खेल म आज हार गेंव, फेर मोला खेल बने लगिस।''

''काबर बने लगिस तेला बता तो रीता। तेंहा तो मुम्बई शहर म आनी–बानी के खेल खेलत होबे ?''

''देख बिमला बहिनी, हमर शहर के लइका मन किसम–किसम के खेल भले खेलथें। फेर ओमा दुनिया भर के डमडमा हे। ओकर बर अलगे जघा चाही। खेल के जिनिस बिसा, सँगवारी खोज। खेल सिखइया घलो लगथे। ओला फीस तको देय बर लगथे।'' रीता कहिस।

''रीता बहिनी, हमर गाँव के खेल मन ल खेले बर सुभिता होथे। कइ ठन खेल मन म काँही जिनिस नइ लागय। सिरिफ बोल बता के, गीत गाके, दउड़ भाग के, छू के खेल लेथन । बिमला अतका कहिस तहाँ ले बबलू किहिस–''दीदी, तुमन तो गोठियाय बताय बर धर लेव। चलव ''अटकन–बटकन'' खेलबो।

हव बबलू ! चलव इही ल खेलबो। काबर के ठाड़े–ठाड़े खेलत ले गोड़ ह पिरा गे हे। बिमला ह किहिस तहाँ ले सबो झन दुनो हथेरी ल पट रखिन। आरती ह एक–एक झन के हथेली उपर अपन माई अँगरी ल छुवावत ए दे गीत के एक–एक आखर ल गाइस–

अटकन–बटकन दही चटाका ?
लउहा लाटा बन के काँटा।
सावन मा बुंदेला पाके,
पाका–पाका बेल खाबो।
बेल के डारा टूट गे,
भरे कटोरा फूट गे।
चल–चल बेटी गंगा जाबो,

गंगा ले गोदावरी।
आठ नाँगा पागा,
गोलार सिंग राजा।

सब झन बड़ खुश हो गें ।

त चमेली ह रीता ल कहिस—''कइसे रीता! तोला हमर संग खेले म बने लगथे?'' ''हाँ चमेली बहिनी! मोला तो तुँहर खेल मन बनेच लागथे। फेर का करबे शहर के लइका मन आनी— बानी के खेल म भुलाय रहिथें।'' रीता ह कहिस ।

''सुन रीता ! अब तो हमर राज म कइ ठन खेल मन ल स्कूल के खेल म रख ले गेहे।'' बिमला ह बताइस। ''कोन खेल ल दीदी ?'' बबलू ह पूछिस। ''तँय ह नइ जानस ?''

बिमला कहिस अउ बताइस—''फुगड़ी ल। ये खेल ल खेले म बड़ निक लागथे।

रीता कहिस—''चलव फुगड़ी खेल के देखावव''। जम्मो झन उखरु बइठगें अउ अपन एक हाँथ ल भुइयाँ म लिपे सरिख गोल—गोल रेंगावत ए दे गीत ल गइन —

गोबर दे बछरू गोबर दे,
चारो खूँट ल लीपन दे ।
चारो देरानी ल बइठन दे,
अपन खाथे गूदा—गूदा।
हमला देथे बीजा......।
ए बीजा ल का करबो,
रहि जाबो तीजा।
तीजा के बिहान दिन,
घरी—घरी लुगरा।
पींव पींव करे मजूर के पिला,
हेर दे भउजी कपाट के खीला।
एक गोड़ म लाल भाजी,
एक म कपुर।
कतेक ल मानँव मँय देवर—ससुर।।
फुगड़ी फुहूँ रे—फुगड़ी फू...।

बबलू बीचे म ढलँग गे, ओकर फुगड़ी पूरा नइ होइस। चमेली, आरती अउ बिमला मन फुगड़ी म बिधुन होगे, तहाँ ले अमित कहिस.. चलव दीदी। अब जादा रात होगे। हमर दाई—ददा खिसियाहीं।''

रीता ल ''फुगड़ी'' खेल बने लगिस। ओहा बिमला ल पूछिस– ''इहाँ अड़बड़ किसम के खेल हे का ? ''त बिमला ह बताइस–'' रीता, इहाँ कई किसम के खेल हे। जइसे भोटकुल, तिरी पासा, खीला गड़उल, डंडा–पचरंगा, घोड़ा हे बादाम छाई, चूरी लुकउल, सगा–पहुना, रामचिड़िया, खुडवा, छू–छूवउल, रस्सी, पोसमपाय, राजा–रानी, बिस–अमरित, नदी–पहाड़, गोबर, डंडा सूर, चर्रा, कुकरा पाल।''

ओतके म रीता के मामी ओला खोजत आगे। बियारी के बेरा होगे राहय। काली संझा फेर सकलाबो कहिके लइका मन अपन–अपन घर कोती दउड़गें।

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने –

मुँधियार	=	अँधेरा हो जाना
बग–बग	=	चमचमाते
अँजोरी	=	उजाला
कलेचुप	=	चुपचाप
गुनत	=	सोचते हुए
झटकन	=	जल्दी
हुरहा	=	अचानक
बिधुन	=	मगन
सबो	=	सभी
लउहालाटा	=	जल्दबाजी
पाका	=	पक्का
मेकरा	=	मकड़ी
देरानी	=	देवर की पत्नी
गूदा	=	फलों का वह नरम भाग, जिसे खाया जाता है।
लुगरा	=	साड़ी
खिसियागे	=	क्रोधित हो गया/गई

प्रश्न अउ अभ्यास

गतिविधि–

कक्षा के दू दल ओसरी–पारी मुँहअखरा प्रश्न उत्तर करही। तेखर पाछू गुरुजी घलो, दूनो दल के लइका मन ले प्रश्न पूछही। प्रश्न अइसे हो सकथें :–

(क) लइका मन ल जादा बने का लगथे – खेलइ के पढ़इ ?

(ख) 'अटकन बटकन' खेल म भुइयाँ म का ला मढ़ाथे – हथेली ल के कोहनी ल ?

बोध प्रश्न–

प्रश्न (1) ये प्रश्न मन के जवाब लिखव–

(क) लइका मन पहिली का खेलिन ?

(ख) अँधियारी–अँजोरी खेल कइसे खेले जाथे ?

(ग) 'फुगड़ी' ल कइसे खेले जाथे ?

(घ) अटकन–बटकन के खेल कइसे खेले जाथे ?

प्रश्न (2) तुमन अपन सँगवारी सँग का–का खेल खेलथव? कोनो तीन खेल के नाँव लिखव।

प्रश्न (3) ये प्रश्न के जवाब लिखव –

(क) खेल म हार जाए ले तुमन ल कइसे लागथे? ओतका बेरा तुमन का सोचथव ?

(ख) खेल म तुमन जीत जाथव त तुमन ल कइसे लागथे ? ओ समे म तुमन का सोचथव?

(ग) खेल खेलत बेरा जीत हार जादा महत्तम के होथे के खेलइ ? कारन बतावव।

भाषा अध्ययन अउ व्याकरण

प्रश्न 1– ए शब्द मन कस अउ दूसर शब्द लिखव–

जइसे – दल – बल, चल

गोहार – .... ।

खेलत – .... ।

दाम – .... ।

गुनत – .... ।

प्रश्न 2– ये शब्द मन के उल्टा अर्थ वाले शब्द लिखव–

अँधियार – .... ।

झटकन – .... ।

पाका – .... ।

हार – .... ।

अड़बड़ – .... ।

बने – .... ।

पूरा – .... ।

पढ़व, समझव अउ लिखव –

(क) आरती ह पहिली दाम दिस।

(ख) ओहा थोरिक म थक गे।

(ग) ओहर कहिस, ''मँय ह थक गेंव।''

(घ) बबलू ह कहिस, ''तँय ह बइठ जा।

लकीर खिंचाय शब्द मन ल ध्यान लगा के देखव, 'ख' वाक्य मे 'ओहा' शब्द के प्रयोग 'आरती' बर होय हे। 'ग' वाक्य म 'ओहर' अउ 'घ' वाक्य में 'तँय ह' शब्द घलोक आरती बर प्रयोग करे गे हे। कहूँ सबो जघा ''आरती'' शब्द के प्रयोग होतिस त वाक्य बने नइ लगतिस। देखव :–

'आरती' ह पहिली दाम दिस। 'आरती' थोरिक में थक गे। 'आरती' ह कहिस– ''आरती तो थक गे।'' बबलू कहिस– ''आरती बइठ जा।' वाक्य मन ल सुग्घर बनाए बर 'ओहा' 'ओहर' 'तँय हा' 'ओखर' के प्रयोग होय हे। 'संज्ञा' के बदला म प्रयोग करे गे शब्द ह 'सर्वनाम' कहाथे।

प्रश्न (3) खाल्हे म लिखाय वाक्य मन के खाली जघा म ओहा, ओहर, ओला, ओखर शब्द लिखव–

रीता अटकन–बटकन खेलत रहिस।

.... अपन हथेली ल भुइयाँ म मड़इस।

.... पहिली बेर एला खेलत रहिस।

.... खेले बर नइ आवत रहिस।

.... हथेली घलोक पुक गे।

प्रश्न (4) खाल्हे के शब्द मन के मायने नइ लिखे हे। ओखर मायने कोष्टक ले छाँट के लिखव–

दाम देना = ... ।

उखरू = ... ।

गोहार = ... ।

निक = ... ।

(पंजा के भार, माड़ी मोर के बइठई, चिल्लई, बने, खेल ल आगू बढ़ाना)

समझव –

(क) बिमला चौरस चौरा म ठाड़ होगे।

(ख) सबो झन ल बड़ निक लागिस।

(ग) थोरिक बेर म सबोझन थक गें।

'क' वाक्य म 'चौरा' संज्ञा के विशेषता 'चौरस'' शब्द, ''ख'' वाक्य म ''निक'' संज्ञा के विशेषता ''बड़'' शब्द, ''ग'' वाक्य म ''बेर'' संज्ञा के विशेषता ''थोरिक'' शब्द ह बतावत हे। चौरस, बड़ अउ थोरिक बिशेषता बतइया शब्द आय। एला विशेषण कहिथें।

संज्ञा अऊ सर्वनाम के विशेषता बतइया शब्द विशेषण कहाथे।

प्रश्न (5) खाल्हे म लिखाय शब्द मन ल पढ़व अउ छाँट के डब्बा म लिखव

चमेली, ओला, सुग्घर, चौंरस, बड़, थोरिक, मँय हा, ओखर, तँय हा, गंगा, बबलू, डंडा

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण

3NPID3

योग्यता विस्तार –

- तुमन ल जेन खेल पसंद हे, ओकर बारे म आठ वाक्य लिखव।
- सोचव अउ बतावव, कहूँ तुहर पारा–परोस के लइका मन तुमन ल अपन संग नइ खेलाही त तुमन ल कइसे लागही?
- खेल ले का–का फायदा हे? एक–एक ठन फायदा ल बतावव।
- आने–आने खेल के गीत ल अपन, कापी म लिखव अउ कक्षा म सुनावव।
- घर भितरी के खेल अउ बाहिर के खेल मन के अलग–अलग नाम लिखव।

3NYEEQ

आदिमानव

इस चित्रकथा में आदिमानव की कहानी है। वे हजारों वर्ष पहले घने जंगलों में बिना कपड़े पहने रहते थे और जानवरों का कच्चा मांस खाते थे। धीरे–धीरे उन्होंने आग जलाना, खेती करना सीखा। वे गुफाओं में रहने लगे। आदिमानव ने किस तरह उन्नति की, यह इस पाठ में पढ़ेंगे।

राधा ने अपनी एक किताब दादा जी को दिखाते हुए पूछा, ''दादा जी, इस किताब में लिखा है कि आदि–मानव जंगलों में रहते थे। वे बिना कपड़ों के रहते थे और जानवरों का कच्चा मांस खाते थे। क्या यह सही है?

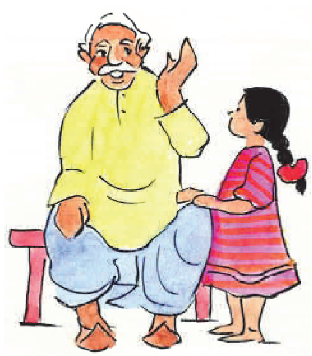

1

दादा जी ने बताया, ''हाँ बेटी, यह सही है। आदि–मानव जंगलों में रहते थे। वे बिना कपड़े पहने घूमते थे, कंदमूल और जानवरों का कच्चा मांस खाते थे।

2

उस समय लोगों को आग की जानकारी नहीं थी। काफी समय बाद उन्होंने पत्थर रगड़कर आग जलाना सीखा।

3

आग की जानकारी होने पर उन लोगों ने मांस भूनकर खाना शुरू किया। आग जलाकर वे जानवरों से अपनी रक्षा भी करते थे।

4

उस समय आदिमानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे। वे पत्थरों के हथियार प्रयोग में लाते थे।

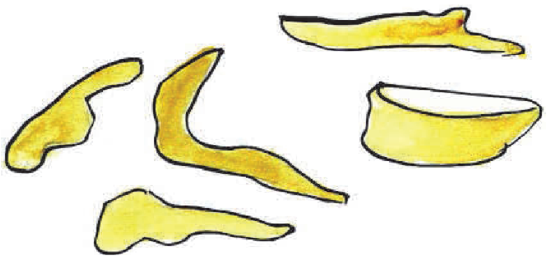

5

वे फलों को खाकर उनके बीज फेंक देते थे। उन्होंने नए पौधे उगते देखे। धीरे–धीरे उन्होंने खेती करना सीख लिया।

6

कई कार्यों में अपनी सहायता के लिए उन्होंने जानवरों से सहायता लेना शुरू किया।

7

खेती प्रारम्भ करने पर, फसल लेने से काटने तक उनको एक जगह रहना पड़ता था। इस तरह गाँव बसने लगे।

8

उसके बाद आदिमानव ने पहिए की खोज कर ली।

9

बाद में उन लोगों को धातु का ज्ञान हुआ। वे लोहे, पीतल के हथियार और बर्तन बनाने लगे।

10

गुफाओं में रहते हुए उन्होंने चित्र बनाना शुरू कर दिया।

11

दादा जी ने बताया, 'बेटी मनुष्य ने इसी तरह प्रयास करते–करते अपना विकास किया है। आज भी आदिमानव की तरह दुनिया में लाखों लोग रह रहे हैं। विकास का यह क्रम अभी भी जारी है।'

12

शब्दार्थ

आदिमानव = शुरू के आदमी

कंदमूल = जमीन के अंदर उगने वाली वनस्पतियाँ जैसे शकरकंद, मूली, गाजर, आलू आदि।

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. आदिमानव का रहन–सहन कैसा था ?

प्र.2. गाँव व शहरों का विकास कैसे हुआ ?

प्र.3. आग जलाना सीखने पर आदि मानव को क्या लाभ हुआ ?

प्र.4. आदिमानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों घूमते रहते थे ?

प्र.5. वे कच्चा मांस क्यों खाते थे ?

प्र.6. आदिमानव ने खेती करना कैसे सीखा ?

प्र.7. आदिमानव ने हथियार बनाना क्यों सीखा ?

प्र.8. यदि आग की खोज नहीं हुई होती तो तुमको क्या–क्या परेशानी होती ?

प्र.9. आदि मानव पत्थरों को आपस में रगड़कर आग जलाते थे। आजकल आग जलाने के क्या–क्या तरीके हैं।

प्र.10. आदि मानव गुफाओं में रहते थे। तुम किस प्रकार के घर में रहते हो ? दोनों प्रकार के घरों में क्या अंतर है ?

आदि मानव का घर	तुम्हारा घर

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

यहाँ हम सीखेंगे • समान अर्थ वाले शब्दों की जानकारी •समान अर्थ वाले शब्दों की जोड़ी बनाना • अशुद्ध शब्द को शुद्ध करना • शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करना ।

- कक्षा के दोनों समूह परस्पर शब्दों के अर्थ और उनका वाक्य–प्रयोग करने की गतिविधि करें।
- शिक्षक एक अनुच्छेद श्रुतिलेख के लिए बोलेंगे जिसे विद्यार्थी अपनी–अपनी कॉपी में लिखेंगे और आपस में कॉपी बदल कर परीक्षण संबंधी कार्य कराएँगे।

प्र.1. इन शब्दों को पढ़ो व इनका प्रयोग करके एक–एक वाक्य बनाओ।

आश्चर्य, पूर्वज, इकट्ठा, वनांचल, झुंड ।

प्र.2. इन शब्दों को सुधारकर लिखो।

आर्श्चय, पूवर्ज, गाव, सथाई, चित्तर

प्र.3 दाईं ओर बने गोलों में कुछ नाम लिखे हैं और बाईं ओर के गोलों में उनकी विशेषता बताने वाले शब्द। इनकी सही जोड़ियाँ बनाओ।

हज़ारों	कच्चा	आदि	मानव	मांस	जंगल
एक	लाखों	घने	लोग	वर्ष	समय

प्र.4. इन वाक्यों को क्या, कब, कैसे और क्यों का प्रयोग कर, प्रश्नवाचक वाक्यों में बदलो।

क– राधा को आश्चर्य हुआ।

ख– आदिमानव कच्चा मांस खाते थे।

ग– आदिमानव ने खेती करना व पशुओं को पालना प्रारंभ किया।

घ– बहुत समय बाद गाँव व शहरों का विकास हुआ।

प्र.5 ने, को, की, में का प्रयोग करके वाक्य पूरे करो।

क. दादा जी ने राधा .... बताया।

ख. राधा .... दादा जी ने पूछा।

ग. उन लोगों को आग ......जानकारी नहीं थी।

घ. बस्तर .... बहुत आदिवासी रहते हैं।

3P8AGD

रचना

- आदिमानव के जीवन और आज के मानव के जीवन में क्या अंतर है? पाँच वाक्यों में लिखो।

योग्यता विस्तार

- वनवासियों के जीवन से संबंधित कुछ चित्र एकत्रित करो और अपनी चित्र–पुस्तिका में चिपकाओ।

शिक्षण–संकेत

- चित्रों को देखकर विषय–वस्तु को समझने में बच्चों का मार्गदर्शन करें।
- बच्चों को आदिमानव के जीवन, रहन–सहन, खान–पान आदि की जानकारी दें।
- कठिन वर्तनी वाले शब्दों को श्यामपट पर अशुद्ध लिखकर उसे बच्चों से सुधरवाएँ।

पाठ 10

चुहिया की शादी

3X82AI

एक ऋषि ने एक घायल चुहिया को बड़े लाड़–प्यार से पाला। चुहिया जब बड़ी हुई तब ऋषि को उसकी शादी की चिंता हुई। उन्होंने चुहिया से उसके मनपसंद वर के बारे में पूछा। चुहिया अत्यंत शक्तिशाली वर चाहती थी। ऋषि ने चुहिया की पसंद के वर को ढूँढ़ने का प्रयास किया। अंत में उन्हें कौन–सा वर मिला, आओ इस कहानी में पढ़ें।

किसी वन में एक ऋषि रहते थे। वे अपने आश्रम में ही रहकर अपना अधिक समय पूजा–पाठ, ईश्वर का ध्यान करने में व्यतीत करते थे।

एक दिन ऋषि अपनी कुटी के बाहर ध्यान में मग्न थे। अचानक उनकी गोद में चील के पंजे से छूटकर, एक चुहिया आ गिरी। ऋषि का ध्यान भंग हो गया। उन्हें उस अधमरी चुहिया पर तरस आ गया। उन्होंने चुहिया का घाव धोया, उसे दूध पिलाया। चुहिया चार–छह दिन में बिल्कुल ठीक हो गई।

ऋषि अब रोज ही अपने हाथों से चुहिया को खाना खिलाते। वे उसे खूब प्यार करते थे और अपनी बेटी के समान मानते थे। ऋषि के लाड़–प्यार से चुहिया खूब मोटी–तगड़ी हो गई।

चुहिया अब बड़ी हो गई थी। ऋषि को चुहिया के विवाह की चिंता हुई। उन्होंने उससे पूछा, ''बेटी, तुझे कैसा वर पसंद है?'' चुहिया ने कहा, ''पिता जी, मुझे ऐसा वर चाहिए, जो अत्यंत शक्तिशाली हो।''

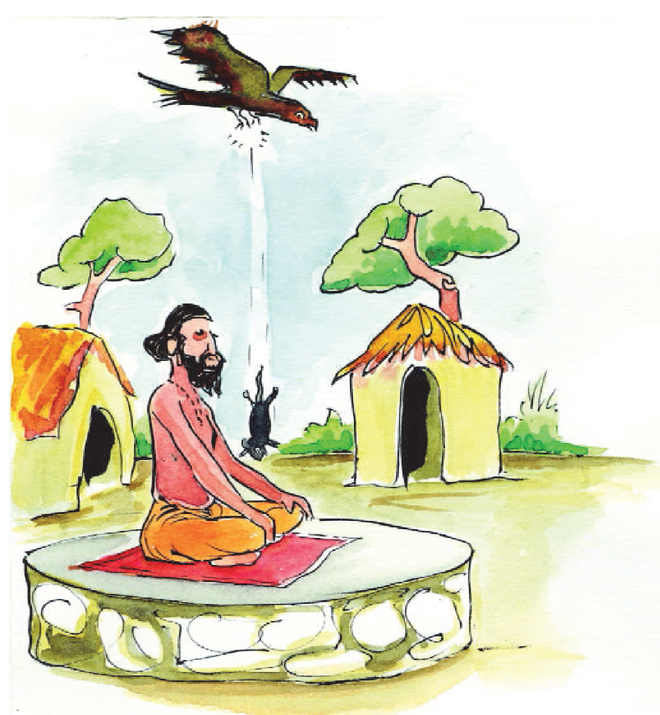

ऋषि ने सोचा, 'संसार में सूर्य से अधिक शक्तिशाली कोई नहीं है। अतः मुझे सूर्य के पास चलना चाहिए।'

ऋषि ने चुहिया को एक सुंदर युवती के रूप में बदल दिया था। वे उसे लेकर सूर्यदेव के पास पहुँचे। सूर्य के पास पहुँचकर ऋषि ने उनसे कहा,

''भगवन्! यह मेरी पुत्री है। यह अपना विवाह एक ऐसे वर के साथ करना चाहती है, जो अत्यंत शक्तिशाली हो। संसार में आपके समान शक्तिशाली और कोई नहीं है। अतः आप इसे स्वीकार कीजिए।''

सूर्य भगवान ने ध्यान लगाकर यह जान लिया कि ऋषि जिसे अपनी बेटी बता रहे हैं, वह तो एक चुहिया है। लेकिन वे ऋषि से स्पष्ट इंकार भी नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने बात बनाकर कहा, ''ऋषिवर! आपका यह कहना ठीक नहीं है कि मैं संसार में सबसे अधिक शक्तिशाली हूँ। मुझसे अधिक शक्तिशाली तो बादल है, जो जब चाहता है, मेरा प्रकाश रोक लेता है। आप कृपया उसी के पास जाइए।''

बात ऋषि की समझ में आ गई। वे चुहिया को लेकर बादल के पास पहुँचे। बादल से भी उन्होंने वही कहा, जो सूर्यदेव से कहा था। बादल ने भी ध्यान लगाया। उसे भी ज्ञात हो गया कि ऋषि चुहिया के साथ मेरा विवाह करना चाहते हैं। उसने थोड़ा विचारकर कहा, ''महात्मन्! आपने मुझे सर्वशक्तिमान समझा, इसके लिए धन्यवाद! परंतु मैं सर्वशक्तिमान नहीं हूँ। मुझसे अधिक तो शक्तिशाली पर्वतराज हिमालय हैं, जो आसानी से मेरा मार्ग रोक लेते हैं। आप कृपया उन्हीं के पास जाइए।''

अब ऋषि पर्वतराज हिमालय के पास पहुँचे। उन्होंने अपने मन की बात पर्वतराज से कही। पर्वतराज ने ध्यान लगाकर सारी बात जान ली। वे ऋषि से बोले, ''ऋषिवर! आप मेरे यहाँ पधारे, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ, किन्तु मैं दुनिया में सर्वशक्तिमान नहीं हूँ। मुझसे अधिक शक्तिमान तो चूहे हैं, जो मेरे अंदर अपने रहने के लिए बिल बना लेते हैं। आप उन्हीं के पास जाइए।''

ऋषि अपने आश्रम में लौट आए। अच्छा मुहूर्त देखकर ऋषि ने अपने आश्रम में ही रहनेवाले एक मोटे–तगड़े चूहे से चुहिया का विवाह कर दिया।

शब्दार्थ

सर्वशक्तिमान	–	सबसे अधिक शक्तिशाली या ताकतवर
आभारी	–	उपकार मानने वाला
मुहूर्त	–	कार्य करने का शुभ समय
आश्रम	–	ऋषि–मुनि का निवास–स्थान
पर्वतराज	–	हिमालय

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. ऋषि को चुहिया कैसे मिली?

प्र.2. चुहिया जब बड़ी हो गई तो ऋषि को किस बात की चिंता हुई?

प्र.3. चुहिया अपने लिए किस प्रकार का वर चाहती थी?

प्र.4. ऋषि ने सबसे अधिक शक्तिमान किसे माना?

प्र.5. बादल ने हिमालय पर्वत को अपने आपसे शक्तिमान क्यों बताया?

प्र.6. ऋषि चुहिया की शादी करने के लिए किस–किसके पास गए?

प्र.7. यदि चुहिया ऋषि की गोद में नहीं गिरती तो उसका क्या होता?

प्र.8. तुम्हारे विचार से संसार में सबसे शक्तिशाली कौन है?

प्र.9. नीचे लिखे वाक्यों को कहानी के क्रम के अनुसार लिखो।

क– ऋषि अपनी पुत्री को लेकर सूर्यदेव के पास पहुँचे।

ख– चुहिया चार–छह दिन में ठीक हो गई।

ग– ऋषि ने एक मोटे–तगड़े चूहे से चुहिया का विवाह कर दिया।

घ– पर्वतराज बोले, "ऋषिवर, आप मेरे यहाँ पधारे, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।"

ङ– बादल ने कहा, "मुझसे तो अधिक शक्तिशाली पर्वतराज हैं।"

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. नीचे लिखे शब्दों के जोड़ों में से सही शब्द चुनकर लिखो।

ऋषि / रिषि; आस्रम / आश्रम; पर्वत / पव्रत; बिल / बील; ग्यान / ज्ञान; स्वीकार / श्वीकार।

प्र.2 नीचे दिए वाक्यों के खाली स्थानों में | के, | ने, | में, | को, | के लिए, | से | उचित शब्द का प्रयोग कर वाक्य पूरे करो।

क– उनकी गोद .... एक चुहिया आ गिरी।

ख– ऋषि हिमालय .... पास पहुँचे।

ग– बादल .... भी ध्यान लगाया।

घ– ऋषि चुहिया .... लेकर सूर्य के पास गए।

ङ– ऋषि चुहिया .... वर ढूँढ़ने गए।

च– हिमालय आसानी .... मेरा मार्ग रोक लेता है।

पढ़ो, समझो और लिखो–

बाईं ओर जो शब्द लिखे हैं, वे सब पुरुष जाति के हैं। दाईं ओर के लिखे शब्द स्त्री जाति के हैं। पुरुष जाति के शब्दों को पुल्लिंग और स्त्री जाति के शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं।

शेर – शेरनी

हिरन – ....

बकरा – ....

बिल्ला – ....

मामा – ....

मोर – ....

लड़का – ....

प्र.3 'नदी' शब्द में अंतिम वर्ण है 'दी'। 'दी' से शब्द बनता है 'दीपक'। 'दीपक' में अंतिम वर्ण है 'क'। क से शब्द बनता है 'कमल'। इस तरह शब्द के अंतिम वर्ण से शब्द बनाते जाओ। यह शब्दों की रेल बन जाएगी।

नदी दीपक कमल

शब्दों की इस रेलगाड़ी को आगे बढ़ाओ। शब्दों की रेल का खेल श्यामपट पर लिखकर खेलो।

याद रखो

- कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनके लिंग नहीं बदलते जैसे–

उल्लू, गिरगिट, चमगादड़, कॉपी, लेखनी आदि।

प्र.4 ऐसे अन्य चार शब्द लिखो जिनके लिंग नहीं बदलते।

रचना

नीचे एक बंदर के बारे में कुछ बातें लिखी हैं। इनके आधार पर एक कहानी बनाओ।

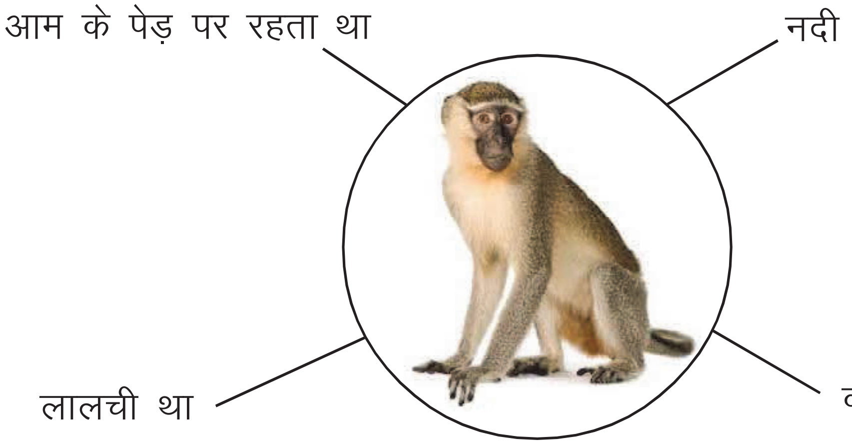

क्रियाकलाप–

प्र.1 अपनी चित्र–पुस्तिका में चुहिया का चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो।

योग्यता विस्तार

- पशु–पक्षियों की एक–एक कहानी हर एक विद्यार्थी कक्षा में सुनाएगा।
- अगर ऋषि को बिल्ली का घायल बच्चा मिलता तो कहानी कैसे बनती? सभी विद्यार्थी मिलकर कहानी बनाएँ।
- स्त्रीलिंग–पुल्लिंग बनाने का खेल खेलो। कक्षा का एक समूह एक शब्द बोलेगा दूसरा समूह उसका लिंग बदलकर बताएगा।

शिक्षण–संकेत

- कहानी को हाव–भाव के साथ सुनाएँ और अनुकरण वाचन कराएँ। पाठ समाप्त करने के पश्चात् कहानी का सार विद्यार्थियों से पूछें।
- बच्चों को समूह में पढ़ने का अवसर दें।

3XQTDT

पाठ 11

दादा जी

परिवार में दादा–दादी का पोते–पोती के प्रति गहरा स्नेह रहता है। पोते–पोती भी दादा–दादी के प्रति गहरा प्रेम रखते हैं। एक–दूसरे के हित की रक्षा भी वे करते हैं। इस पाठ में दादा जी के प्रति एक पोते का ऐसा ही भाव दर्शाया गया है। बच्चे और बूढ़े लोगों की प्रवृत्ति एक–सी होती है। इस पाठ से यह स्पष्ट होता है।

विक्की को स्कूल से घर आने में देर हो गई थी। उसकी माँ चिंतित हो रही थीं। उनकी चिंता एक घटना ने और बढ़ा दी। वे जब घर के बाहर लैटर–बॉक्स में चिट्ठियाँ देखने आईं, तभी हवा का तेज़ झोंका आया और घर के किवाड़ एकाएक ऐसे बंद हुए कि खोले नहीं खुले। भीतर अकेले पिता जी रह गए। विक्की की माँ पुकारते–पुकारते थक गईं लेकिन उन्होंने भीतर से कोई जवाब नहीं दिया। विक्की की माँ बेचारी रुआँसी हो गईं। आसपास के लोग घर के सामने इकट्ठे हो गए।

विक्की के स्कूल में जब क्रिकेट का मैच समाप्त हुआ, तब वह घर आया। घर के बाहर लोगों की जमा भीड़ को देखकर वह हैरान हो गया। उसने देखा, उसकी माँ बार–बार आँचल से आँखें पोंछ रही हैं। वह एकदम दौड़कर माँ के पास पहुँचा और उनसे पूछ बैठा,''माँ, क्या बात है? तू क्यों रो रही है?''

माँ तो कुछ नहीं बोल पाईं लेकिन पास में खड़ी उषा मौसी ने उसे बताया, ''घर का दरवाजा अपने आप बंद हो गया है। पिता जी अन्दर हैं। इधर से हम लोग आवाज लगा रहे हैं, वे किवाड़ खोलते ही नहीं। दिखाई भी नहीं दे रहे।''

विक्की ने हँसकर कहा,''माँ! जरा–जरा–सी बात पर आँखों में आँसू भर लाती हो। लो, मैं दादा जी से कहकर दरवाज़ा खुलवाए देता हूँ।''

इतना कहकर विक्की ने अपना बस्ता वहीं सीढ़ियों पर रखा और आम के पेड़ की ओर लपका। माँ ने उसे रोका, ''अरे बेटे, पेड़ पर मत चढ़ना। कहीं तेज हवा के झोंके में .... ।''

''माँ, तुम इस तरह डराने की बातें क्यों करती हो? मुझे कुछ नहीं होगा। तुम देखती जाओ, मैं क्या करता हूँ।''

आम के पेड़ की एक डाल विक्की के घर की खिड़की के बराबर जाती थी। विक्की पेड़ पर चढ़कर सरक–सरककर खिड़की के सामने पहुँच गया। कमरे और कमरे के बाहर

का पूरा दृश्य उसे दिखाई दे रहा था। लेकिन वहाँ दादा जी नज़र नहीं आ रहे थे। वह टकटकी लगाए खिड़की की ओर देख रहा था। माँ ने पूछा, ''विक्की, पिता जी दिखाई पड़े ?''

विक्की ने कहा, ''नहीं माँ........हाँ।'' दादा जी अब उसके सामने थे। उनके हाथ में मिठाई की प्लेट थी। विक्की की माँ ने विक्की के जन्मदिन के लिए मिठाइयाँ बनाई थीं। लगता है दादा जी के हाथ में वे ही मिठाइयाँ पड़ गईं। लेकिन डॉक्टर ने तो उन्हें मिठाई खाने के लिए मना किया था। फिर दादा जी मिठाई क्यों खा रहे हैं?

माँ बार–बार पिता जी के बारे में पूछ रही थीं लेकिन विक्की खामोश था। अचानक दादा जी की नज़र विक्की पर पड़ी। वे भौंचक्के रह गए। उन्होंने होठों पर उँगली रखते हुए कहा ''श......श.....श'', यानी चुप रहना। विक्की ने सोचा,'' दादा जी ने भी मेरी कई बार सहायता की है। छमाही परीक्षा का परीक्षाफल आया था। तब पापा की मार से दादा जी ने ही बचाया था। उन्होंने पिता जी से कहा था, ''अब मैं ही विक्की को गणित पढ़ाऊँगा। लगता है, वह गणित में कमज़ोर है।'' मुझे भी इस समय दादा जी की सहायता करनी चाहिए।''

दादा जी का इशारा समझकर विक्की ने मुस्कुराते हुए गर्दन हिला दी। प्लेट को यथास्थान रखते हुए दादा जी ने तौलिए से मुँह पोंछा और वे दरवाज़ा खोलने आ पहुँचे।

रात हुई। विक्की के जन्मदिन का समारोह मनाया गया। बच्चों ने खूब धूम–धड़ाका किया। विक्की को तिलक लगाया गया। सब बच्चों ने गीत गाया, 'तुम जियो हजारों साल।' विक्की ने अपने मित्रों को मिठाइयाँ खिलाईं। फिर वह प्लेट लेकर दादा जी के पास गया। ''दादा जी, मुँह खोलिए''– वह बोला।

''नहीं बेटा, मैं मिठाई नहीं खाऊँगा। डॉक्टर ने मना किया है।'' ''दादा जी, डॉक्टर ने मना किया है, आप मिठाई नहीं खाएँगे। बताऊँ सबको दोपहर की बात।''

''न,न,न..........''कहते हुए दादा जी ने रसगुल्ला गपक लिया और वे बोले, ''तुम–जि–ओ ह–जा–रों साल।''

शब्दार्थ

लैटरबॉक्स	–	पत्र–पेटी
रूआँसी	–	रोने जैसी
हैरान	–	आश्चर्यचकित
खामोश	–	चुप

नीचे लिखे शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर लिखो।

(उचित जगह, बगैर पलकें झपकाए देखना, हक्का–बक्का)

टकटकी लगाकर देखना	–	–––––––––––––
भौंचक्का	–	–––––––––––––
यथास्थान	–	–––––––––––––

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. विक्की के घर उस दिन कौन–सा उत्सव मनाया जा रहा था ?

प्र.2. विक्की की माँ क्यों चिंतित हो रही थीं ?

प्र.3. विक्की हैरान क्यों हो गया ?

प्र.4. माँ की बात सुनकर विक्की को हँसी क्यों आ गई ?

प्र.5. दादा जी अंदर क्या कर रहे थे ?

प्र.6. विक्की ने दादा जी की सहायता क्यों की ?

प्र.7. विक्की ने दादा जी की कौन–सी बात सबसे छुपाई थी ?

प्र.8. दादाजी ने बहुत देर तक किवाड़ क्यों नहीं खोले ?

प्र.9. किवाड़ खुलने पर विक्की की माँ ने दादा जी से किवाड़ न खोलने का कारण जरूर पूछा होगा। दादा जी ने उस समय क्या बहाना बनाया होगा? सोचकर लिखो।

प्र.9. यदि विक्की दादा जी की मिठाई खाने वाली बात सभी को बता देता तो दादा जी क्या करते?

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. पाठ में शब्द आए हैं–'पुकारते–पुकारते', 'सरकते–सरकते'। इसी तरह के

अन्य पाँच *शब्द* लिखो और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

प्र.2. सही शब्द चुनकर लिखो।

क.	खत्म	ख.	लेकिन	ग.	परीक्षा
	खतम		लेकीन		परिक्षा
घ.	चींता	ङ.	आंचल	च.	चढ़ना
	चिंता		आँचल		चड़ना

प्र.3. पढ़ो, समझो और लिखो

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मिठाई	मिठाइयाँ	लड़का	लड़के
खिड़की	खिड़कियाँ	रसगुल्ला	रसगुल्ले
साड़ी	— — —	बस्ता	— — —
बकरी	— — —	रास्ता	— — —
लकड़ी	— — —	झगड़ा	— — —
सहेली	— — —	तवा	— — —

- हवाई जहाज आसमान उड़ रहा है।

तुम्हें यह वाक्य कुछ अटपटा लग रहा होगा। अब इस वाक्य को फिर से पढ़ो।

- हवाई जहाज आसमान <u>में</u> उड़ रहा है।

प्र.4. इन वाक्यों को ठीक करो।

क. दादा जी तौलिए मुँह पोछा। ——————————

ख. बच्चों खूब धूम धड़ाका किया। ——————————

ग. धूप बैठकर चना खाया । ——————————

घ. पहाड़ी गाँवों बाँध डर बना रहता है। ——————————

अब वे सभी शब्द फिर से लिखो जिन्हें तुमने जोड़ा है।

——————————————————————————

रचना

तुम अपना जन्मदिन किस प्रकार मनाते हो ?

योग्यता विस्तार

- तुम अपने दादा जी से कहानियाँ, घटनाएँ, चुटकुले जरूर सुनते होगे। हर एक विद्यार्थी दादा जी से सुनी हुई कहानी या घटना या चुटकुला कक्षा में सुनाए।

शिक्षण—संकेत

- बच्चों को समूह में पढ़ने का अवसर दें।
- मुख्य संवादों का छात्र—छात्राओं से मंचन कराएँ।
- छात्र/छात्राओं से अपने—अपने दादा जी के संबंध में बताने को कहें।
- परिवार के अन्य बड़े सदस्यों के प्रति उनका क्या दृष्टिकोण है, जानें।

3XZPFG

पाठ 12

हाथी

हाथी अपनी अनोखी शारीरिक बनावट के कारण, बच्चों का ध्यान सहज ही अपनी ओर खींचता है। यह एक बुद्धिमान और उपयोगी पशु है। इस पाठ में हाथी के अनोखेपन और उसकी उपयोगिता को बताया गया है।

कहीं–न–कहीं, कभी–न–कभी तुमने भारी–भरकम, काला–काला, मोटी–मोटी टाँगोंवाला हाथी जरूर देखा होगा। छोटी–सी पूँछ, लंबी सूँड़ और सूप जैसे उसके कान होते हैं।

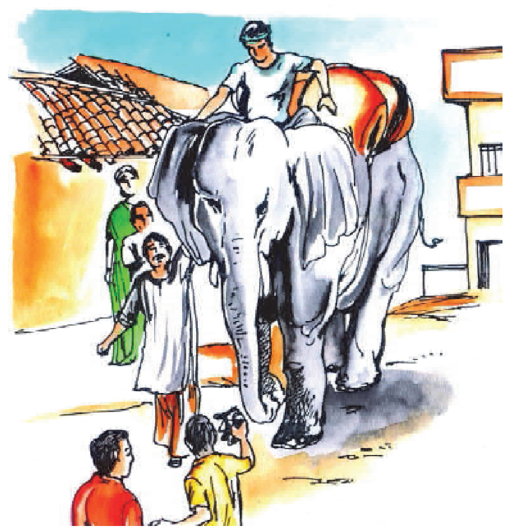

कभी–कभी गाँव में कुछ लोग हाथी लेकर आते हैं। वे उसे गाँव की गलियों में घुमाते हैं। गाँववाले उन्हें पैसे और अनाज देते हैं, तो कुछ लोग नारियल भी चढ़ाते हैं। महावत के इशारे पर हाथी नारियल फोड़ता है; बच्चों को अपनी पीठ पर बैठाता है।

हाथी की गिनती संसार के सबसे बड़े पशुओं में होती है। हाथी के नवजात बच्चे की ऊँचाई लगभग एक मीटर और वज़न 90 किलोग्राम तक होता है। बड़े हाथी का वज़न तो इससे कई गुना अधिक होता हैं। इसकी ऊँचाई लगभग तीन मीटर होती है।

तुमने हाथी की लंबी सूँड़ देखी होगी। यह वास्तव में हाथी की नाक है। इससे हाथी कई काम करता है। वह अपनी सूँड़ से भारी चीजों को आसानी से उठा लेता है। वह महावत को भी अपनी सूँड़ से उठाकर अपनी पीठ पर बैठा लेता है। किसी चीज़ को तोड़ने, फोड़ने एवं खाने में उसकी सूँड़ हमारे हाथ जैसा काम करती है।

नदी या तालाब में जब हाथी नहाता है, तब सूँड़ बड़ी पिचकारी की तरह काम करती है। वह अपनी सूँड़ में पानी भरकर, अपनी पीठ पर फव्वारा चलाता है और जी भरकर नहाता है। हाथी का रंग काला होने से उसे खूब गर्मी लगती है, इसलिए हाथी कई बार नहाता है। धूप, गर्मी एवं कीड़े–मकोड़ों से बचने के लिए हाथी अपने शरीर पर पाउडर की तरह धूल भी लगाता है। शरीर पर धूल डालने का काम भी उसकी सूँड़ ही करती है। हाथी के सूप जैसे बड़े–बड़े कान धीमी आवाज को सुनने में उसकी बड़ी मदद करते हैं। उसके हिलते हुए वे कान उसके खून को ठंडा रखने में भी सहायक होते है।

तुमने हाथी के मुँह के बाहर निकले हुए दो दाँत देखे होंगे। ये लगभग तीन फीट लम्बे होते हैं। ये दाँत केवल हाथी के होते हैं, हथिनी के नहीं। खाना खाने या खाना चबाने में इन दाँतों का कोई विशेष योगदान नहीं होता। हाथी के खाने के दाँत अलग होते हैं। इसीलिए एक कहावत है–हाथी के खाने के दाँत और दिखाने के और होते हैं।

शरीर के हिसाब से हाथी के लिए भोजन भी खूब लगता है। एक हाथी एक दिन में दो क्विंटल से भी अधिक चारा–पत्ता खाता है। गन्ना इसे बहुत पसंद है। हाथी अपना भोजन चबा–चबाकर खाता है। गाय, भैंस या अन्य शाकाहारी पशुओं की तरह हाथी जुगाली नहीं करता।

हाथी की खाल बहुत मोटी एवं मज़बूत होती है। इसकी खाल पर बाल भी होते हैं, किन्तु बहुत कम।

मनुष्य ने हाथी को अपने काम एवं लाभ के लिए पालतू बनाया है; वैसे हाथी जंगली पशु ही है। जंगल में हाथी झुंडों में रहना पसंद करते हैं। एक झुंड में इनके एक से अधिक परिवार रहते हैं। हथिनियाँ अपने बच्चों को खूब प्यार करती हैं एवं उन्हें सीख भी देती हैं। जंगली हाथी बहुत खूँखार होते हैं। वे जब कभी गाँवों में घुस आते हैं तो लोगों की फसलों एवं घरों को बहुत नुकसान भी पहुँचाते हैं।

प्राचीन काल से ही मनुष्य हाथी को पाल रहा है। राजा, महाराजा इसका उपयोग सवारी एवं युद्ध के लिए करते थे। पालतू हाथी आज भी जंगलों में बोझा ढोने का काम करते हैं। सरकस में भी हमें हाथियों के बहुत–से विचित्र करतब देखने को मिलते थे किन्तु अब सरकस में इनका उपयोग बंद कर दिया गया है।

हाथी जितना शक्तिशाली है, उतना ही बुद्धिमान प्राणी भी है। मशीनी युग आने से समाज में इनकी आवश्यकता एवं महत्व दोनों कम हुए हैं, फिर भी अपने गुणों के कारण भारतीय समाज में हाथी को गणेश का रूप माना गया है इसीलिए यह एक पूजनीय प्राणी है।

शब्दार्थ

महावत – हाथी को चलानेवाला।
शाकाहारी – जो पेड़–पौधे और उनसे प्राप्त होने वाली चीजें खाते हैं।
संसार – दुनिया।
नवजात – नया जन्मा हुआ।
स्नान – नहाना।

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. हाथी की नाक को क्या कहते हैं?

प्र.2. हाथी अपनी सूँड़ से कौन–कौन–से कार्य करता है ?

प्र.3. नहाने के बाद हाथी अपने शरीर पर धूल–मिट्टी क्यों छिड़कता है ?

प्र.4. हाथी जुगाली नहीं करता। ऐसे चार पशुओं के नाम लिखो जो जुगाली करते हैं।

प्र.5. हाथी की तरह और किस पशु को तालाब में नहाना बहुत पसंद है? क्यों ?

प्र.6. अपनी पसंद के किसी एक जानवर का वर्णन नीचे लिखे बिंदुओं के आधर पर लिखें।

क. शारीरिक बनावट के आधार पर।

ख. भोजन एवं आवास के आधार पर।

ग. मनुष्य के लिए उपयोगिता।

प्र.7. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाओ –

1. जुगाली का अर्थ है –
   अ. खाना खाना
   ब. चुगली करना
   स. खाने को पेट से मुँह में वापस लाकर उसे फिर से चबाना
2. हाथी को खाने में पसंद है –
   अ. गन्ना
   ब. नारियल
   स. सेब
3. हाथी भारी बोझ उठाता है –
   अ. अपने सिर से
   ब. अपनी सूँड से
   स. अपने दाँत से

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. नीचे काले मोटे शब्दों के विलोम शब्द (उल्टे अर्थवाले) खाली स्थान में लिखो।

क– हाथी **समझदार** जानवर है और गधा .... जानवर है।

ख– हाथी **भारी** चीजें उठाता है, बालक .... चीजें उठा पाता है।

ग– हाथी की खाल **मोटी** होती है, आदमी की चमड़ी .... होती है।

घ– हाथी **बड़ा** जानवर है, खरगोश .... जानवर है।

ङ– शेर **जंगली** जानवर है, बैल .... जानवर है।

प्र.2 नीचे दिए गए वर्णों का प्रयोग करते हुए शब्द बनाओ।

म, ना, हा, रि, व, य, त, ल।

प्र.3 मज़बूत में चार वर्ण हैं–

म ज बू त

इन चारों वर्णों से अलग–अलग शब्द बनाओ, जैसे

म– मगर, महावत ।

ज– ...., ... ।

बू– ...., ... ।

त– ...., ... ।

प्र.4 पढ़ो, समझो और लिखो –

समझ + दार = समझदार

हवा + दार = हवादार

फल + दार = ––––––

चमक + दार = ––––––

दम + दार = ––––––

––– + ––– = ––––––

––– + ––– = ––––––

रचना

हाथी से संबंधित कोई कविता या कहानी लिखो।

योग्यता विस्तार

- आपके गाँव या शहर में कभी हाथी आता है? यदि हाँ तो उस पर सवारी करके अपने अनुभव कक्षा में सुनाओ।
- हाथी के संबंध में यह कविता पढ़ो, याद करो और कक्षा में सुनाओ।

हाथी राजा बहुत भले,
सूँड़ हिलाते कहाँ चले?
कान हिलाते कहाँ चले?
मेरे घर आ जाओ ना,
हलुआ पूड़ी खाओ ना।

- जानवरों के संबंध में बहुत–से मुहावरे और कहावतें प्रचलित हैं। उन्हे ढूँढकर कक्षा की दीवार पर प्रदर्शित करो।

जैसे – अंधो का हाथी।

- इस कहानी को पढ़ो–

एक शहर में एक हाथी रहता था। वह प्रतिदिन दोपहर को नदी में नहाने जाता था। उसके रास्ते में दर्जी की एक दुकान थी। दर्जी बहुत दयावान था। हाथी उसकी दुकान पर पहुँचकर, सूँड़ उठाकर उसे प्रणाम करता था। दर्जी उसे प्रतिदिन एक केला खाने के लिए देता था। एक दिन दर्जी का लड़का दुकान पर बैठा था। दर्जी उस दिन किसी दूसरे काम से बाहर गया था। हाथी रोज की तरह दुकान पर पहुँचा। उसने लड़के को प्रणाम किया। केला लेने के लिए जैसे ही हाथी ने अपनी सूँड़ फैलाई, लड़के ने उसकी सूँड़ में सुई चुभो दी। बेचारा हाथी पीड़ा के कारण चिंघाड़ा। फिर वह नदी की ओर चला गया। उसने अपनी सूँड़ में नदी का गंदा पानी भरा। दर्जी की दुकान पर आकर उसने पिचकारी की तरह वह पानी दुकान में फेंक दिया। दर्जी के कई कपड़े खराब हो गए। दर्जी के लड़के को अपने किए का फल मिल गया।

अब बताओ–

क. हाथी, दर्जी से क्यों हिला–मिला था ?

ख. हाथी के प्रति दर्जी के पुत्र का व्यवहार कैसा था ?

ग. हाथी ने दर्जी की दुकान के कपड़े क्यों गंदे कर दिए ?

घ. हाथी के आचरण से हम पशुओं के व्यवहार में क्या बात देखते हैं ?

ङ पुत्र के आचरण पर दर्जी ने क्या कहा होगा ?

3YIGIR

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को ह्रस्व, दीर्घ वर्णों को ध्यान में रखकर पढ़ने का अभ्यास कराएँ।
- हाथी के संबंध में कक्षा में चर्चा करें।
- विद्यार्थियों को बताएँ कि कोमल व्यवहार करने पर पशु आदमी से हिल–मिल जाते हैं, लेकिन जो उनके साथ बुरा व्यवहार करते हैं, उनको वे सबक सिखा देते हैं।

पाठ 13

होनहार लइका नरेन्द्र

3YSCKE

पाठ परिचय– हमर देश म कतकोन संत महात्मा, गियानी–धियानी होय हें, जिंखर गुण ह नानपन ले दिखे ल धर लय। अइसने ए पाठ म विवेकानंद के नान्हेपन के एक ठन गुन ल जानबोन।

लइका हो! ध्यान देके सुनव जी! नरेन्द्र नाँव के एक झिन लइका रहिस। ओ अपन जनम लेय के बेरा ले आन लइका मन ले अलग दिखय। ओकर फक गोरिया देंह, चौरस माथा, पातर–पातर अउ लम्हरी अँगरी, गोल–गोल सुग्घर आँखी सबके मन ल मोह लय। नरेन्द्र जइसे–जइसे बड़े होवत गिस तइसे–तइसे ओकर भीतर के गुण उजागर होवत गिस।

ओकर दाई–ददा के चार झिन बेटी रहिन फेर दू बेटी के इन्तकाल हो गे रहिस। इँकर बाद नरेन्द्र के जनम होय रहिस। ओहर अब्बड़ होनहार रहिस। ते पाय के ओहा सबे बर मयारू रहिस।

नान्हेपन में ओकर गुण के लक्षण दिखे बर धर ले रहिस। एकर बहुत अकन किस्सा हे, फेर ए मेर एक ठिन किस्सा मँय हर तुमन ल बतावत हँव।

नरेन्द्र ह स्कूल म भर्ती होगे रहिस तब के बात आय। गुरुजी इतिहास पढ़ावत रहिस। ओहर अतेक अच्छा ढंग से पढ़ावत रहिस कि सबे लइका मन ध्यान देके सुनत रिहिन। फेर गुरुजी देखिस कि नरेन्द्र के ध्यान कोन जनी कहाँ रहिस ? ओखर आँखी आधा मुँदाए रहिस अउ ओहर हालत–डोलत नइ रहिस। गुरुजी ओला देखिस ते ओला बड़ा रिस लागिस। ओहर सोंचिस कि देख ए लइका ल मँय अतेक सुग्घर पढ़ावत हँव अउ ए ह उँघावत बइठे हे। अइसन सोंच के गुरुजी भड़क गे। घुस्सा के मारे ओकर आँखी लाल होगे। ओहर बड़ जोर से खिसियाके नरेन्द्र ल कहिस–''कस रे मूरुख। कक्षा में बइठके सुतत हस रे। अरे ! पढ़इ–लिखइ से अतके दुश्मनी हे तब इहाँ काबर आथस?''

शिक्षण संकेत – पाठ ल पहिली गुरुजी ह हाव–भाव ले पढ़यँ। फेर लइका मन ओला सुनके ओइसनेच दुहरावय। पाठ म आए मुहावरा के मायने बतावँय अउ ओकर प्रयोग करवाय। कठिन शब्द ल कापी म लिखँय अउ बने पढ़े बर बतावँय। अपन राज या देश के महान मनखे के लइकापन म घटे कोनो घटना के जानकारी गुरुजी बतावय।

गुरुजी के गोठ ल सुन के नरेन्द्र ल बने नइ लागिस। ओला अइसे लागिस, जइसे गुरुजी ओकर हिनमान करत हे। नरेन्द्र ह तो आँखी ल मुँदे–मुँदे ध्यान लगाके गुरुजी के सबो बात ल सुनत रहिस। गुरुजी के घुस्सा के बलदा म नरेन्द्र ह थोरिक मुसकिया के कहिस–''मँय सुतत नइ हँव गुरुजी जागत हँव।'' ओकर बात ल सुन के गुरुजी सकपकागे अउ नरेन्द्र के मुँह ल देखे ल धर लिस। ओ हा मने–मन सोंचे लगिस के यहा काए भाई अइसन किस्सा तो मँय ह न सुने रेहेंव न देखे रेहेंव। गुरुजी के घुस्सा उतरगे। ओहा बहुत मया करके नरेन्द्र ल कहिस– ''त अइसने सुते अस काबर बइठथस बेटा? देख मँय ह फोकट म तोर उपर खिसियागेंव न? रिस झन मानबे बाबू। तँय हर तो बड़ा होनहार लइका अस बेटा। सरस्वती माता सदा तोर उपर छाहित राहय।''

ये किस्सा ल सुना के गुरुजी लइका मन ल किहिस त लइका हो! तुमन जानत हव, ए नरेन्द्र कोन ए तेन ल? नइ जानव? उही नरेन्द्र ह बड़े होके 'स्वामी विवेकानन्द' कहइस अउ चारों मुड़ा देश–बिदेश म हमर भारत देश के नाँव ल उज्जर करिस। छत्तीसगढ़ ले घलो स्वामी विवेकानंद के नाँव ह जुड़े हे। स्वामी विवेकानंद ह रायपुर म घलो रहिस। वोहा दू बछर ले अपन महतारी–बाप के संग म बूढ़ापारा म राहत रहिस।

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने–

शब्द	मायने
होनहार	उज्ज्वल भविष्यवाला
किस्सा	कहानी
उँघाना	ऊँघना, नींद लेना
हिनमान	अपमान

प्रश्न अउ अभ्यास–

प्रश्न 1– खाल्हे म लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

1. नरेन्द्र काखर नाँव रहिस ?
2. नरेन्द्र कक्षा म का करत रहिस ?
3. गुरुजी नरेन्द्र उपर काबर घुसियागे ?
4. गुरुजी के घुस्सा कइसे उतरगे ?
5. नरेन्द्र कइसन लइका रहिस ?
6. आगू चल के नरेन्द्र ल का नाँव ले जाने गिस ?

प्रश्न 2–कोन ह कोन ल कहिस ?

1. ''कस रे मुरुख ! कक्षा म बइठके सुतत हस रे?''
2. ''मँय तुँहर ले जादा जागत हँव।''
3. ''त अइसने सुते अस काबर बइठथस बेटा?''

भाषा—अध्ययन अउ व्याकरण—

प्रश्न 1. खाल्हे लिखाय कठिन शब्द ल लिखव अउ पढ़व—

लच्छन गुस्सा सरस्वती नरेन्द्र

सकपकागे विवेकानन्द इन्तकाल

प्रश्न 2. उलटा अर्थ वाले शब्द लिखव—

हिनमान गुन

गुस्सा दुश्मनी

देश जनम

प्रश्न 3. वाक्य म प्रयोग करव—

नान्हेपन गुस्सा गुरुजी उज्जर

प्रश्न 4. चार संघरा शब्द खोजव अउ लिखव—

जइसे — पढ़इ—लिखइ

मुहावरा—

1. आँखी लाल होना — क्रोधित होना।
2. मुँह ललियाना — गुस्से या शर्म से मुँह लाल हो जाना।
3. सकपकाना — सहम जाना।

योग्यता विस्तार—

1. अइसे चार बखत के नाम लिखव, जेन बेरा जोर से बोलना पड़थे।
2. स्वामी विवेकानंद ल छोंड़ के दू झन अउ महापुरुस मन के बचपन के कोनो बने बात खोज के कक्षा म सुनावव।
3. अपन गुरूजी ले पूछव के ए जघा मन के स्वामी विवेकानंद ले का सम्बंध हे—

(1) शिकागो (2) कलकत्ता

3Z28M2

3ZB4NP

पाठ 14

कौन जीता ?

'घमंडी का सिर नीचा' कहावत हमें सिखाती है कि हम कभी घमंड न करें और न ही अपनी प्रशंसा अपने मुँह से करें; दूसरों के गुणों को अपनाएँ। इस पाठ में एक घमंडी कौए और हंस की कहानी है। हंस के बच्चे ने कौए का घमंड कैसे चूर किया, इस कहानी में पढ़ेंगे।

गंगा नदी के किनारे बरगद का एक पेड़ था। उस पेड़ पर एक कौआ भी रहता था। वह बड़ा घमंडी था। एक दिन सुबह–सुबह तीन हंस बरगद के नीचे आकर बैठ गए। उनको देखकर कौआ बोला– ''अरे! आप लोग यहाँ क्यों बैठे हैं? क्या यह बरगद आपका है?'' एक हंस बोला– ''भाई, हम हंस हैं। मानसरोवर से आ रहे हैं। थोड़ी देर आराम करके यहाँ से चले जाएँगे।'' कौआ फिर बोला– ''तुम लोग उड़ना भी जानते हो या नहीं? मैं तो पचासों तरह की उड़ानें जानता हूँ। दम हो तो मेरे साथ उड़ लो।''

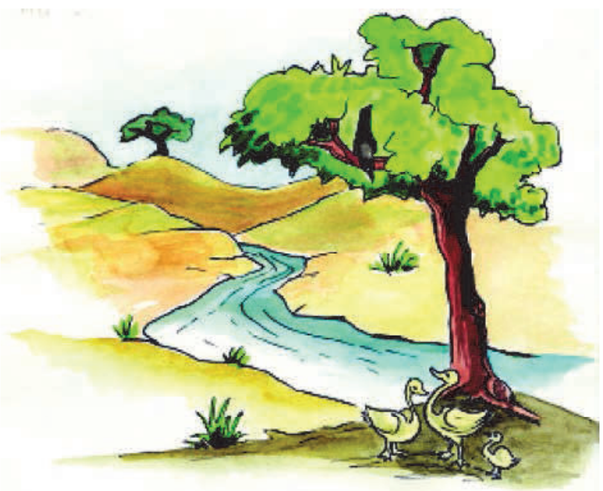

हंसों में से एक अभी बच्चा ही था। उससे अब नहीं रहा गया। वह बोला– ''भैया, मुझे तो केवल एक ही उड़ान आती है। अगर उड़ना चाहो तो उड़ लो।''

कौए ने कहा– ''बस, एक ही उड़ान; खैर उसे ही देखूँगा।'' दोनों गंगा नदी के ऊपर उड़ने लगे, कौआ आगे–आगे, हंस का बच्चा पीछे–पीछे। दोनों उड़ते रहे, उड़ते रहे। कौआ हंस के बच्चे से बोला– ''क्यों, थक गए क्या?'' हंस के बच्चे ने कहा– ''नहीं, उड़ते चलो।'' आखिर कौआ उड़ते–उड़ते थक गया। उसका दम फूलने लगा। अब तो वह नदी में गिरने को हुआ। हंस के बच्चे ने हँसकर पूछा– ''पचासों तरह की उड़ानों में से यह तुम्हारी कौन–सी उड़ान है ?'' कौआ बोला– ''भैया, मैं तो मर रहा हूँ। तुम्हें उड़ान की पड़ी है।'' हंस के बच्चे को कौए पर दया आ गई। उसने कौए को अपनी पीठ पर बैठा लिया । फिर वह बोला –''अब मेरी उड़ान देखो।''

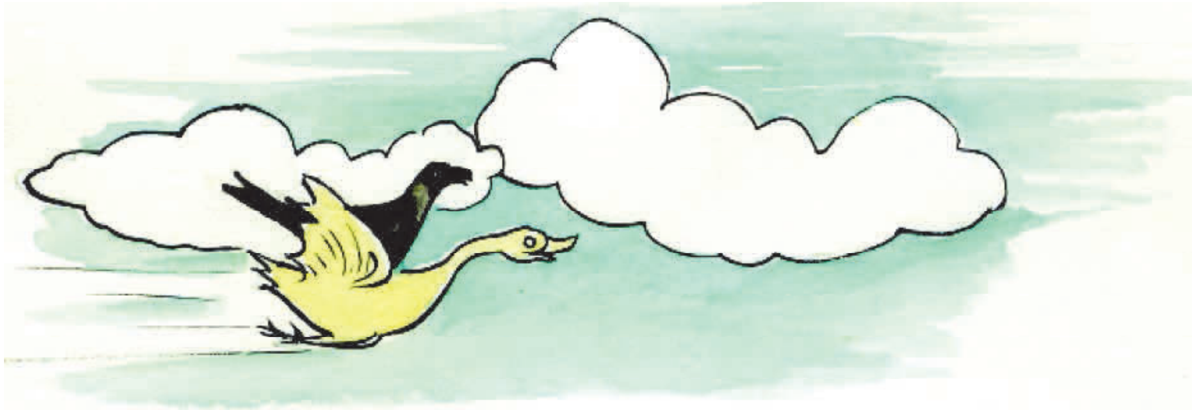

हंस का बच्चा कौए को लेकर बहुत ऊँचा उड़ गया । पीठ पर बैठा कौआ डर के मारे काँपने लगा। उसने तो अभी तक बरगद के आसपास ही चक्कर लगाए थे। गिड़गिड़ाते हुए वह बोला – ''भैया, मुझे तो जल्दी से बरगद पर पहुँचा दो, फिर तुम उड़ान भरना।'' हंस का बच्चा बोला – ''अभी तो तुम बड़ी–बड़ी बातें कर रहे थे, अब क्या हुआ?'' कौआ कुछ न बोला।

अंत में हंस का बच्चा बरगद की ओर लौट पड़ा। कौआ झट से उड़कर बरगद की डाल पर चुपचाप बैठ गया। कौए को अपने अहंकार पर बहुत पछतावा हुआ।

शब्दार्थ

घमंडी	–	जिसे बहुत घमंड हो, अभिमानी
उड़ान	–	उड़ने की क्रिया
गिड़गिड़ाना	–	दया की भीख माँगना।

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. हंस बरगद के पेड़ के नीचे क्यों बैठे थे ?

प्र.2. कौए ने हंसों से क्या कहा ?

प्र.3. हंस के बच्चे ने कौए की चुनौती क्यों स्वीकार की ?

प्र.4. उड़ान के अंत में कौन जीता ?

प्र.5. हंस ने अपने बच्चे से पूछा होगा– ''बेटा, उड़ान में क्या हुआ?'' तो हंस के बच्चे ने क्या जवाब दिया होगा? सोचकर लिखो ।

प्र.6. यदि हंस के बच्चे ने कौए की मदद नहीं की होती तो कौए की क्या दशा होती?

प्र.7. तुम्हें अपने दोस्त में कौन–से गुण अच्छे लगते हैं?

प्र.8. किसने, किससे कहा ?

क– ''क्या यह बरगद आपका है?''

ख– ''थोड़ी देर आराम करके यहाँ से चले जाएँगे।''

ग– ''भैया, मैं तो मर रहा हूँ। तुम्हें उड़ान की पड़ी है।'

प्र.9. सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाओ –

क. घमण्डी का अर्थ है –

अ. अच्छा

ब. अभिमानी

स. खराब

ख. गंगा नाम है –

अ. तालाब का

ब. नदी का

स. पेड़ का

ग. काँपना का अर्थ है –

अ. तेज दौड़ना

ब. जल्दी–जल्दी साँसे भरना

स. कँपकँपी

भाषा–अध्ययन एवं व्याकरण

प्र.1 नीचे लिखे अंश को पढ़ो। उसमें आए नामों को नीचे दी गई तालिका में लिखो।

"अंशुल बिलासपुर में रहता है। वत्सल का घर रायपुर में है। दोनों गर्मी की छुट्टियों में दिल्ली गए। दिल्ली में उनकी किरण मौसी रहती हैं। किरण मौसी के साथ दोनों दिल्ली घूमे। दिल्ली में उन्होंने कुतुबमीनार, लाल किला देखा। सभी लोग गांधी जी की समाधि देखने राजघाट भी गए। मौसी ने अंशुल और वत्सल के लिए बाजार से किताब, बस्ता और पेन खरीदा।

क– व्यक्तियों के नाम	ख– वस्तुओं के नाम	ग– स्थानों के नाम
....	....	....
....	....	....

प्र.2 पेड़ से क्या – क्या फायदे हैं ? लिखो।

क्र.	पेड़ का नाम	लाभ

योग्यता विस्तार

कहानी बनाओं–

विद्यालय, छुट्टी, बंदर, डंडा, पेड़, केला, नदी, तोता, मेंढक

इन शब्दों को पढ़कर तुम्हारे मन में कुछ बातें आई होंगी । इन सब चीजों के बारे में एक छोटी सी कहानी बनाओ और अपने साथियों को सुनाओ ।

3ZJZQC

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को समूह में पढ़ने का अवसर दें।
- एक विद्यार्थी को हंस और दूसरे को कौए के रूप में खड़ा करें और पाठ के अनुसार वार्तालाप कराएँ।
- कौए और हंस की विशेषताएँ पूछें और बताएँ।
- कहानी को नाटक के रूप में बदलकर अभिनय कराएँ।
- कौए और हंस के चित्र खोजकर अपने पोर्टफोलियो में लगाओ।

पाठ 15

मैं हूँ महानदी

हमारे देश में अनेक महत्वपूर्ण और पवित्र नदियाँ हैं। महानदी भी उनमें से एक है। यह हमारे राज्य की सबसे बड़ी और पवित्र नदी है। इस पाठ में महानदी अपनी कहानी स्वयं सुना रही है।

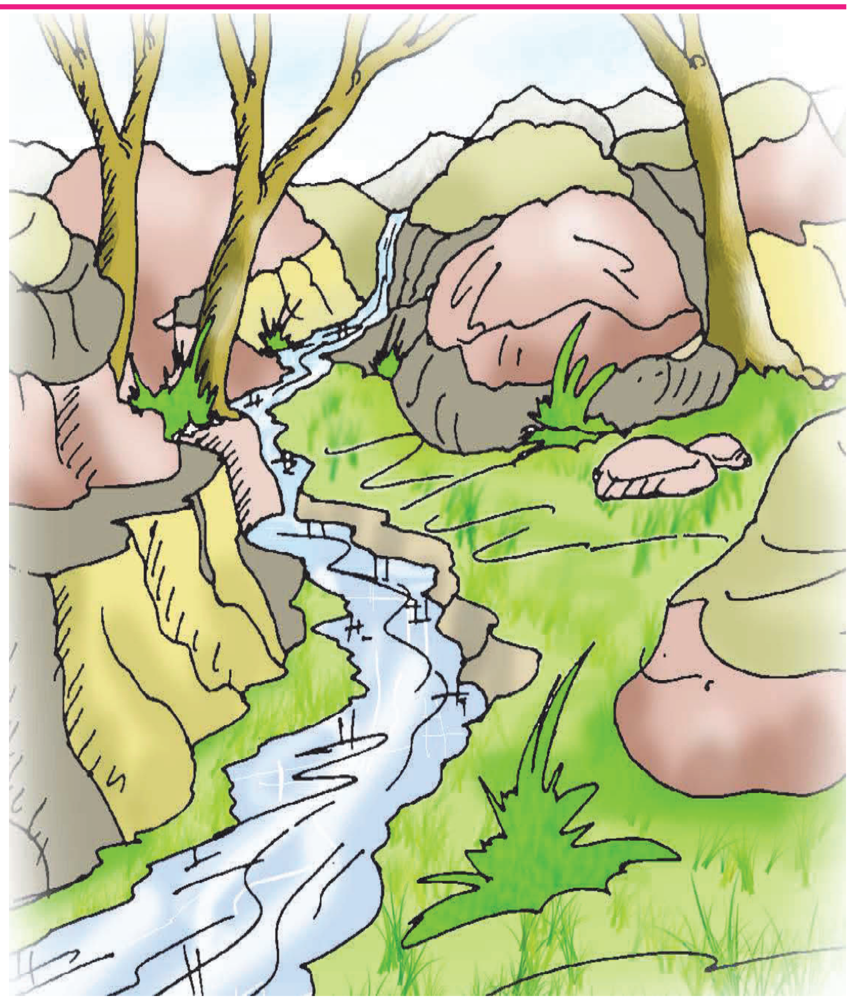

जी हाँ! मेरा नाम महानदी ही है।

गंगा, यमुना, गोदावरी एवं नर्मदा की तरह मैं भी एक प्राचीन, पवित्र नदी हूँ। बच्चो! क्या तुम जानते हो कि तुम सभी की तरह मेरी जन्मभूमि भी छत्तीसगढ़ ही है। धमतरी जिले में नगरी नामक कस्बा है। इसके पास ही सिहावा पर्वत में मेरा जन्म हुआ। इसी पर्वत की ढलानों में खेलते–कूदते मैं बढ़ती रही और धीरे–धीरे नीचे मैदान में उतर आई।

अब मैं कुछ बड़ी हो गई और उछल – कूद छोड़कर कल–कल करती हुई, धीरे–धीरे आगे बढ़ने लगी। मैदानी भाग होने के कारण, कहीं–कहीं पर मेरी धारा का कुछ पानी ठहरकर सरोवर भी बनाता गया। इन सरोवरों में बहुत सुंदर नीले रंग के कमल भी खिला करते थे। इन नीले कमल के फूलों के कारण कुछ लोगों ने मुझे 'नीलोत्पला', तो कुछ लोगों ने मुझे 'चित्रोत्पला' नाम भी दिया। जी हाँ! वेदों में मेरे ये ही नाम मिलते हैं। कुछ लोगों ने दुलार से मुझे 'महानंदा' भी कहकर पुकारा। आज मेरा प्रचलित नाम 'महानदी' है।

मेरे मार्ग में कहीं जंगल, पहाड़ हैं, तो कहीं दूर–दूर तक फैले हुए खेत हैं। यात्री कहते हैं– ''जब मैं जंगल, पहाड़ों से होकर गुजरती हूँ तो बहुत सुंदर दिखाई पड़ती हूँ।'' मेरे तटों पर जिन किसानों के खेत हैं,वे मुझे साक्षात् अन्नपूर्णा या लक्ष्मी कहते हैं।

धमतरी के मैदानों से निकलकर, मैं काँकेर एवं चारामा होते हुए राजिम पहुँची। यहाँ मेरी दो बहिनें–पैरी (पार्वती) और सोंढुर (सुंदराभूति) – आकर मुझमें मिल गईं। अब मेरा सम्मान भी बहुत होने लगा। राजिम में हमारे इस संगम–स्थल पर भगवान राजीवलोचन (श्री राम) एवं कुलेश्वर महादेव के दर्शनीय मंदिर बनाए गए। इन पवित्र मंदिरों में दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहता है। तीर्थयात्री मेरे जल में डुबकी लगाते हैं एवं मेरा जल ले जाकर भगवान शंकर पर चढ़ाते हैं। यहाँ पर माघ पूर्णिमा से प्रारंभ होकर महाशिवरात्रि तक एक विशाल मेला भरता है।

राजिम से आगे मेरे तट पर एक प्राचीन नगरी है–'आरंग'। 'आरंग' किसी जमाने में जैन धर्म का प्रसिद्ध केंद्र था। मेरे साथ–साथ कुछ और आगे चलने पर आप पहुँचेंगे 'सिरपुर'। यहाँ प्राचीन लक्ष्मण मंदिर एवं गंधेश्वर मंदिर दर्शनीय हैं। प्राचीन काल में सिरपुर (श्रीपुर) एक बड़ा नगर था। यहाँ एक बौद्ध संघाराम था, जहाँ हजारों छात्र शिक्षा प्राप्त करते थे।

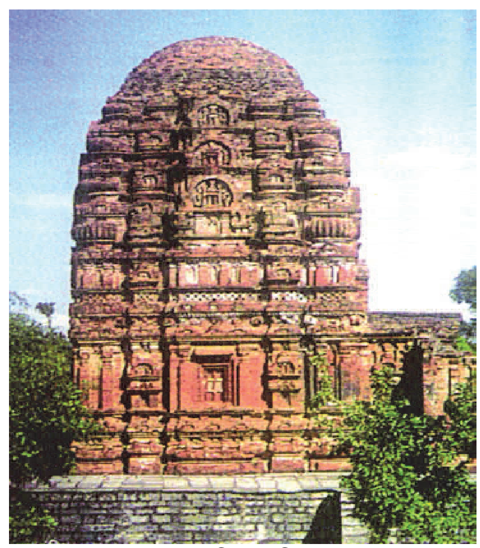
लक्ष्मण मंदिर, सिरपुर

रामायण में राम को शबरी द्वारा बेर खिलाए जाने का वर्णन है। शबरी का आश्रम भी मेरे तट पर ही था। वह स्थान बहुत पुराने समय से शिवरीनारायण के नाम से जाना जाता है। यहीं 'शिवनाथ' और 'जोंक' नदियाँ मुझमें आकर मिलती हैं।

मेरे कुछ और आगे बढ़ने पर 'हसदो' और 'माँड' नदियाँ भी मुझे अपना सारा पानी दे देती हैं।

छत्तीसगढ़ से निकलकर मैं उड़ीसा प्रदेश में प्रवेश करती हूँ। अब तक मेरा आकार बहुत बड़ा हो जाता है। मेरे तट की चौड़ाई कहीं–कहीं एक किलोमीटर से भी अधिक हो जाती है। उड़ीसा में संबलपुर, कटक नगरों से होते हुए मैं पाराद्वीप पहुँचती हूँ। यहाँ मेरा रूप देखकर लोग कह उठते हैं –'सचमुच यह नदी नहीं, महानदी है।' यहाँ मैं बंगाल की खाड़ी में जा मिलती हूँ।

मेरे तट पर बसनेवाले मेरे पुत्रों ने मुझे हमेशा माँ की तरह सम्मान दिया; मुझे बहुत प्यार और दुलार दिया। कुछ जगहों पर मेरी धारा के बहते जल को रोकने के लिए बाँध बनाए गए हैं। छत्तीसगढ़ में प्रमुख बाँध है 'गंगरेल' बांध जिसे 'पंडित रविशंकर शुक्ल

जलाशय' कहा जाता है। उड़ीसा में संबलपुर के समीप हीराकुंड बाँध भारत का सबसे लंबा बाँध है। यह बाँध मेरे पानी को रोकने के लिए ही बनाया गया है ।

मैं धन्यवाद देती हूँ अपने बच्चों को जो मुझे दूषित होने से बचाकर रखते हैं। मैं सभी के सुखी एवं समृद्ध जीवन की कामना करती हूँ एवं बहते रहकर सबकी प्यास बुझाते रहने का वायदा करती हूँ।

शब्दार्थ

प्राचीन	–	पुरानी	सरोवर	–	तालाब
नीलोत्पला	–	नीले कमलवाली	यात्री	–	यात्रा करनेवाले लोग
सम्मान	–	आदर	संगम	–	मिलन
दर्शनीय	–	देखने योग्य			

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. हमारे राज्य में कौन – कौन सी नदियाँ बहती है ?

प्र.2. महानदी का नाम नीलोत्पला क्यों पड़ा ? इसे और किन–किन नामों से पुकारा जाता है ?

प्र.3. पैरी और सोंढुर नदियों का महानदी से मिलन किस स्थान पर होता है ?

प्र.4. सिरपुर क्यों प्रसिद्ध है ?

प्र.5. महानदी किन–किन क्षेत्रों से बहती हुई अंत में समुद्र से जा मिलती है ?

प्र.6. उन बाँधों के नाम लिखो जो महानदी पर बनाए गए हैं।

प्र.7. इनके नाम लिखो।

क– महानदी की दो सहायक नदियाँ

ख– सिरपुर के दो प्रमुख मंदिर

ग– राजिम के दो प्रमुख मंदिर

प्र.8 नदियों के दूषित होने के कारण लिखो।

प्र.9. अपने गाँव या शहर के आसपास की नदियों के नाम लिखो।

प्र.10. आजकल नदियाँ जल्दी सूख जाती है, इसका क्या कारण होगा?

प्र.11. सही विकल्प पर गोला (0) लगाओ –

क. ''प्राचीन'' शब्द का अर्थ है –

अ. नया

ब. पुराना

स. इनमें से कोई नहीं

ख. इनमें से कौन अलग हैं –

अ. छत्तीसगढ़

ब. उड़ीसा

स. सम्बलपुर

ग इनमें से एक नदी का नाम है –

अ. रायपुर

ब. महानदी

स. भिलाई

घ. ''यात्री'' शब्द का अर्थ है –

अ. नहाने वाले लोग

ब. खाना खाने वाले लोग

स. यात्रा करने वाले लोग

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। इन शब्दों के विपरीत लिंग वाले शब्द लिखो।

घोड़ा,	शेर,	मुर्गा,	मामा,	चाचा,
नानी,	भाई,	शिक्षिका,	गाय,	बेटी

समझो – 'मोहन एक सीधा–सादा लड़का था। वह साफ कपड़े पहनता था। वह गोल टोपी भी पहनता था।' पहले वाक्य में 'सीधा–सादा' लड़के की विशेषता बताता है। इसी प्रकार 'साफ' शब्द 'कपड़े' की और 'गोल' शब्द 'टोपी' की विशेषता बताते हैं। 'सीधा–सादा','साफ' और 'गोल' शब्द विशेषण हैं।

याद रखोः संज्ञा एवं सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्द विशेषण कहलाते है।

प्र.2. इन शब्दों को पढ़ो और विशेषण तथा विशेष्य शब्द अलग–अलग लिखो।
मधुर गीत, समृद्ध जीवन, बड़ा नगर, प्राचीन मंदिर,लंबी सड़क, काली घोड़ी।

रचना

1. अपने आस – पास के किसी स्थल का वर्णन अपने शब्दों में करो।
2. नदी के पानी के क्या उपयोग हैं?
3. इस शब्द पहेली में नगरों के नाम छिपे हैं। इन्हें खोजकर लिखो।

रा	क	जि	ट	म	क	न	चा	ग	रा	री	मा

योग्यता विस्तार

- गंगा एक नदी का नाम है । इसी तरह तुम कितनी नदियों के बारे में जानते हो ? उनमें किन्ही पाँच नदियों के नाम लिखो।

413RTH

शिक्षण–संकेत

- विद्यार्थियों से पानी की समस्या के संबंध में चर्चा करें।
- राज्य की प्रमुख नदियों के संबंध में चर्चा करें।
- महानदी के तट पर भरनेवाले मेलों की भी चर्चा करें।
- नदियों के महत्व पर भी चर्चा करें।
- बच्चों को अपने बारे में लिखने के लिए कहें।

पाठ 16

अगर पेड़ भी चलते होते

41CMVA

बच्चे आपस में बैठकर तरह–तरह की बातें करते हैं। उनकी कल्पनाएँ अजीब–अजीब होती हैं। कभी वे पक्षी बनकर आकाश की सैर करते हैं, कभी शेर बनकर जंगल का राजा बनते हैं। इस पाठ में भी वे कल्पना करते हैं कि अगर कहीं पेड़ चलने लगें तो क्या हो।

अगर पेड़ भी चलते होते।
कितने मजे हमारे होते ?

बाँध तने में उसके रस्सी,
जहाँ कहीं भी हम चल देते।

अगर कहीं पर धूप सताती,
उसके नीचे हम छिप जाते।

भूख सताती अगर अचानक,
तोड़ मधुर फल उसके खाते।

आती कीचड़, बाढ़ कहीं तो,
ऊपर उसके झट चढ़ जाते।

शब्दार्थ

तना	–	पेड़ के नीचे का मोटा भाग	सताती	–	कष्ट देती
मधुर	–	मीठा	झट	–	शीघ्र, तत्काल
धूप	–	सूर्य की रोशनी			

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. पेड़ों से हमें क्या लाभ होता है ?

प्र.2. अगर पेड़ बोलते तो हमसे क्या कहते ?

प्र.3. अगर पेड़ चलते होते तो क्या होता ?

प्र.4. पेड़ों पर हम कब–कब चढ़ते हैं ?

प्र.5. अगर पेड़ न होते तो हमें क्या कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती? सोचकर लिखो।

प्र.6. अगर पहाड़ भी चलने लगें तो क्या होगा ?

प्र.7. अगर हवा–पानी न होते तो क्या होता?

प्र.8. कल्पना करो कि यदि तुम्हारे पंख लग जाएँ तो तुम क्या–क्या करोगे।

प्र.9. अगर आदमी पेड़ की तरह एक जगह ही खड़ा रह जाए और पेड़ चलना शुरू कर दें तो क्या–क्या होगा?

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. नीचे दिए गए अनुच्छेद में से संज्ञा और विशेषण शब्दों को चुनकर तालिका में लिखो।

एक बगीचा था। बगीचे में आम, अमरूद तथा जामुन के बहुत–से पेड़ थे। कुछ पेड़ों के तने बहुत मोटे थे। वे बहुत पुराने पेड़ थे। उन पेड़ों के फल मीठे थे। वहाँ अमरूदों के पेड़ भी थे। अमरूद मीठे थे। पके जामुनों का रंग काला था। कभी–कभी बगीचे में बंदर आ जाते थे। वे बहुत शरारत करते थे। वे पेड़ों पर चढ़कर फल गिरा देते थे। उन फलों को चिड़ियाँ खा लेती थीं।

संज्ञा (चीजों के नाम)	विशेषण (चीजों के गुण)

जैसे– फल मीठे

प्र.2 तुम इन शब्दों को अपनी भाषा में क्या बोलते हैं?

पेड़, धूप, तना, रस्सी, भूख, कीचड़, बाढ़।

प्र.3 सही विकल्प पर (3) का निशान लगाओ –

क. ''मजे'' शब्द के समान तुकवाला शब्द लिखो –

अ. बजे

ब. राजा

स. फल

ख. इनमें से फल का नाम है –

अ. अमरूद

ब. मीठा

स. रायपुर

ग. अमरूद होता है –

अ. कड़वा

ब. नमकीन

स. मीठा

घ. तना है –

अ. मेड़ का एक भाग

ब. पेड़ का एक भाग

स. रेल का एक भाग

रचना

किसी पेड़ को देखो, उसका चित्र अपनी अभ्यास पुस्तिका में बनाओ और उसमें रंग भरो।

योग्यता विस्तार

अपने आसपास के पेड़ों को पहचानो और उनके नाम तालिका में लिखो।

फलदार पेड़,	काँटोंवाले पेड़,	छाया देनेवाले पेड़,	फूलदार पेड़।

शिक्षण–संकेत

- शिक्षक हाव–भाव और लय के साथ कविता का आदर्श वाचन करें।
- एक–एक पंक्ति हाव–भाव से प्रत्येक विद्यार्थी दोहराएँ।
- बाद में पूरी कक्षा लयपूर्वक कविता का गायन करे।
- विद्यार्थियों के उच्चारण पर ध्यान दें।

41LIWX

पाठ 17

सतवन्तिन गाय बहुला

41VEYK

पाठ परिचय– सच बोले म सौ हाथी के बल होथे। फेर अपन वचन के पूरा करइया मन सबो के मन ल जीत लेथें। ए पाठ म सतवंतिन गाय बहुला ह कइसे अपन अउ अपन बछरू के परान ल बचइस, तेनला बताय गेहे।

एक ठन गाय रहिस। ओकर नाँव रहिस बहुला। ओहा सत के मनइया अउ अपन बात के पक्का रहिस।

एक दिन के बात आय। बहुला जंगल म मगन होके चरत रहिस। चरते–चरत ओहा बघवा के माड़ा कोती चल दिस। उदुप ले एक ठन बघवा ओकर आघू म आगे। साँगर–मोंगर गाय ल देख के बघवा के लार चुहे लगिस। मने मन ओहा गुने लगिस के आज पेट भर के माँस खाय बर मिलही।

शिक्षण संकेत– लोककथा ल हावभाव के संग सुनावव। लइका मन ल एक–एक अनुच्छेद पढ़ावव। ओकर हिज्जा म ध्यान देवव। पढ़त बेरा विराम चिनहा मन के ध्यान रखव।

बघवा गरज के कहिस– ''ऐ गइया, ठाढ़ हो जा! मैं ह तोला खाहँव?''

बघवा देख के बहुला ल थोरको डर नइ लागिस, फेर ओला अपन नानकन पिला के सुरता आइस। ओ हर हाथ जोर के बघवा ले विनती करिस– ''हे जंगल के राजा! तैं आज मोला झन खा। मैं एक बेर अपन लेवइ लइका ले मिल के आ जथँव, तहाँ ले तैं मोला खा लेबे।''

बघवा कहिस– ''तैं मोर खाजी अस। मैं कइसे तोर बात ल पतिया लँव? त बहुला कहिस– ''मैं अपन बचन ल टोरहूँ त सोझ नरक म जाहूँ।''

बघवा अपन मन म विचार करिस–एक बखत देखे जाय, ए गाय ह कहत हे, तइसे करथे के नहीं, अइसन विचार करके बघवा गाय ल कहिस– ''ले जा भइ, अपन लइका ल दूध पिया के आव। मैं इही मेर तोला अगोरत बइठे रइहूँ।''

बहुला अपन घर लहुट गे अउ अपन पिला ल बहुत मया करे लगिस। वो हा अपन पिला ल कहिस– ''ले आखिरी बेर दूध पी ले बेटा।''

बछरू पूछे लगिस, ''काबर तैं अइसने काहत हस दाई? तोर मुँह घलो उतरे कस दिखत हे।'' बहुला ह सबे बात ल पिला ल बताइस। पिला ह अपन महतारी ल कहिस– ''तैं कइसे वचन देके आ गेस। तोला मोर थोरको सुरता नइ अइस ? अब महूँ तोर संग जाहूँ।''

बहुला अपन पिला ल बहुत समझाइस अउ कहिस– ''मैं तोला अपन महतारी करा छोड़ देथँव। वो हर तोला पोंसही–पालही।'' फेर ओकर पिला नइ मानिस अउ अपन महतारी के संगे–संग जंगल म पहुँचगे।

बघवा ह गाय ल अगोरत बइठे रहय। बहुला ह अपन पिला संग बघवा के आगू म आके ठाढ़ होगे। पिला ल देख के बघवा कहिस– ''ये नानकन बछरू ल तैं काबर संग म लाने हस? अब मैं एकर का करहूँ?'' बघवा के बात ल सुनके बछरू आगू आके कहिस– ''जै जोहार ममा! मैं अपन महतारी ल छोड़ के कहाँ जाहूँ? मँय हर तो बिन मारे मर जहूँ। तेकर ले तँय मोला खाले अउ मोर महतारी ल छोंड दे। मोला खाये के बाद तैं का करबे तेला तैं जान। फेर मोर महतारी ल झन खा।''

बछरू के बात ल सुनके बघवा अकबकागे। कोन ल खावँव, कोन ल बचावँव। ओकर मन पसीज गे। कतेक सतवन्तिन हे ए गाय हर अउ ओकर ले आगू तो ओकर बछरू हावय जउन अपन महतारी के बल्दा म अपन प्राण ल देबर तैयार हे। अउ गाय घलो अपन वचन ल निभाये बर अपन प्राण के चिन्ता नइ करिस। जब करिस ते अपन पिला के फिकर करिस।

बघवा के मन म दुनों के खातिर बड़ आदर के भाव पैदा होगे। अउ लेवइ हर ओला ममा कहिके चतुरइ देखा दिस। अब भाँचा के दाई हर तो बहिनी होगे। अपन बहिनी ल कोन खाही? अइसे विचार करके ओहर बहुला ल कहिस ''ले जा भई ! तुमन तो मोर हिरदे ल जीत डारेव! मैं तुम दुनों ल नइ खावँव। भगवान हर मोर पेट बर घलो काँही दूसर जोखा करे होही।'' ओहा जंगल डाहर चल दिस।

सतवन्तिन गाय बहुला ह सत के बल म अपन अउ बछरू दुनो के प्राण ल बचइस।

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने –

सत	=	सत्य
मगन	=	खुश
माड़ा	=	माँद (शेर के रहने का स्थान)
उदुप ले	=	अचानक
साँगर–मोंगर	=	हष्ट–पुष्ट
पिला	=	छोटा बच्चा, शिशु
लेवइ	=	गाय का छोटा बच्चा जो दूध पर आश्रित हो
खाजी	=	खाने की वस्तु, भोजन (जेवन)

सोझ	=	सीधा
बखत	=	बार
अगोरा	=	प्रतीक्षा करना, इन्तजार करना, बाट जोहना
महतारी	=	माता
ठाढ़ होना	=	खड़े होना
अकबकाना	=	अचरज में पड़ना, आश्चर्य चकित होना
आदर	=	सम्मान
जोखा	=	उपाय
सुरता	=	याद
सतवन्तिन	=	सच बोलने वाली

प्रश्न अउ अभ्यास–

बोध प्रश्न–

कक्षा ल दू दल म बाँट के मुँहअखरा प्रश्न पूछव। कुछ प्रश्न अइसे हो सकत हे–

क. बहुला गाय अउ बघवा के भेंट कोन मेर होइस ?

ख. बघवा के मन काबर पसीज गे ?

लइका मन के प्रश्नोत्तर के बाद गुरुजी घलोक मुँहअखरा प्रश्न पूछँय।

प्रश्न 1. खाल्हे म लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

क. बहुला गाय कोन मेर रहिस ?

ख. बहुला गाय कइसन रहिस ?

ग. गाय ल आघू म देख के बघवा का सोचे लगिस ?

घ. बहुला गाय के पिला ल देख के बघवा का कहिस ?

प्रश्न 2. कोन ह कोन ल कहिस ?

1. "ए गइया! ठाढ़ हो जा, मैं ह तोला खाहँव।"

2. "हे जंगल के राजा तैं आज मोला झन खा।"

3. "जै जोहार ममा ! मैं अपन महतारी ल छोंड़ के कहाँ जाहूँ ?"

4. "ले जा भई! तुमन तो मोर हिरदे ल जीत डारेव। "

प्रश्न 3. तुमन ल मनपसंद काम करे ले कोनो छेंकही, अउ बाधा पहुँचाही त तुमन का करहू ? लिखव।

भाषा–अध्ययन अउ व्याकरण

गतिविधि–

कक्षा के दुनो दल शब्द के अर्थ अउ ओकर वाक्य प्रयोग करे के गतिविधि करँय।

इहाँ हमन सीखबो– जानबो–

मुहावरा मन के मायने लिखना। आदर सूचक शब्द लिखना, मात्रा ज्ञान प्रश्न वाचक वाक्य मन ल जानबो।

प्रश्न 1. सही जोड़ी बनावव अउ लिखव–

जइसे– माइ – पिला

माड़ा – पठरू

कोठा – बघवा

छेरी – दुहना

दूध – गोर्रा

प्रश्न 2. खाल्हे म लिखाय मुहावरा मन के मायने लिखव अउ वाक्य म प्रयोग करव–

क. लार चुचुवा गे ख. मन पसीज गे

ग. मुँह उतर गे घ. हिरदे ल जीत लेस

ङ. नरक म जाहूँ

प्रश्न 3. "साँगर–मोंगर " म संग अवइया दू शब्द हे। एकर मायने होथे 'मोठ–डाँट'। अइसने तीन शब्द लिखव।

प्रश्न 4. पाठ म आए "ा", "ि", " ी" के मात्रा वाले पाँच–पाँच शब्द मन ल छाँट के लिखव–

समझव–

क. मैं तोर बात ल कइसे पतिया लँव ?

ख. मैं अपन महतारी ल छोड़ के कहाँ जाहूँ ?

ए वाक्य मन म प्रश्न पूछे गे हे, एला प्रश्नवाचक वाक्य कहिथें । ए वाक्य मन म प्रश्नवाचक चिनहा (?) लगाय जाथे । अइसना वाक्य मन म का, काबर, कोन, काकर, कइसे, कतका, जइसे शब्द के प्रयोग करके प्रश्न पूछे जाथे ।

प्रश्न 5. अब ए वाक्य मन ल प्रश्नवाचक वाक्य म बदलव–

क. सतवन्तिन गाय ल हरियर काँदी खाये के बड़ सउँख रहिस।

ख. बघवा जंगल के राजा आय।

ग. बघवा दूसर खजानी खोजे बर चल दिस।

प्रश्न 6. ए वाक्य मन ल आदर सूचक वाक्य म बदलव–

क. तैं इहाँ का करत हस ?

ख. सुरता राखबे।

ग. इहाँ ले चले जा।

प्रश्न 7. खाल्हे के कोष्टक म लिखाए शब्द मन के प्रयोग करके खाली जघा ल भरव।

(बघवा , चतुरइ , अगोरत)

क. बघवा ह गाय ल ....बइठे रहय ।

ख. बछरू के बात ल सुनके ....अकबकागे।

ग. लेवइ ह बघवा ल ममा कहिके ....देखाइस।

रचना–

प्रश्न 1. ए वर्ग पहेली म आठ जंगली जनावर मन के नाम लुकाय हे। ओकर मन के नाव खोज के लिखव–

बि	ला	व	र	भा	री
को	हा	सि	बा	लू	ज
लि	बें	द	रा	वा	क
हा	थी	ल	चि	पी	ब
बें	स	का	म	त	घ
क	न	हि	र	ना	वा

योग्यता विस्तार–

- अइसन आवाज के सूची बनावव जेला सुन के कान मुँदे ल पर जथे।
  जइसे– बादर के गरजना।
- ए लोककथा ल हाव–भाव के साथ कक्षा म सुनावव।
- बकेना – गाय का बच्चा, जो दूध पीने के साथ–साथ चारा भी खाता हो।
- 'बघवा' के अउ कोनो दूसर कहानी खोज के कक्षा मे सुनावव।

425B18

42E72V

पाठ 18

जंगल में स्कूल

पढ़–लिखकर आदमी समझदार हो जाता है। फिर उसे न तो कोई धोखा दे सकता है और न वह ठगा जा सकता है। इस पाठ में पशुओं को शिक्षित करने के बहाने सब की शिक्षा के विकास पर बल दिया गया है।

गब्बर शेर जंगल का राजा था। एक दिन उसने जंगल के सब बच्चों को बुलाकर कहा, ''आज से तुम सब बच्चे स्कूल जाना शुरू करो। मैं देखूँगा कि कौन–सा बच्चा स्कूल नहीं जाता। सबसे होशियार बच्चे को मैं इनाम दूँगा।''

स्कूल खुल गया और लल्ली लोमड़ी पढ़ाने आई। हाथी के बच्चे, भालू के बच्चे, हिरन के बच्चे और बंदर के बच्चे, सब बच्चे पढ़ने आ पहुँचे। बच्चों को स्कूल बहुत अच्छा लगा। लल्ली लोमड़ी पढ़ाती हुई नाचती और गाती तो बच्चे भी नाचते और गाते। वह पढ़ाती तो बच्चे मन लगाकर पढ़ते।

सब बच्चे खुशी–खुशी स्कूल आते थे। लेकिन बंदर के एक बच्चे, बब्बन, को स्कूल आना अच्छा नहीं लगता था। वह तो बस जंगल में इधर–उधर घूमना चाहता था।

एक दिन लल्ली लोमड़ी के साथ सब बच्चे गाते–गाते पढ़ रहे थे। तभी बब्बन चुपचाप स्कूल से भाग निकला। किसी ने उसको निकलते हुए नहीं देखा।

अब बब्बन जंगल में घूमने लगा। कभी वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद जाता, तो कभी पेड़ की डाल पकड़कर झूलने लगता। लेकिन थोड़ी देर के बाद बब्बन की उछल–कूद रुक गई। उसने गब्बर शेर की आवाज़ सुनी थी। मारे डर के वह छलाँग भरकर बेल के एक पेड़ पर जा बैठा।

बब्बन पेड़ की डालियों के बीच छिप गया, लेकिन उसकी पूँछ नीचे लटक रही थी। गब्बर शेर ने उसे देख लिया। वह गरजकर बोला—

''बंदर के बच्चे,

अकल के कच्चे।

नीचे उतर।

मैं तुझे बताता हूँ,

स्कूल से भागा है,

अभी मज़ा चखाता हूँ।''

बोला बब्बन

शेर से डरते हुए

बहाना करते हुए।

लोमड़ी के आदेश मान

बेल लेने आ गया।

भागा नहीं कहीं भी

फिर भी पकड़ा गया।

गब्बर शेर ज़ोर से चिल्लाया, ''झूठा! लल्ली लोमड़ी कभी बेल नहीं खाती। तू स्कूल से भागा है। तू झूठा बहाना बना रहा है। सच बता क्या बात है ?

बब्बन डर से काँपने लगा। उसने सोचा कि अब शेर उसे जरूर सज़ा देगा। लेकिन गब्बर शेर दयालु था। उसने प्यार से कहा, ''नीचे उतरो, बच्चे! स्कूल से भागना ठीक नहीं।'' बब्बन डरता—डरता पेड़ से नीचे उतर आया। गब्बर शेर के सामने वह सिर झुकाए खड़ा रहा।

शेर ने कहा, ''बच्चे, स्कूल जाओ और पढ़ो। पढ़—लिखकर तुम समझदार बनोगे। फिर कभी ऐसे भागकर नहीं आना।''

बब्बन कूदता हुआ स्कूल की ओर गया। उस दिन के बाद वह ध्यान लगाकर पढ़ने लगा। थोड़े दिनों के बाद स्कूल की पढ़ाई में वह सबसे अच्छा माना जाने लगा। गब्बर शेर ने उसे बुलाया और कहा, ''शाबाश, बब्बन! तुम बहुत होशियार हो। यह रहा तुम्हारा इनाम।''

और गब्बर शेर ने उसे एक ढफली इनाम में दी।

शब्दार्थ

होशियार	–	चतुर	जवाब	–	उत्तर
अक्ल	–	बुद्धि	चुपचाप	–	बिना आवाज़ के

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1 गब्बर शेर ने बब्बन बंदर को स्कूल से भागने पर क्या समझाया ?

प्र.2 गब्बर शेर ने बब्बन बंदर को शाबाशी क्यों दी ?

प्र.3 स्कूल में कौन–कौन पढ़ने आए ?

प्र.4 बब्बन स्कूल से कब भागा ?

प्र.5 बब्बन स्कूल से क्यों भागा ?

प्र.6 बंदर के बच्चे को स्कूल क्यों नहीं अच्छा लगा होगा ?

प्र.7 गब्बर शेर ने बब्बन बंदर को स्कूल जाने के लिए प्यार से समझाया। यदि वह बब्बन से मार–पीट करता तो क्या होता ?

प्र.8 लल्ली लोमड़ी पढ़ाते समय नाचती, गाती थी। वह ऐसा क्यों करती थी ?

प्र.9 अगर बब्बन बंदर गब्बर शेर के समझाने पर भी स्कूल न जाता तो क्या होता?

प्र.10 शिक्षक नीच दिए वाक्यों की पट्टियाँ बनाएँ और बच्चों से उन्हें कहानी की घटनाओं के क्रम के आधार पर जमाने के लिए कहें।

बब्बन बंदर पेड़ पर चढ़कर छिप गया।
गब्बर शेर ने जंगल में स्कूल खोला।
बब्बन बंदर कक्षा से उठकर भाग गया।
गब्बर ने जानवरों के बच्चों को स्कूल में आने को कहा।
गब्बर शेर जंगल का राजा था।
बब्बन बंदर को पढ़ना अच्छा नहीं लगता था।
गब्बर शेर ने पढ़ाने का काम लल्ली लोमड़ी को सौंपा।
बब्बन बंदर पढ़ाई में सबसे होशियार हो गया।

प्र.11 सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाओ –

क. जंगल का राजा कहलाता है –

अ. लोमड़ी
ब. बंदर
स. शेर

ख. शेर –

अ. भिनभिनाता है

ब. दहाड़ता है

स. रेंकता है

ग. शाबाशी देना का अर्थ है –

अ. गाली देना

ब. उत्साह बढ़ाना

स. आगे बढ़ना

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. पढ़ो और करो।

'समझ' शब्द में 'दार' लगाने से शब्द बना है– 'समझदार'। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में 'दार' लगाकर नए शब्द लिखो और उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

खबर + ... = ...

शान + ... = ...

ईमान + ... = ...

इज्जत + ... = ...

मजे + ... = ...

42N34I

रचना

बब्बन बंदर स्कूल से भागकर शरारत कर रहा था। तुम भी शरारतें करते होगे। किसी शरारत के बारे में लिखो।

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को कहानी पढ़ने के लिए कहें।
- कहानी के विषय पर बच्चों से चर्चा करें।
- कहानी के माध्यम से स्कूल और पढ़ाई के महत्व पर चर्चा करें।
- स्कूलों के प्रति बच्चों का आकर्षण बढ़ाने के उपाय बच्चों से पूछें।
- शब्दों के अंत में शब्दांश जोड़कर नए शब्द बनाने का अभ्यास कराएँ।

पाठ 19

तेल का गिलास

माँ को अपने सभी बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं– चाहे वे बुद्धिमान हों या मूर्ख। शेखचिल्ली बहुत ही मूर्ख लड़का था। लेकिन उसकी माँ उसे बहुत प्यार करती थी। शेखचिल्ली की मूर्खता की एक कहानी इस पाठ में पढ़ेंगे।

शेखचिल्ली इस समय वही कर रहा था, जिसमें उसे सबसे ज्यादा मजा आता था। पतंगबाजी। इस समय वह अपने घर की छत पर खड़ा था और आसमान में लाल और हरी पतंगों के उड़ने का मजा ले रहा था। शेख भी कल्पना करने लगा – काश! मैं इतना छोटा होता कि पतंग पर बैठकर हवा में उड़ पाता.......

''बेटा, तुम कहाँ हो?'' तभी उसकी अम्मी ने छत की ओर देखते हुए कहा।

''बस अभी आया अम्मी,'' शेख ने कहा। अम्मी की आवाज़ से उसे दुख तो हुआ लेकिन उसने अपनी उड़ती पतंग को ज़मीन पर उतारा और फिर दौड़ता हुआ नीचे गया। शेख अपनी माँ का इकलौता बेटा था। पति की मौत के बाद शेख ही उनका एकमात्र सहारा था। इसलिए अम्मी शेख को बहुत प्यार करती थी।

''बेटा, झट से इसमें दो रुपये का सरसों का तेल ले आ,'' उन्होंने कहा और दो रुपये के नोट के साथ–साथ शेख को एक गिलास भी थमा दिया।''तेल ज़रा सावधानी से लाना और जल्दी से वापस आना। रास्ते में सपने नहीं देखने लग जाना। तुम मेरी बात सुन रहे हो न?''

''हाँ, अम्मी,'' शेख ने कहा। ''आप बिल्कुल फिक्र न करें। जब आप फिक्र करती हैं, तब आप कम सुंदर लगती हैं।''

''अच्छा, अब चापलूसी बंद करो। फटाफट बाज़ार से तेल लेकर आओ।''

शेख दौड़ता हुआ बाज़ार गया। वैसे वह आराम से बाज़ार जाता परंतु उसकी अम्मी ने उससे झटपट जाने को कहा था, इसलिए वह दौड़ रहा था।

''लाला जी, अम्मी को दो रुपये का सरसों का तेल चाहिए,'' उसने दुकानदार लाला बेनीराम से कहा। उसके बाद उसने दुकानदार को गिलास और रुपये थमा दिए।

दुकानदार ने एक बड़े पीपे में से दो रुपये का सरसों का तेल नापा और फिर वह उसे गिलास में उड़ेलने लगा। गिलास जल्दी ही पूरा भर गया।

''भाई, इस गिलास में तो बस डेढ़ रुपये का तेल ही आएगा'', उसने शेख से कहा। मैं बाकी तेल का क्या करूँ? क्या तुम्हारे पास और कोई बर्तन है, या फिर मैं तुम्हें आठ आने वापस लौटा दूँ?''

शेख दुविधा में पड़ गया। उसकी अम्मी ने उसे न तो दूसरा गिलास दिया था और न ही पैसे वापिस लाने को कहा था। वह अब क्या करे? तभी उसे एक तरकीब समझ में आई! गिलास में नीचे एक गड्ढा– यानी छोटी–सी कटोरी जैसी जगह थी। बाकी तेल उसमें आसानी से समा जाएगा!

उसने खुशी–खुशी तेल से भरे गिलास को उल्टा किया। सारा तेल बह गया। फिर उसने गिलास के पेंदे में बनी छोटी कटोरी की ओर इशारा किया। ''बाकी तेल यहाँ डाल दो,''उसने कहा।

लाला बेनीराम को शेख की बेवकूफ़ी पर यकीन नहीं हुआ। उन्होंने सिर हिलाते हुए शेख की आज्ञा का पालन किया। शेख ने गिलास को सावधानी से उठाया और फिर वह घर की ओर चला। लोग शेख की मूर्खता पर हँस रहे थे। पर शेख पर उनका कोई असर नहीं पड़ा।

जब वह घर पहुँचा तब उसकी माँ कपड़े धो रही थी। ''बाकी तेल कहाँ है?'' माँ ने गिलास के पेंदे की छोटी कटोरी में रखे तेल को देखकर पूछा।

''यहाँ'', शेख ने गिलास को सीधा करने की कोशिश की। ऐसा करते समय बचा–खुचा तेल भी बह गया।

''बाकी तेल यहाँ था, अम्मीजान, मैं सच कह रहा हूँ। मैंने लाला जी को तेल इसमें डालते हुए देखा था। वह कहाँ चला गया?''

''ज़मीन के अंदर! तुम्हारी बेवकूफी के साथ–साथ!'' उसकी माँ ने गुस्से में कहा। ''क्या तुम्हारी बेवकूफी का कोई अंत भी है?''

शेख गर्दन झुकाए सब सुन रहा था। वह बोला, ''मैंने बिल्कुल वही किया जो आपने मुझसे करने को कहा था। आपने मुझसे इस गिलास में दो रुपये का तेल लाने को कहा था और वही मैंने किया। गिलास छोटा होने पर मुझे क्या करना है, यह आपने मुझे बताया ही नहीं था और अब आप मुझ पर नाराज़ हो रही हैं। आप गुस्सा न करें अम्मी। जब आप गुस्से में होती हैं तब आप......''

''अगर तुम मेरे सामने से तुरंत दफा नहीं हुए तो मैं तुम्हारे चेहरे को खूबसूरत बना दूँगी–'' अम्मी ने पास पड़ी झाड़ू उठाते हुए कहा, '' मैं तुम्हारी बेवकूफियाँ कब तक सहन करती रहूँगी ?''

शेख ने अपनी पतंग लपककर ली और छत पर चढ़ गया। माँ दुखी होकर दुबारा कपड़े धोने में लग गईं। उन्हें अब तेल लाने के लिए खुद बनिए की दुकान पर जाना पड़ेगा, फिर भी उनका मानना था कि मेरा बेटा बहुत ही आज्ञाकारी और प्यारा है।

तभी किसी ने बाहर से दरवाज़ा खटखटाया। लाला बेनीराम का छोटा लड़का तेल की बोतल लिए खड़ा था। ''बुआ जी, यह तेल लाया हूँ,'' उसने कहा। "जब शेख भैया ने तेल से भरे गिलास को उल्टा, तो किस्मत से तेल वापस पीपे में जा गिरा। भैया कहाँ हैं? उन्होंने मुझे पतंग उड़ाना सिखाने का वायदा किया था।"

''वह ऊपर है। बेटा, तुम छत पर चले जाओ,'' शेख की माँ ने तेल ले लिया और उस छोटे लड़के के गाल को थपथपाया। फिर वह मुस्कुराती हुई दुबारा अपने काम में जुट गईं।

शब्दार्थ

पतंगबाजी	–	पतंग उड़ाना	इकलौता	–	अकेला
फिक्र	–	चिन्ता	दफा हो जाना	–	चले जाना
फटाफट	–	जल्दी, तुरंत	आसान	–	सरल

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. शेख की अम्मी ने उसे किस काम के लिए बाजार भेजा था ?

प्र.2. तेल का गिलास भर जाने पर दुकानदार ने शेख से क्या कहा ?
प्र.3. माँ के नाराज होने पर शेख क्या कहता था ?
प्र.4. सरसों का तेल लेकर शेख किस प्रकार घर आया ?
प्र.5 यदि तुम तेल लेने जाते तो बचा हुआ तेल कैसे लाते ?
प्र.6. दुकानदार ने तेल लौटाकर ठीक किया या गलत। कारण बताते हुए उत्तर लिखो।
प्र.7. यदि शेखचिल्ली बचे इस तेल को लेने के लिए गिलास नहीं पलटता तो तेल को घर कैसे और किसमें लेकर जाता ?
प्र.8. तुम घर में किन – किन तेलों का किस किस – किस कार्य के लिए उपयोग करते हो –

खाना पकाने के लिए	सरसों , तिल का तेल, फल्ली का तेल, सोया का तेल
हाथ, पैर, सिर में लगाने के लिए	
चूल्हा जलाने के लिए	
मोटर, बस, चलाने के लिए	
दिया जलाने के लिए	

प्र.9. सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाओ –

1. फटाफट का अर्थ है –
   अ. फटा हुआ ब. जल्दी स. पटाखे की आवाज
2. तेल को मापते हैं –
   अ. दर्जन में ब. लीटर में स. मीटर में
3. ''चिंता'' शब्द का सही अर्थ है –
   अ. मजा ब. गुस्सा स. फिक्र
4. ''नाराज होना'' का सही अर्थ है –
   अ. हँसना ब. गुस्सा होना स. नाचना

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

रचना

नीचे दी गई शब्द पहेली में जंगल से संबंधित छूटे हुए वर्णों को भरो। वर्णों की तलाश के लिए तुम शब्द–संकेतों का उपयोग कर सकते हो।

शब्द–संकेत

हाथी
शेर
मोर
बरगद
अजगर
तोता
मैना
गीदड़
हिरन
खरगोश

शब्द पहेली

1 ब			द	■	2 तो	
■	3	थी	■	4 हि		न
5 ख			श	■	6	र
■	7	र	■	8 गी		ड़
9 अ		ग		■	10 मै	

योग्यता विस्तार

- तेल हमें किराने की दुकान पर मिलता है। नीचे लिखे सामान हमें किन दुकानों पर मिलेंगे –

सामान	कहाँ पर मिलते हैं ?
कॉपियाँ	
दवाइयाँ	
कपड़े	
मोबाइल	

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को बारी–बारी से पढ़ने का अवसर दें।
- बच्चों को पढ़ने में आनेवाली कठिनाइयों को चिह्नित कर दूर करें।
- शेखचिल्ली या लालबुझक्कड़ की कोई कहानी सुनाएँ।
- बच्चों को इसी प्रकार की हास्य की कहानियाँ खोजकर पढ़ने को उत्साहित करें।

436U7T

पाठ 20

अब बतलाओ

सब जानते हैं कि चूहे और बिल्ली में घोर शत्रुता है। बिल्ली को देखते ही चूहा जान बचाकर भागता है। इस कविता में चूहे और बिल्ली की ऐसी ही कहानी है। एक बिल्ली चूहे को पकड़ने के लिए दौड़ती है, चूहा भागता है। आओ देखें, चूहे की जान कैसे बचती है ।

कोने में बिल्ली जो देखी
भागा चूहा आँख बंद कर।
पीछे–पीछे बिल्ली दौड़ी,
तेज चाल से उछल–उछलकर।।

चूहे को कुछ पता नहीं था,
गहरा कूआँ पड़ा सामने।
आँख बंद होने के कारण,
पानी में गिर, लगा काँपने।।

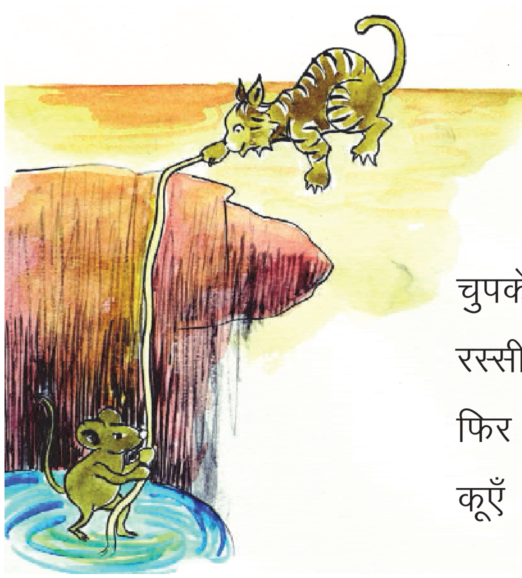

बिल्ली रानी लगी सोचने,
अब मैं कैसे भूख मिटाऊँ।
कौन यत्नकर, मैं चूहे को,
पानी से बाहर ले आऊँ ?

चुपके–चुपके गई कहीं से,
रस्सी एक ढूँढ़कर लाई।
फिर उसने वह जल्दी–जल्दी
कूएँ के अंदर लटकाई।।

चूहे ने वह रस्सी पकड़ी,
और साथ ही ऊपर ताका।
उसी समय बिल्ली रानी ने,
कूएँ में नीचे को झाँका।।

मेरे साथी अब बतलाओ,
चूहा क्या ऊपर आएगा ?
या रस्सी को छोड़ कुएँ के,
पानी में ही मर जाएगा ?

शब्दार्थ

यत्न – प्रयत्न, कोशिश
ताका – चुपके से देखा
झाँका – नीचे झुककर देखा

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. चूहा क्यों भागा था ?

प्र.2. चूहा कुएँ में कैसे गिर पड़ा ?

प्र.3. चूहे को कुएँ में गिरा देखकर बिल्ली क्या सोचने लगी ?

प्र.4. चूहे को कुएँ से निकालने के लिए बिल्ली ने क्या तरकीब सोची ?

प्र.5. चूहे ने रस्सी पकड़ ली। वह ऊपर जाना चाहता था लेकिन तभी उसे ऊपर बिल्ली दिखाई पड़ी। अब बताओ कि चूहा ऊपर जाएगा या वहीं पानी में पड़ा रहेगा ?

प्र.6. कविता में से वे पंक्तियाँ चुनकर लिखो जिनमें –

क. चूहे का कुएँ में गिरना बताया गया है।

ख. चूहे को काँपते हुए बताया गया है।

ग. बिल्ली चूहे को कुएँ से निकालने का प्रयत्न करती है।

घ. बिल्ली के द्वारा चूहे का पीछा करना बताया गया है।

प्र.7. बिल्ली और चूहे का बैर है। इसी प्रकार कुछ अन्य जीवों का आपस में बैर रहता है। इस तरह के जीवों की सही जोड़ियाँ बनाओ :

क	ख
नेवला	हिरन
बाज	मेंढक
शेर	साँप
भेड़िया	चिड़िया
साँप	बकरी

प्र.8. सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाओ –

क. सही शब्द है –

अ. कुआँ

ब. कुँआ

स. कुँआँ

ख. इनमें से ''यत्न'' शब्द का अर्थ है –

अ. रत्न

ब. खुशी

स. कोशिश

ग. इनमें से ''ऊपर'' शब्द का विलोम शब्द है –

अ. नीचे

ब. पीछे

स. आगे

घ. चूहा रहता है –

अ. पेड़ पर

ब. घोंसले में

स. बिल में

हाय री किस्मत

1

घर में एक छोटा
चूहा दौड़–भाग
कर रहा था।

2

इतने में एक बिल्ली
आकर उस पर झपटी।
चूहा एक बोतल
में घुस गया।

3

बिल्ली ने बोतल में
पंजा डालकर उसे पकड़ने
की कोशिश की, लेकिन
पंजा बोतल में नहीं गया।

4

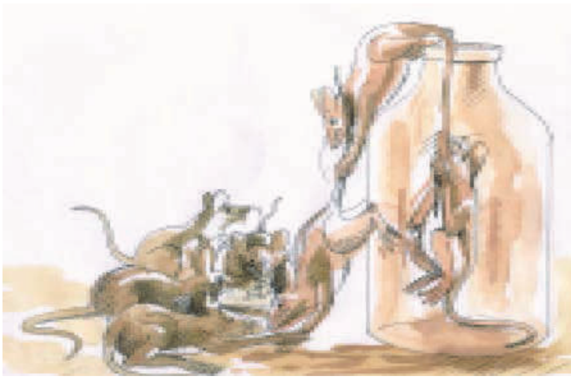

बिल्ली चली गई। तब और चूहे वहाँ आ गए। एक चूहे पर दूसरा, उस पर तीसरा बैठा। उसने पूँछ बोतल में डाल दी।

5

पूँछ के सहारे बोतल में से छोटा चूहा निकल आया। सारे चूहे बिलों में भाग गए।

6

बिल्ली आई। वह साथ में काँटा लाई थी। खाली बोतल देखकर उसने माथा ठोंका। बिल में बैठे चूहे उसे चिढ़ाने लगे

रचना

- तुमने कक्षा 2री में ''चूहों, म्याऊँ सो रही है'' कविता पढ़ी होगी उसे लिखकर अपनी कक्षा की दीवार पर लगाओ।

योग्यता विस्तार

- चूहा बिल्ली का भोजन है, अगर बिल्ली चूहों को खाना छोड़ दे तो क्या होगा ?
- भेड़िए और मेमने के संबंध में ऐसी ही कहानी बनाकर कक्षा में सुनाओ।
- बिल्ली के बारे में तुमने कविता पढ़ी। अब यहाँ उसी के संबंध में यह कविता भी पढ़ो।

मेरी बिल्ली, बड़ी निठल्ली
लेटी रहती, ढीलम–ढिल्ली।

चूहे आते, धूम मचाते,
खूब उड़ाते, खुल्लम खिल्ली।

नहीं झपटती, नहीं पकड़ती,
हरदम करती, टालम टिल्ली।

–कृष्णकांत तैलंग

43PLB4

शिक्षण–संकेत

- कविता को हाव–भाव और लय के साथ पढ़ें और अनुकरण वाचन कराएँ।
- पढ़ने का अवसर सभी विद्यार्थियों को दें।
- विद्यार्थियों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।
- बच्चों को बाल–पत्रिका–बचपन–पढ़ने के लिए दें।
- बचपन बाल–पत्रिका से कविता, कहानी पढ़कर सुनाने के लिए कहें।

पाठ 21

मैत्रीबाग

43YHCR

पाठ परिचय – आगू जमाना म चिट्ठी–पतरी लिखके सोर–संदेस पठोवँय। फेर अब तो मोबाइल आगे हावय। तभो ले चिट्ठी–पतरी लिखे के अलगे महत्तम होथे। काबर के चिट्ठी के आखर म जादा मया झलकथे। ए पाठ म कका ह अपन भतीजा ल चिट्ठी लिखके मैत्रीबाग के वर्णन करे हे। ए पाठ के उद्देश्य लइका मन ल चिट्ठी–पतरी लिखे के तरीका अउ नमूना के जानकारी देना हे।

रिसाली, भिलाई
दिनांक 15/10/12

मयारुक मनीष,

खुशी रह!

मैं हा इहाँ बने मँजा म हावँव। घर म उहाँ सब झन बने–बने होहू, अइसे आशा करत हँव। मँय ह जउन बुता बर भिलाई आए हँव, ओ बुता होए म अभी अउ समे लागही। तैं ह बने पढ़इ–लिखइ करत रहिबे।

शिक्षण संकेत– लइका मन ल डाकघर के बारे म बतावँय। पोस्टकार्ड, लिफाफा, अन्तर्देशीय पत्र के नमूना देखावँय। उनला चिट्ठी लिखे के महत्तम बतावँय। तीर–तखार के कोनो देखे जघा के बरनन चिट्ठी के रूप म करावँय।

मैं हा काली भिलाई के 'मैत्रीबाग' घूमे बर गे रेहेंव। मैत्रीबाग ह सुग्घर देखे के लइक हे। भिलाई अवइया मनखे मन एला देखे बर खचित आथें।

मैत्रीबाग ह भिलाई शहर के भीतरी म बड़े जन बगइचा आय। एहा देखे म जंगल–झाड़ी असन दिखथे। ए बगइचा ल लोहा के बड़े–बड़े जाली म घेर–घेर के कतकोन खँड़ बना दे गेहे। इही खँड़ मन म जानवर मन ल खुल्ला राखे गे हे। जम्मो जानवर मन उहाँ अइसे घूमत रहिथें जानो–मानो सिरतोन के जंगल आय।

मैत्रीबाग के एक हिसा म चिड़ियाघर बनाए गे हे, जिहाँ बघवा, भलुवा, चितवा, हुँड़रा, कोलिहा, कतकोन किसम के हइरना अउ बेंदरा मन अलगे–अलगे रहिथें। पँड़रा बघवा, जेब्रा घलो हे। बड़का–बड़का मंगर मन झील के तीर–तीर म सुते रहिथें। सुग्घर अउ रंग–बिरंग के चिरइ मन ह घलो मन ल मोहि डारथें। मैत्रीबाग ह दुनिया भर के कतकोन जात के चमगेदरी मन के माड़ा बनगे हावय।

अड़बड़ अकन लइका–मन अपन दाई–ददा संग इहाँ आय रहिन। ओ मन खेलत–कूदत अड़बड़ मजा करत रहिन। जेला देखके मोला तुँहर मन के सुरता आगे। मैं ह सोंचत रेहेंव – मोरो लोग–लइका मन कहूँ मोर संग म रहितिन त कतका मँजा आतिस। तोर परीक्षा ल होवन दे, तहाँ

एक पइत जम्मो झन भिलाई घूमे बर आबो अउ मैत्रीबाग ल बने देखबो।

मैत्रीबाग म एक ठिन बड़े जन झील घलो बने हावय। ओमा फरियर पानी भरे हावय। कमल के फूल घलो रिगबिग ले फूले हावय। झील म डोंगा घलो हे। जेमा सब बइठथें अउ मँजा लेवत घूमथें। तुँहर मन संग आबो त हमू मन डोंगा म बइठ के मँजा लेबो।

मैत्रीबाग म एक ठिन सुग्घर फोहारा लगे हे। फोहारा के संग म गाना के धुन बाजत रहिथे। जे ह बड़ नीक लागथे। एला देखे बर बड़ दुरिहा–दुरिहा ले लोगन मन आथे।

एकर छोड़ लइका मन के खेले के अउ झुले के कतको जिनिस हे। लइका मन बर नानुक छुक–छुक रेलगाड़ी घलो चलथे। ये जम्मो जिनिस लइका मन ल बड़ भाथे। जे लइका इहाँ आथे ओहा इहाँ ले जाना नइ चाहय।

भिलाई म बड़ जब्बर इस्पात के कारखाना हे। ये कारखाना ह रूस देश अउ भारत के मितानी के चिन्हारी आय। इही मितानी के सुरता अउ चिन्हारी खातिर ये ''मैत्रीबाग'' ल बनाय गेहे।

ए चिट्ठी म अभी अतकेच। घर म सबो झन ल मोर अड़बड़ मया अउ दुलार।

तोर कका
रमेसर

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने

मैत्री	–	मित्रता
हइरना	–	हिरण
मँजा	–	आनंद
मितानी	–	मित्रता
बुता	–	काम
दुरिहा ले	–	दूर–दूर से
जेला	–	जिसे
अड़बड़	–	बहुत
सुरता	–	याद
जिनिस	–	चीज

प्रश्न अउ अभ्यास

गतिविधि–

कक्षा ल दू दल म बाँट के एक दूसर ले मुँहअखरा प्रश्न पूछँय। प्रश्न अइसन हो सकत हे–

क. ए चिट्ठी ल कोन ह काकर बर लिखिस ?

ख. ए चिट्ठी कहाँ ले लिखे गिस ?

बोध प्रश्न–

प्रश्न 1 खाल्हे म लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

1. मैत्रीबाग कोन शहर म हे ?
2. झील म कइसन पानी भरे रहिथे ?
3. मैत्रीबाग ह देखे म कइसे दिखथे ?
4. भिलाई म का जिनिस के जब्बर कारखाना हे ?
5. फोहारा के संग का बाजत रहिथे ?
6. डोंगा कहाँ चलथे ?

प्रश्न 2. खाली जघा ल भरव

1. मैत्रीबाग .... शहर म हे । (रायपुर/भिलाई)
2. झील के तीर–तीर म.................................. मन सुते रहिथे। (मंगर/बघवा)
3. भिलाई म .... के जब्बर कारखाना हे। (इस्पात/बिजली)
4. .... म फरियर पानी भरे रहिथे। (तरिया/झील)
5. मैत्रीबाग म जनावर मन .... रहिथें। (बँधाय/खुल्ला)

भाषा तत्व अउ व्याकरण

प्रश्न 1 हिन्दी म (अर्थ) मायने लिखव –

जइसे– फरियर = स्वच्छ

कोलिहा = ... ।

चिरइघर = ... ।

डोंगा = ... ।

चमगेदरी = ... ।

फोहारा = ... ।

जिनिस = ... ।

जब्बर = ... ।

मितानी = ... ।

बुता = ... ।

प्रश्न 2. पढ़व अउ गुनव –

1. मैं हा घूमे ल **जाथँव**।
2. ओहा घूमे ल **जाथे**।
3. हमन घूमे ल **जाथन**।
4. ओमन घूमे ल **जाथे**।
5. राजू घूमे ल **जाथे**।
6. मीना घूमे ल **जाथे**।

प्रश्न 3. खाल्हे म लिखाय शब्द मन के वाक्य बनावव –

जइसे – फोहारा

वाक्य – फोहारा म नहाय म बड़ मँजा आथे।

जिनिस, दुरिहा, बगइचा, बड़का, लोग–लइका ।

प्रश्न 4. लिंग बदलव –

जइसे– ममा – मामी

1.	ददा	.... ।	2.	बघवा	.... ।
3.	बड़का	.... ।	4.	कका	.... ।
5.	मितान	.... ।	6.	बेंदरा	.... ।

प्रश्न 5. "सभी" हिन्दी शब्द आय, छत्तीसढ़ी म एकर मायने होथे"जम्मो"। अइसने खाल्हे म लिखाय शब्द मन के मायने छत्तीसगढ़ी म लिखव –

1. मगर .... ।
2. बहुत बड़ा .... ।
3. कितना .... ।
4. फव्वारा .... ।
5. मित्रता .... ।
6. बंदर .... ।
7. चमगादड़ .... ।
8. प्रिय .... ।
9. क्यों .... ।

रचना–

तुँहर गाँव म लगइया मेला–मड़ई के बरनन करत अपन बड़े भइया ल चिट्ठी लिखव।

योग्यता विस्तार–

1. चिरइ–चिरगुन अउ जानवर मन के नाँव लिखके उँखर बोली ल घलो लिखव।
   जइसे– बिलइ – मियाऊँ
2. सुंदर बगइचा के चित्र बनावव।
3. अपन पसंद के फूल के चित्र बनावव।

448DEE

पाठ 22

क्या तुम मेरी अम्मा हो?

क्या तुरंत पैदा हुआ बच्चा अपनी माँ को पहचान सकता है? नहीं। फिर वह अपनी खोई माँ को कैसे ढूँढ़ेगा। इस पाठ में मुर्गी के एक चूजे ने घूम–फिरकर अपनी माँ को ढूँढ़ ही लिया। कैसे? आओ, कहानी पढ़कर जानें।

एक बार एक चूज़ा जब अंडे से निकला तो उसकी माँ वहाँ पर नहीं थी। उसे अपनी माँ कहीं दिखाई नहीं पड़ी। चूज़ा उठकर अपनी माँ को ढूँढ़ने चला। पहले–पहल तो उसके कदम लड़खड़ा रहे थे, पर धीरे–धीरे सँभल गए।

कुछ दूर जाकर चूज़े को एक कुत्ता मिला। कुत्ते को देखकर चूज़े ने कहा, ''क्या तुम मेरी अम्मा हो?'' कुत्ते ने कहा, ''नहीं, मेरे तो चार पैर हैं। तुम्हारी अम्मा के तो सिर्फ दो पैर हैं।''

चूज़ा आगे बढ़ा। एक मोड़ पर जाकर उसे एक लड़का मिला। चूज़े ने कहा, ''तुम्हारे तो दो ही पैर हैं। ज़रूर तुम ही मेरी अम्मा हो।'' लड़के ने कहा, ''नहीं नहीं, मेरे तो पंख ही नहीं हैं। तुम्हारी अम्मा के तो दो पंख हैं।''

चूज़ा आगे बढ़ा। एक पेड़ के पास उसे एक काला कबूतर मिला। चूज़े ने कहा, ''आहा, तुम्हारे तो दो पैर और दो पंख हैं। ज़रूर तुम ही मेरी अम्मा हो।'' पर काले कबूतर ने कहा, ''मेरी चोंच तो स्लेटी रंग की है। तुम्हारी माँ की तो पीली, भूरी चोंच है।''

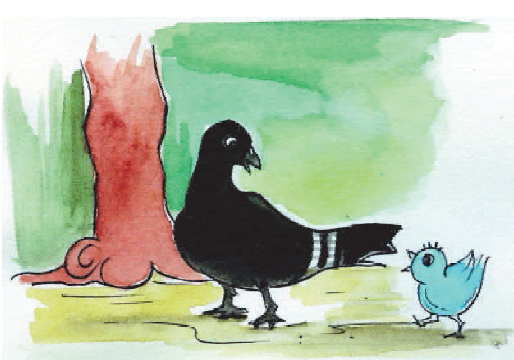

चूज़ा आगे बढ़ा। बेर की एक झाड़ी के पास उसे एक मैना मिली। चूज़े ने कहा, ''तुम ही हो मेरी अम्मा। तुम्हारी पीली भूरी चोंच है, दो पंख हैं, दो पैर हैं। ज़रूर तुम ही हो मेरी अम्मा।'' पर मैना ने

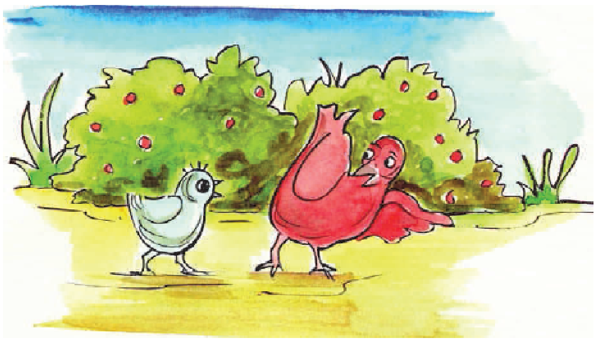

कहा, ''नहीं–नहीं, मैं तो मैना हूँ। तुम्हारी अम्मा मुझसे काफी बड़ी है।''

चूज़ा फिर से आगे बढ़ा। पानी के एक डबरे में उसे दिखी एक बत्तख। चूज़ा बहुत खुश हुआ। चिल्लाया, ''मिल गई। तुम ही हो मेरी अम्मा। तुम मैना से बड़ी हो; तुम्हारी पीली भूरी चोंच है, दो पंख हैं, दो पैर हैं।'' पर बत्तख ने कहा, ''क्वैक–क्वैक, नहीं–नहीं, मैं तो बत्तख हूँ। मैं बोलती हूँ क्वैक–क्वैक और तुम्हारी माँ तो कौं–कौं–कौं बोलती है।''

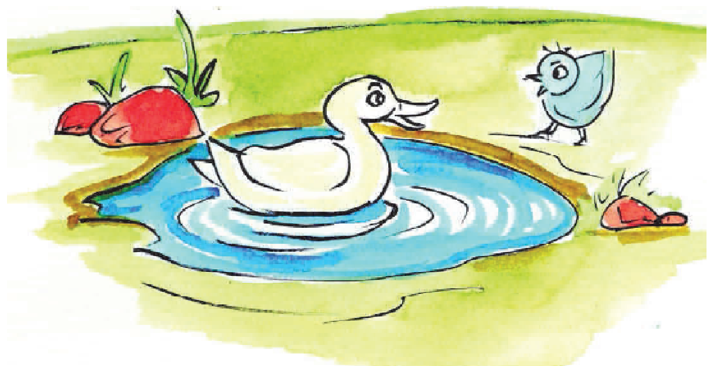

बेचारा चूज़ा बहुत निराश हुआ। उसकी आँखों से आँसू निकलने लगे। तभी आवाज़ सुनाई दी–कौं–कौं–कौं।

चूजे ने देखा कि जो कौं–कौं–कौं की आवाज़ निकाल रही थी, वह मैना से बड़ी थी, उसकी पीली भूरी चोंच थी, दो पंख थे, दो पैर थे।

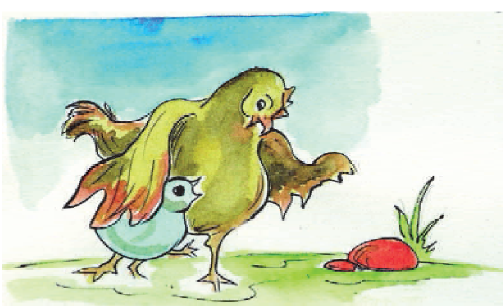

वह दौड़ा–दौड़ा उसके पास गया और बोला, ''तुम्हीं मेरी अम्मा हो ना?''

मुर्गी ने उसे अपने पंखों में समेटते हुए कहा, ''हाँ, मैं ही तुम्हारी अम्मा हूँ।''

शब्दार्थ

चूजा	–	मुर्गी का बच्चा
निराश	–	आशा छोड़ देना
डबरा	–	छोटा गड्ढा

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. चूज़ा अंडे से निकलकर किसे ढूँढ़ने निकला ?

प्र.2. चूजे को क्रम से रास्ते में कौन–कौन मिले ?

प्र.3. कहानी में बत्तख और मैना में क्या समानताएँ बताई गई हैं ?

प्र.4. कहानी में बत्तख और मुर्गी में क्या अंतर बताया गया है ?

प्र.5. अगर चूजा सारस के पास जाता तो सारस उससे क्या कहता ?

प्र.6. चूजा अंडे से निकलता है। पता करो कि और कौन–कौन–से जीव, चूजे की तरह अंडे से निकलते हैं और कौन–से जीव माँ के पेट से बच्चे के रूप में पैदा होते हैं ?

अंडे से निकलने वाले जीव	माँ के पेट से पैदा होने वाले जीव

प्र.7. इस कहानी में कौन–कौन–से जीवों के नाम आए हैं? उनके बारे में तालिका में पूछी गई जानकारी भरो।

क्र.	जीव का नाम	कितने पैर	रंग	पंख	कैसी आवाज़	क्या खाता/खाती है?

प्र.8. प्रश्न और उत्तर पढ़कर लिखो । किसने, किससे कहा ?

प्रश्न – "क्या तुम मेरी अम्मा हो ?"

उत्तर – "नहीं–नहीं, मेरे तो पंख ही नहीं हैं ?"

प्रश्न – "जरूर तुम ही हो मेरी अम्मा।"

उत्तर – "मैं बोलती हूँ क्वैक–क्वैक और तुम्हारी माँ तो कौं–कौं बोलती है।"

प्र.9 इस पाठ में स्लेटी, पीली, भूरी रंगों के नाम आए हैं। अपनी पसंद की चीजों के नाम लिखकर उसके रंगों का नाम भी लिखो।

प्र.10 सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाओ –

1. इसके पंख होते हैं –

अ. मेंढक   ब. कबूतर

स. गिलहरी

2. मुर्गी के बच्चे को कहते हैं –

अ. मेमना   ब. चूजा

स. बछड़ा

3. "निराश" का अर्थ है –

अ. बहुत खुश होना

ब. आशावान होना

स. आशा छोड़ देना

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. शब्दों के इन जोड़ों में से जो सही हों, उनको लिखो।

क– मा / माँ	ख– कुत्ता / कुता
ग– मेना / मैना	घ– पंख / पँख
ङ– आँसू / आंसू	च– चुहा / चूहा
छ– खुश / खूश	ज– निराश / निरास

प्र.2. निम्नलिखित जीव–जंतुओं की बोली की आवाज लिखो।

जैसेः–बिल्ली म्याऊँ–म्याऊँ

कुत्ता ....

मुर्गा ....

बत्तख ....

मधुमक्खी ....

मेंढक ....

कौआ ....

चिड़िया ....

प्र.3. गलत शब्दों को सुधारकर नीचे लिखे वाक्य फिर से लिखो।

एक चूज़ा अपनी अंडा से निकली। उसका माँ उसे दिखाई नहीं दिया। वह उसे ढूँढ़ने निकली। पास ही एक पेड़ के नीचे बैठा उसकी अम्मा मिल गया। चूज़े के अम्मा ने उसे अपने पंख में समेट लिया।

प्र.4. इन शब्दों में से पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्द चुनकर लिखो।

लड़का, माँ, कुत्ता, मैना, कबूतर, बतख, चूजा, अंडा, बेचारा, चोंच, भूरी।

रचना

1. यहाँ छिपकली के बारे में कुछ बातें लिखी हैं। इनकी सहायता से एक अनुच्छेद लिखो।

पीले रंग की, दीवार पर चलती, कड़ी पूँछ हिलाती, कीड़े–मकोड़े खाती।

2. इस वर्ग पहेली में कुछ पक्षियों के नाम दिए गए हैं। उन्हें खोजो और लिखो

शु	ब	क	मो	र
तु	या	बू		आ
र		त	कौ	ब
मु	तो	र		त
र्ग	ता	मै	ना	ख

प्र.4 दिए गए शब्दों की सहायता से चार पंक्तियों की कविता पूरी करों।

नानी, कानी, मानी,

एक थी मैना, बड़ी सयानी

....

....

....

44R5HP

योग्यता विस्तार

- सोचो, यदि चूजे की जगह पर तुम होते तो अपनी माँ को कैसे खोजते ?

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को कहानी सुनाएँ।
- बच्चों से विभिन्न जीव–जंतुओं के नाम पूछें।
- चौपाए और दोपाए जीव–जंतुओं की अलग–अलग सूची बनवाएँ।
- मेला या भीड़–भाड़ में बच्चे कभी–कभी अपने माता–पिता से बिछुड़ जाते हैं। उस समय उन्हें किससे सहायता लेनी चाहिए, यह पूछें और समझाएँ।
- विभिन्न रंगों के संबंध में भी कक्षा में चर्चा करें और उदाहरण देकर रंगों को समझाएँ।

पाठ 23

कविता का कमाल

कभी—कभी ऐसा संयोग बनता है कि जो काम हाथ में लिया, थोड़े—से प्रयत्न से पूरा हो जाता है। इस पाठ की कहानी एक ऐसे लड़के की कहानी है जो निठल्ला था और माँ पर बोझ बनकर रहता था। माँ ने उसे धन कमाकर लाने के लिए घर से बाहर कर दिया था। लड़के ने अपनी थोड़ी सूझ—बूझ से काम लिया, जिसके फलस्वरूप उसे अपार धन—सम्पत्ति मिल गई। कैसे ? यह कहानी में पढ़ें।

बहुत पुरानी बात है। मदन नाम का एक लड़का अपनी माँ के साथ गाँव में रहता था। उसके पिता जी नहीं थे। माँ—बेटा बहुत गरीब थे। उनके पास कमाई का कोई साधन नहीं था। फिर भी मदन दिनभर खेल—कूद में ही समय बिता देता था।

परेशान होकर एक दिन उसकी माँ ने कहा, —'' अब मैं तुझे बिठाकर नहीं खिला सकती। जा, कुछ पैसे कमाकर ला।''

मदन घर से निकल पड़ा। वह गहरी सोच में डूबा था कि कैसे पैसे कमाए? अचानक उसे ढिंढोरा पीटने की आवाज़ सुनाई दी।

''सुनो, सुनो, सुनो! राजदरबार में कवि—सम्मेलन हो रहा है। सबसे अच्छी कविता सुनानेवाले को सौ अशर्फियाँ इनाम में मिलेंगी।'' मदन चौकन्ना हो गया। 'सौ अशर्फियाँ, यह तो बना—बनाया मौका था। वह सीधे राजमहल की ओर चल पड़ा। चलते—चलते वह सोच रहा था कि उसने कभी कविता तो रची न थी। क्या सुनाएगा वहाँ पहुँचकर? उसने सोचा कि रास्ते में कुछ—न—कुछ सूझ ही जाएगा। थोड़ी दूर पहुँचा तो एक कुत्ता दिखाई दिया। कुत्ता पंजों से जमीन खोदने में लगा था। मदन ने अपनी कविता की एक पंक्ति सोच ली।

''खुदुर–खुदुर का खोदत है?'' यह पंक्ति उसे इतनी पसंद आई कि उसे दोहराते हुए वह एक तालाब के पास पहुँचा। वहाँ एक भैंस पानी पी रही थी।

मदन बोल पड़ा, ''सुरुर–सुरुर का पीबत है?'' मुस्कुराते हुए वह आगे बढ़ा। इतने में उसे पेड़ की एक डाल पर चिड़िया बैठी दिखाई पड़ी। पत्तियों के बीच से वह सिर निकालकर इधर–उधर झाँक रही थी। उसे देखते ही मदन के मुँह से निकल पड़ा, ''ताक–झाँक का खोजत है?'' तीनों पंक्तियों को रटते हुए वह चलता गया। रटते–रटते उसे अपने आप एक और पंक्ति सूझ गई– ''हम जानत हैं, का ढूँढ़त है!''

अब तो सचमुच उसके मन में लड्डू फूटने लगे। कितने आराम से वह कविता रचता चला जा रहा था। तभी 'सर्र' की आवाज सुनाई पड़ी। मदन ने चौंककर देखा कि एक साँप रेंगता जा रहा था। उसने आगे की पंक्तियाँ भी तैयार कर लीं, ''सरक, सरक कहँ भागत है? जानत हो, हम देखत हैं? हमसे ना बच सकत है!'' अब केवल एक पंक्ति बाकी रह गई थी। पर मदन निश्चिंत था कि वह पंक्ति भी चलते–चलते सूझ जाएगी।

राजधानी पहुँचा तो राजमहल का रास्ता ढूँढ़ने की समस्या खड़ी हुई। पास में खड़े एक आदमी से मदन ने पूछा, ''भैया, आपको राजमहल का रास्ता मालूम है?''

''क्यों नहीं'', उस आदमी ने उत्तर दिया। ''मुझे नहीं तो और किसे मालूम होगा?''

मदन ने सोचा कि अवश्य यह राजमहल का ही कोई कर्मचारी होगा। उसने पूछा, ''आप कौन हैं, साहब?''

उत्तर मिला, ''धन्नू शाह।''

मदन के दिमाग में एकाएक बिजली कौंधी। 'धन्नू शाह, भाई धन्नू शाह!' क्या बढ़िया शब्द थे। उसने इन्हीं शब्दों से अपनी कविता की अंतिम पंक्ति बना डाली।

वह खुशी–खुशी राजमहल पहुँचा। अंदर घुसने से पहले उसने अपनी कविता फिर दोहराई–

खुदुर–खुदुर का खोदत है?
सुरुर–सुरुर का पीबत है?
ताक–झाँक का खोजत है?
हम जानत हैं, का ढूँढ़त है!
सरक–सरक कहँ भागत है?
जानत हो, हम देखत हैं?
हमसे ना बच सकत है!
धन्नू शाह, भाई धन्नू शाह!

राजमहल में कवि–सम्मेलन शुरू हो चुका था। एक–एक करके कवि अपनी कविता सुना रहे थे।

बारी आने पर मदन ने भी अपनी कविता सुनाई। सुननेवाले एक–दूसरे का मुँह ताकने लगे। क्या अर्थ था इस विचित्र कविता का? पर किसी ने भी यह नहीं दिखाया कि उसे कविता समझ में नहीं आई थी। राजा के सामने वे मूर्ख नहीं दिखना चाहते थे।

उस रात राजा साहब की भी नींद गायब हो गई। मदन की कविता उनको सता रही थी। छज्जे पर खड़े होकर वे कविता दोहराने लगे। सोचा कि शायद इसी तरह इस पहेली को बूझ पाए। संयोग से उसी समय कुछ चोर राजा के खजाने में सेंध लगा रहे थे। उनमें से एक चोर वही धन्नू शाह था, जिसने आज दिन में मदन को राजमहल का रास्ता बताया था।

ऊँची आवाज़ में राजा साहब बोलते जा रहे थे, ''खुदुर–खुदुर का खोदत है?''

चोरों ने सुना तो वे चौंककर रुक गए। क्या किसी ने देख लिया था उन्हें ? डर के मारे चोरों का गला सूखने लगा। अपने साथ जमीन को मुलायम करने के लिए वे पानी लाए थे। धन्नू शाह ने उठकर एक–आध घूँट निगला।

तभी राजा साहब बोले, ''सुरुर–सुरुर का पीबत है?''

चोरों को काटो तो खून नहीं। सहमकर इधर–उधर झाँकने लगे कि कोई पकड़ने तो नहीं आ रहा है?

राजा ने फिर कहा, ''ताक–झाँक का खोजत है? हम जानत हैं, का ढूँढ़त है।''

यह सुनकर चोरों ने सोचा कि किसी तरह जान बचाकर भागा जाए। वे दबे पाँव बाहर सरकने लगे। पर राजा की फिर आवाज़ आई, ''सरक–सरक कहँ भागत है? जानत हो, हम देखत हैं? हमसे ना बच सकत है! धन्नू शाह, भाई धन्नू शाह!''

धन्नू शाह की तो साँस वहीं रुक गई। उसने सोचा, 'अब कोई चारा नहीं। बस, राजा साहब से दया की भीख माँग सकता हूँ।' दौड़कर उसने राजा साहब के पैर पकड़ लिए और विनती करने लगा, ''क्षमा कर दीजिए महाराज! अब मैं भूलकर भी ऐसा काम नहीं करूँगा। वैसे हमने कुछ लिया ही नहीं। आपका खजाना सही–सलामत है।''

राजा साहब हक्के–बक्के रह गए। उन्होंने तुरंत सिपाहियों को बुलाकर छानबीन करवाई तो पता चला कि उनका खजाना लुटते–लुटते बचा था।

मदन को बुलवाया गया। राजा ने शाबाशी देकर कहा, ''यह सब तुम्हारी कविता का कमाल है।'' मदन को सोने–चाँदी से मालामाल कर दिया गया। वह खुशी–खुशी अपने गाँव लौट आया। अब उसके पास अपने और अपनी माँ के खाने–पीने के लिए पर्याप्त धन था।

शब्दार्थ

अशर्फियाँ	–	सोने के सिक्के
समस्या	–	कठिनाई, उलझन
विचित्र	–	अनोखा, अद्भुत, निराला

निश्चिन्त	–	बिना चिंता के
मालामाल	–	धनवान
पर्याप्त	–	भरपूर

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. कुत्ते को जमीन खोदते देखकर मदन ने कविता की क्या पंक्ति सोची ?

प्र.2. 'ताक–झाँक का खोजत है ?' मदन ने यह किसके लिए कहा ?

प्र.3. धन्नू शाह कौन था ? उसने राजा से माफी क्यों माँगी ?

प्र.4. राजा ने मदन को इनाम क्यों दिया ?

प्र.5. किसने, क्यों कहा–

क्र.	कथन	किसने कहा?	क्यों कहा?
क	''अब मैं तुम्हे बिठाकर नहीं खिला सकती।''	माँ ने कहा	क्योंकि मदन कोई काम नहीं करता था और उसके पास आमदनी का साधन नहीं था।
ख	''मुझे नहीं तो किसको राजमहल का रास्ता मालूम होगा।''		
ग	''क्षमा कर दीजिए महाराज! अब मैं भूलकर भी ऐसा काम नहीं करूँगा।''		
घ	''यह सब तुम्हारी कविता का कमाल है।''		

प्र.6 प्रत्येक खंड से शब्द लेकर पूरे वाक्य बनाओ और लिखो।

मदन	अपनी	राजमहल	गया।
वह	को	स्वभाव का	सुनाई।
मदन ने	मस्त	कविता	पहुँचा।
मदन	खुशी–खुशी	बुलवाया	था।

प्र.7 सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाओ –

1. कविता लिखने वाले को कहते हैं –

अ. लेखक

ब. कवि

स. कहानीकार

2. ''बाहर'' का विलोम शब्द है –

अ. आगे

ब. पीछे

स. अंदर

3. ''मुलायम'' शब्द का अर्थ है –

अ. गरम

ब. नरम

स. कठोर

4. ''मालामाल'' का अर्थ है –

अ. माल लादना

ब. गरीब

स. धनवान

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. खाली स्थान में उचित मुहावरा भरो –

दबे पाँव भागना, मुँह ताकना, ताक–झाँक करना, जान बचाकर भागना

1. डेविड ने अपनी टीम की ओर से इतना अच्छा खेला कि विरोधी टीम के लोग . . . . रह गये।

2. बिल्ली को आता देखकर चूहा अपनी . . . . भागा।

3. परीक्षा में कई बच्चे . . . . करते हैं।

4. बिल्ली दूध पीकर . . . . गयी।

प्र.2. 'रटते–रटते उसे अपने आप एक और पंक्ति सूझ गई।' इस वाक्य में 'रटते–रटते' का प्रयोग हुआ है। इसी तरह निम्नलिखित का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

चलते–चलते, हँसते–हँसते, पढ़ते–पढ़ते, दौड़ते–दौड़ते।

प्र.3. क्या कहोगे ?

कविता लिखने वाला	कवि
पहरा देने वाला	. . . .
खेती करने वाला	. . . .
मरीजों की देखभाल करने वाला	. . . .
मरीजों की इलाज करने वाला	. . . .
कहानी लिखने वाला	. . . .

प्र.4. नीचे दिए गए संयुक्त अक्षरों से बने अधूरे शब्दों को पूरा लिखो।

—— ब्द, —— स्ता, ——त्ता, ——क्ति, ——ड्डू ——िंचत

रचना

'कटहल' शब्द में चार वर्ण हैं –

'क', 'ट', 'ह', 'ल'

इन चार वर्णों से जितने अधिक–से–अधिक शब्द बना सकते हो, बनाओ; जैसे 'कल'।

योग्यता–विस्तार

कक्षा में शब्द–रेल खेल का आयोजन करो। उदाहरण के लिए पहले बच्चे ने शब्द बोला साँप, दूसरा बच्चा 'प' से शब्द बोले, पतंग। तीसरा 'ग' से बोले 'गरम' । इसी तरह शब्द–रेल बनाओ। यह खेल श्यामपट पर शब्द लिखकर खेलो।

साँप	पतंग	गरम								

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को समूह में बैठकर वाचन करने के लिए कहें।
- पढ़ने में हुईं त्रुटियों का संशोधन बच्चों से कराएँ।
- बच्चों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।
- पाठ पढ़ते समय विराम चिह्नों (, ।, ? आदि) का विशेष ध्यान रखें।
- कविता की दो पंक्तियाँ देकर अन्य दो पंक्तियाँ बनवाएँ।

4CZSDH

4D9NF5

पाठ 24

बालसभा

विद्यालयों में पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ खेल–कूद, व्यायाम और बालसभा जैसे मनोरंजक कार्यक्रम भी आयोजित होते रहते हैं। बालसभा के द्वारा जहाँ बच्चों का मनोरंजन होता है, वहीं उन्हें अपनी कला और क्रियाकलापों को प्रकट करने का सुनहरा अवसर भी मिलता है। आमतौर पर बालसभा का आयोजन सप्ताह में एक बार शनिवार को किया जाता है। ऐसे ही एक आयोजन का वर्णन इस पाठ में पढ़ो।

आज शनिवार है। हमारे विद्यालय में शनिवार को खूब मज़ा आता है। इस दिन दोपहर की छुट्टी के बाद बालसभा होती है। बालसभा में बच्चे गीत, कहानियाँ, पहेलियाँ, चुटकुले, गप्प, पशु–पक्षियों की बोलियाँ सुनाते हैं। दो घंटे तक बालसभा में खूब हा–हा, ही–ही होती रहती है।

आज भी बच्चों में काफी उत्साह है। वे घर से ही सुनाने का मसाला तैयार करके आए हैं। कोई अपने साथी को वह चुटकुला सुना रहा है, जो वह बाल–सभा में सुनाएगा। कोई अपनी सहेली को गीत गुनगुनाकर सुना रही है। तभी घंटी बजी और सारे बच्चे अपनी–अपनी कक्षाओं से निकलकर हॉल में आ बैठे। थोड़ी देर में बड़ी बहिन जी आईं और उन्होंने उषा से कहा– ''उषा, जो बच्चे कार्यक्रम में भाग लेना चाहते हैं, उनके नाम लिख लो।''

अब तो उषा के पास बच्चों की भीड़ लग गई। उषा ने सबके नाम लिखे। नाम के आगे यह भी लिखा कि वे क्या सुनाएँगे या सुनाएँगी।

थोड़ी देर में बाल–सभा शुरू हुई। बड़ी बहिन जी तथा अन्य शिक्षकगण ऊपर मंच पर बैठे थे। उषा एक–एक बच्चे का नाम लेकर पुकार रही थी। उसने कहा – ''सबसे पहले रवि अपनी छोटी–सी कविता सुनाएगा''। रवि ने अपनी कविता सुनाई।

घंटा, बोला, चलो मदरसे

निकलो–निकलो–निकलो घर से

घंटा बोला, चलो मदरसे

जल्दी निकलो अपने घर से

कपड़े पहनो, बस्ता ले लो

जल्दी निकलो अपने घर से।

जो तुम देर करोगे भइया

तो फिर होगी धम्मक–धइया।

कविता सुनकर सबने तालियाँ बजाईं।

अब उषा ने संगीता को पहेलियाँ सुनाने के लिए बुलाया। संगीता ने तीन पहेलियाँ बूझीं। पहले उसने यह पहेली सुनाई–

'' प्रथम कटे तो करती तंग,

तरह–तरह के मेरे रंग।

तीन अक्षर का मेरा नाम

आसमान में लड़ती जंग।।''

रमेश ने ज़ोर से चिल्लाकर इसका उत्तर बताया, 'पतंग'।

संगीता ने कहा सही, फिर उसने दूसरी पहेली सुनाई–

मेरी नानी कोयला खाती

मैं खाती हूँ बिजली।

मम्मी मेरी डीज़ल पीती

यही कहानी पिछली।।

अब की बारी बच्चों से कोई जवाब नहीं आया।

संगीता ने इस पहेली का उत्तर बताया, ''रेल का इंजन।''

तीसरी पहेली थी–

गाना गाकर मारे तीर।

संगीता ने पहेली का उत्तर पूछा।

किसी ने कहा 'रेडियो', किसी ने कहा 'हवा'; अंत में सही उत्तर सोनाली ने दिया, 'मच्छर'। सभी ने तालियाँ बजाईं।

अब उषा ने मन्नू को चुटकुला सुनाने के लिए बुलाया।

मन्नू ने एक मज़ेदार चुटकुला सुनाया।

दीपू – पिता जी, आपने एक सप्ताह पहले जो गुलाब की कलम लगाई थी उसमें अभी तक जड़ें नहीं निकली हैं।

पिता जी – तुम्हें कैसे पता?

दीपू – क्योंकि मैं उसे रोज़ उखाड़कर देखता हूँ।

अब किशुन की बारी थी।

किशुन ने चुटकुला सुनाया– तीन गप्पी गप्प सुना रहे थे।

पहले ने कहा– ''मेरे दादा जी ने पानी में डुबकी लगाई तो पंद्रह मिनट के बाद ऊपर आए।''

दूसरे ने कहा– ''ये तो कुछ भी नहीं, मेरे दादा जी ने नदी के पानी में डुबकी लगाई तो एक घंटे के बाद ऊपर आए।''

तीसरे ने कहा– ''अरे, मेरे दादा जी ने पिछले बरस नदी में डुबकी लगाई तो आज तक ऊपर नहीं आए।''

चुटकुला सुनकर सभी बच्चें हो–हो कर हँस पड़े और उन्होंने तालियाँ बजाईं।

अब उषा ने शिवानी को गप्प पर आधारित समाचार सुनाने के लिए बुलाया।

शिवानी ने समाचार सुनाया–

''कल रात राजधानी में ओलों की जबर्दस्त बारिश हुई। सरकार ने सभी गंजों को घर में रहने की हिदायत दी।''

''सरगुजा क्षेत्र में हाथियों के बढ़ते आतंक को देखते हुए सरकार ने चार मच्छरों को वहाँ भेजा है। जैसे ही गड़बड़ी फैलानेवाले हाथी नज़र आएँगे, ये मच्छर उन्हें उठाकर मैत्रीबाग के चिड़ियाघर में ले आएँगे।''

''छत्तीसगढ़ में तीन ठग गिरफ्तार किए गए हैं। पता चला है कि इन ठगों ने किसी व्यक्ति को सस्ते दामों में आगरे का ताजमहल बेच दिया था।''

गप्प समाचार सुनकर सब बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े।

बालसभा का समय समाप्त हो गया था। बड़ी बहिन जी ने कहा,'' सब बच्चों ने अच्छे–अच्छे चुटकुले, पहेलियाँ, गप्प सुनाईं। सबको बहुत–बहुत बधाई। अगले शनिवार को फिर बालसभा होगी। बच्चे अच्छी तैयारी करके आएँ।''

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को प्रेरित करें कि इसी तरह की पहेलियाँ एकत्रित करके कक्षा में आपस में एक–दूसरे से बूझें।
- अन्य चुटकुले सुनाएँ व बालकों से सुनें।
- छोटी–छोटी कविता का वाचन करें व बच्चों से भी सुनें।
- अधूरी कविता पूरी करवाएँ।

4DIJGS

पुनरावृत्ति

2NLZE2

1. नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़ों और सही जवाब पर गोला लगाओ –

डॉक्टर शर्मा पार्क में बैंच पर बैठे हैं। उन्होंने रमा को रोते हुए देखा। उन्होंने पूछा, ''तुम क्यों रो रही हो?

रमा– अंकल जी, मेरे घुटने पर चोट लगी है। मैं खड़ी नहीं हो सकती।

डॉक्टर शर्मा – "मत रोओ। मैं तुम्हें अस्पताल ले जाऊँगा।"

अस्पताल में नर्स ने उसका जख्म साफ किया और दवाई लगा दी। वह रमा को देखकर मुस्कराई और पूछा, "क्या अब तुम्हें ठीक लग रहा है?"

रमा– "हाँ, मैं ठीक हूँ। धन्यवाद।"

डॉक्टर रमा को घर वापस ले जाता है।

1. रमा क्यों रो रही है?
   (क) वह अकेली है।
   (ख) वह डरी हुई है।
   (ग) उसे चोट लगी है।
2. डॉक्टर शर्मा ने क्या किया?
   (क) वह उसे पार्क में ले गया।
   (ख) वह उसे अस्पताल ले गया।
   (ग) उसने उसे दवाई दी।
3. रमा ने नर्स को धन्यवाद क्यों दिया?
   (क) उसने उसे ठीक कर दिया।
   (ख) वह उसे देखकर मुस्कराई।
   (ग) उसने उसे घर छोड़ा।
4. रमा को कहाँ दर्द था?
   (क) सिर में
   (ख) हाथ में
   (ग) पैर में
5. अंत में डॉक्टर रमा को ले जाता है।
   (क) घर में
   (ख) अस्पताल में
   (ग) पार्क में

2. यह रोहित के स्कूल की समय सारिणी (टाइम टेबिल) है। इसे देखकर निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर की क्रम संख्या पर गोला लगाओ –

घंटे / दिन	1	2	3	4	5	6	7
सोमवार	अंग्रेजी	हिन्दी	हिन्दी	विज्ञान	कला	गणित	कार्य अनुभव
मंगलवार	हिन्दी	अंग्रेजी	सामाजिक अध्ययन	कला	गणित	विज्ञान	शारीरिक शिक्षा
बुधवार	सामाजिक अध्ययन	अंग्रेजी	हिन्दी	शारीरिक शिक्षा	विज्ञान	गणित	पुस्तकालय
बृहस्पतिवार	विज्ञान	गणित	हिन्दी	कार्य अनुभव	अंग्रेजी	सामाजिक अध्ययन	शारीरिक शिक्षा
शुक्रवार	सामाजिक अध्ययन	गणित	विज्ञान	अंग्रेजी	कला	हिन्दी	शारीरिक शिक्षा

1. बुधवार को छठे घंटे में रोहित क्या पढ़ता है?
   (क) गणित
   (ख) विज्ञान
   (ग) सामाजिक अध्ययन
   (घ) हिंदी

2. रोहित पुस्तकालय किस दिन जाता है?
   (क) सोमवार
   (ख) मंगलवार
   (ग) बुधवार
   (घ) बृहस्पतिवार

3. रोहित कौन–सा विषय दो घंटे लगातार पढ़ता है?
   (क) अंग्रेजी
   (ख) विज्ञान
   (ग) गणित
   (घ) हिंदी

4. पूरे सप्ताह में रोहित कौन–सा विषय ज्यादा पढ़ता है?

(क) हिंदी

(ख) अंग्रेजी

(ग) गणित

(घ) सामाजिक अध्ययन

5. पूरे सप्ताह में रोहित की कक्षा के लिए कला के कितने घंटे होते है?

(क) दो

(ख) तीन

(ग) चार

(घ) पाँच

3. नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखो, उसके बाद खाली स्थानों को उचित शब्दों से भरो–

1. चित्र में पाँच .... हैं।
2. वे .... में खेल रहे हैं।
3. एक लड़की ....के पीछे छुप रही है।
4. दो लड़के बॉल के साथ ....रहे हैं।
5. बच्चे .... महसूस कर रहे हैं।

4. पढ़ो और दिए हुए प्रश्नों के सही उत्तर पर गोला लगाओ –

1. सबसे सस्ता फल कौन–सा है?
   (क) सेब
   (ख) संतरा
   (ग) केला

2. सबसे महँगी सब्जी कौन–सी है?
   (क) गोभी
   (ख) मूली
   (ग) आलू

3. किस फल की कीमत सेब से अधिक है?
   (क) केला
   (ख) अंगूर
   (ग) संतरा

4. कौन–सी दो चीजों की कीमत एक–सी है?
   (क) संतरा और केला
   (ख) गोभी और संतरा
   (ग) मूली और आलू

5. सुपर बाजार सप्ताह में कितने दिन खुला है?
   (क) पाँच दिन
   (ख) छः दिन
   (ग) सात दिन

संस्कृत

क्रीडानां नामानि

संस्कृत		हिन्दी	चित्र
1) क्षेपकन्दुकः 2NVVFP	–	व्हालीवॉल	
2) पादकन्दुकः	–	फुटबॉल	
3) यष्टिकंदुकः	–	हाकी	
4) शिक्यकन्दुकः	–	बॉस्केटबॉल	
5) पतंगः	–	पतंग	

संस्कृत		हिन्दी	चित्र
6) वल्लकन्दुकः (बीटा)	–	क्रिकेट	
7) कबड्डी	–	कबड्डी	
8) फुगडी (स्फूर्तिकरी)	–	फुगड़ी	
9) तरणम्	–	तैराकी	
10) लम्बकूर्दनम्	–	लम्बीकूद	
11) उच्चकूर्दनम्	–	उँचीकूद	

पक्षिणां नामानि

संस्कृत		हिंदी	चित्र
1) चटकः	–	गौरैया	
2) कपोतः	–	कबूतर	
3) उलूकः	–	उल्लू	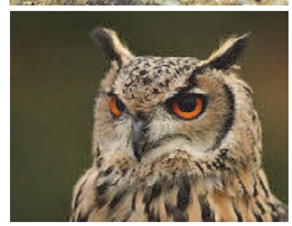
4) गृध्रः	–	गिद्ध	
5) श्येनः	–	बाज	
6) बकः	–	बगुला	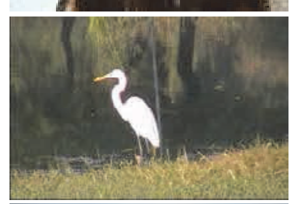
7) हंसः	–	हंस	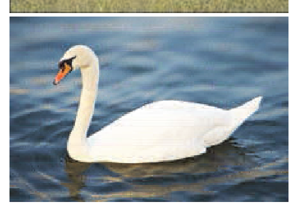
8) मयूरः	–	मोर	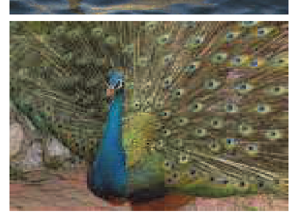

31A4W9

	संस्कृत		हिंदी	चित्र
9)	चातकः	–	चातक	
10)	कुक्कुटः	–	मुर्गा	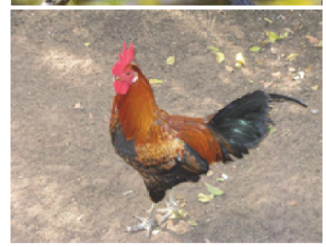
11)	कोकिलः / कोकिला	–	कोयल	
12)	शुकः	–	तोता	
13)	काकः	–	कौआ	
14)	दार्वाघाटः	–	कठफोड़वा	
15)	कादम्बः (बर्तकः)	–	बतख	

फलानां शाकानां च नामानि

संस्कृत		हिंदी	चित्र
1) कदलीफलम्	–	केला	
2) सेवम्	–	सेव	
3) दाडिमम्	–	अनार	
4) नारङ्गम्	–	नारंगी (संतरा)	
5) पिपीतकम् (मधुकर्कटी)	–	पपीता	
6) अनानसम्	–	अनानास	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
7) द्राक्षा	–	अंगूर	
8) आम्रम्	–	आम	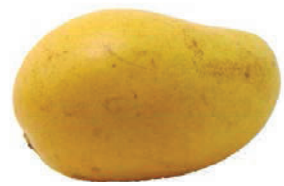
9) जम्बू (जम्बूफलम्)	–	जामुन	
10) बीजपूरम् (अमरूदः)	–	बिही, अमरूद	
11) इक्षुः	–	गन्ना	
12) अम्लिका	–	इमली	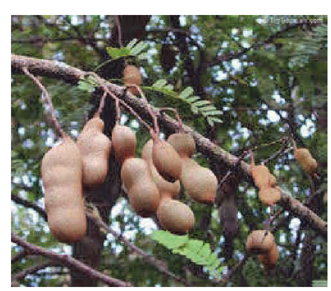

संस्कृत		हिंदी	चित्र
13) आमलकम्	–	आँवला	
14) नारिकेलम्	–	नारियल	
15) निम्बुकम्	–	नीबू	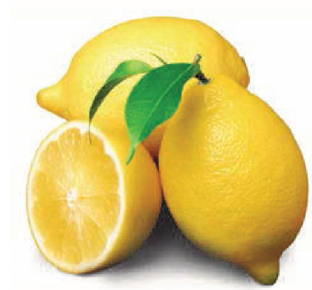
16) तोयफलम् (खर्बजम्)	–	खरबूज	
17) कालिन्दम्	–	कलिंदर	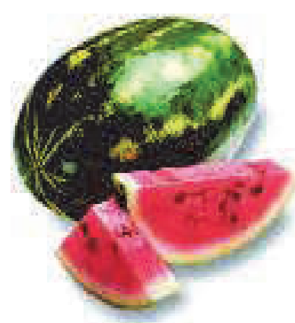

शाकानि

संस्कृत		हिंदी	चित्र
1) अलाबुः	–	लौकी 31SVZJ	
2) पत्रगोभी (हरितम्)	–	पत्तागोभी	
3) फुल्लगोभी (गोजिव्हा)	–	फूलगोभी	
4) मूलकः	–	मूली	
5) आलुः (आलुकम्)	–	आलू	
6) वृन्ताकम् (भण्टाकी)	–	भटा (बैगन)	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
7) शक्रकन्दः	–	शकरकंद	
8) कारवेल्लम्	–	करेला	
9) कुष्माण्डः	–	कुम्हड़ा	
10) कर्कटिका	–	ककड़ी	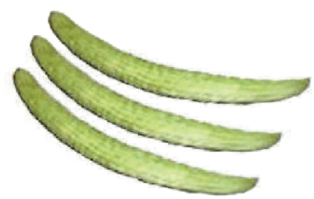
11) शकलादः (शदः)	–	सलाद	
12) पणसम्	–	कटहल	
13) कोषातकी	–	तरोई	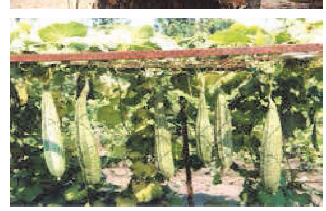
14) पलाण्डुः	–	प्याज	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
15) लशुनम्	–	लहसुन	
16) मरीचम्	–	मिर्च	
17) गृञ्जनकम	–	गाजर	
18) आर्द्रकम्	–	अदरक	
19) हरिद्रा	–	हल्दी	
20) भिण्डकः	–	भिण्डी	
21 त्रापुसम् (चर्भटिः)	–	खीरा	

कीटानां नामानि

संस्कृत		हिंदी	चित्र
1) तैलपः 322S27	–	तिलचट्टा (कॉकरोच)	
2) मधुमक्षिका	–	मधुमक्खी	
3) मक्षिका	–	मक्खी	
4) मशकः	–	मच्छर	
5) पिपीलिका	–	चींटी	
6) लूतः	–	मकड़ी	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
7) वृश्चिकः	–	बिच्छू	
8) मकरः	–	मगर	
9) मीनः (मत्स्यः)	–	मछली	
10) गृहगोधिका	–	छिपकली	
11) कुलीरः	–	केकड़ा	
12) शतपदी (कर्णजलौका)	–	कनखजूर	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
13) तित्तिलिका	–	तितली	
14) मत्कुणः	–	खटमल	
15) भ्रमरः	–	भौंरा	
16) यूकः	–	जूँ	
17) वरटा	–	ततैया (दतैया)	
18) सरटः (गिरगिटः)	–	गिरगिट	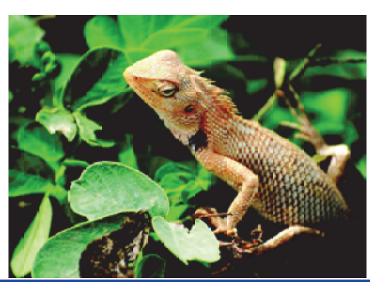

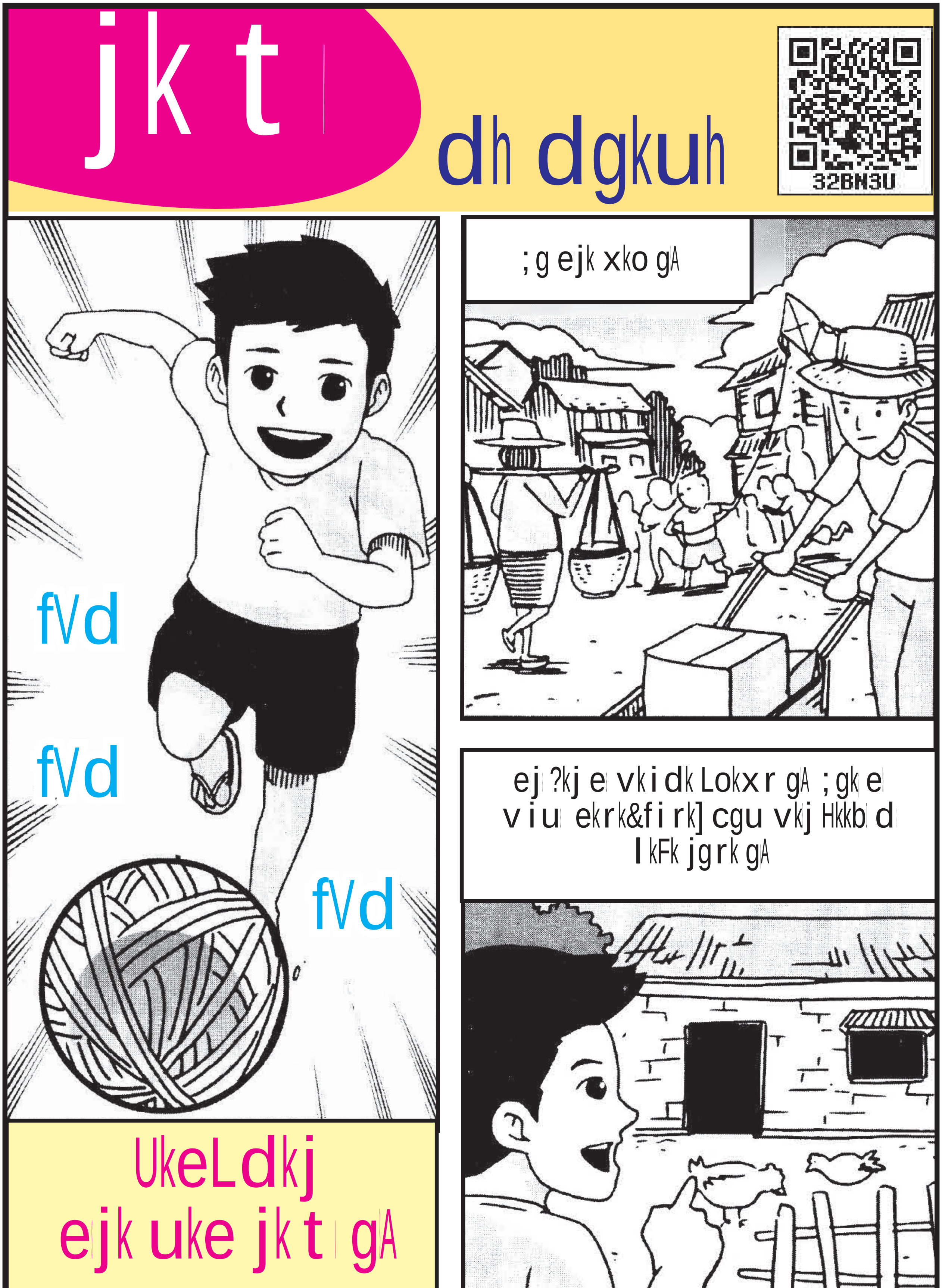

CEOP, BCCT, BRITISH COUNCIL द्वारा प्रकाशित कार्टून पुस्तिका Tam's tales का हिंदी रूपान्तरण.

Ekk] e> ;gk jguk vPNk
yxrk gSA gekjk ;g NksVk
lk ?kj g yfdu ge lHkh
cgr [k'k gSA

e>e jx Hkjk

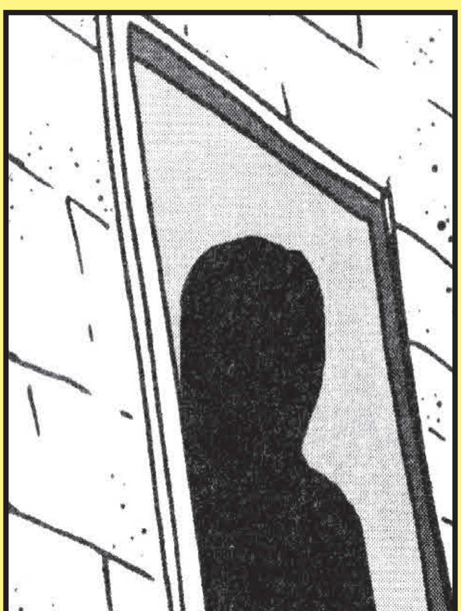

; vyd gSA
lkeu d ?kj e
jgrk gSA ej
ekrk&firk vyd
dk vDlj [kku
d fy, cykr gSA

vyd cgr feyu lkj g
yfdu dHkh&dHkh e>
cgr 'ke vkrh g D;kfd
og n lj jk dh ryuk e e>
ij T;knk /;ku nrk gA
!?
vyd ej lkFk vdy
jguk ilan djrk gA
yfdu e> mld lkFk
vdy jguk ilan ughA e
viu ifjokj d lkFk
jguk pkgrk gA

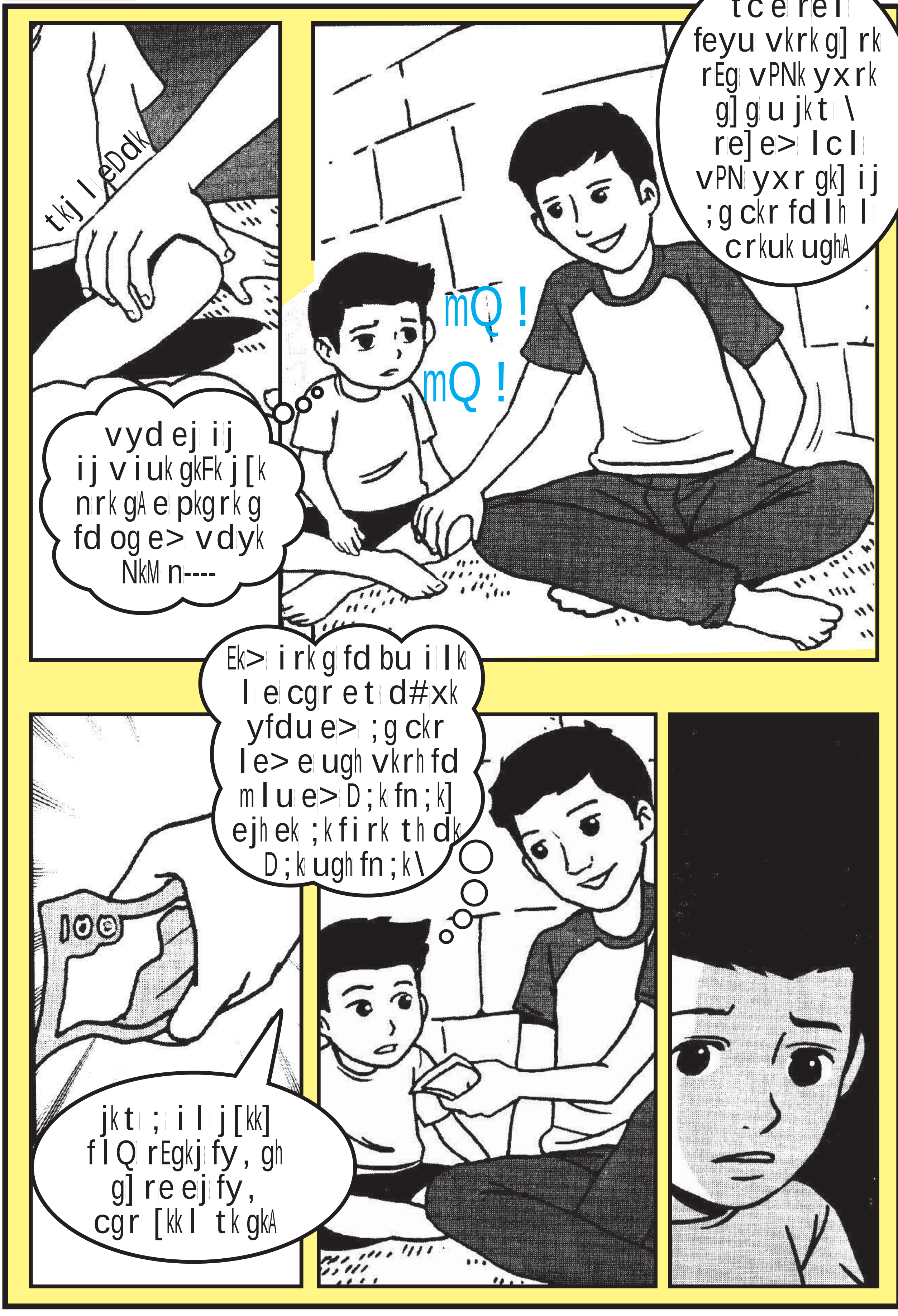
tc e rel feyu vkrk g] rk rEg vPNk yxrk g] g u jkt \ re] e> lcl vPN yxr gk] ij ;g ckr fdlh l crkuk ugh
tkj l eDdk
vyd ej ij ij viuk gkFk j[k nrk gA e pkgrk g fd og e> vdyk NkM n----
mQ !
mQ !
Ek> irk g fd bu ill l e cgr e t d#xk yfdu e> ;g ckr l e> e ugh vkrh fd mlu e> D;k fn;k] ejh ek ;k firk th dk D;k ugh fn;k\
jkt ; il j[kk] fl Q rEgkj fy, gh g] re ej fy, cgr [kkl tk gkA

jkt D;k rj e b l dgkuh d
bu 'kCnk dk 'kCndk'k e <<u e
enn dj l dr gk \

d	[k	Xk	?k	M	Pk	g
V	B	<	.k	Rk	N	{k
Lk	"k	'k	Ok	Fk	Tk	Ik
Ek	;	j	Yk	n	>	K
Ck	Q	Ek	Uk	?k	Tk	k
f		h				

D;k rj e 'kCn l ey
[kkrk pgjk cuk l dr gk \

fpfrr i l Uu n[kh Hk;Hkhr

e v iu ekrk&fi rk dk crkuk pkgrk
g Ykfdu e> cgr Mj yx jgk g
D;kfd mlu fdlh dk crku l euk
fd;k gA og dgrk g fd ;g i l fIQ
ej fy, gA tc vyd ej ikl gkrk g
rk e cMk v thc eg l l djrk gA
jkr d [kku ij cyku d
fy, /kU;okn l pep
cgr vPNk yxkA
re dHkh Hkh vk ldr
gk vyd] re ej ifjokj
dk cgr vPN yxr gkA
xn b/kj
Qdk!
[kyu e
cgr etk
vkrk gA

e>e jx Hkjk

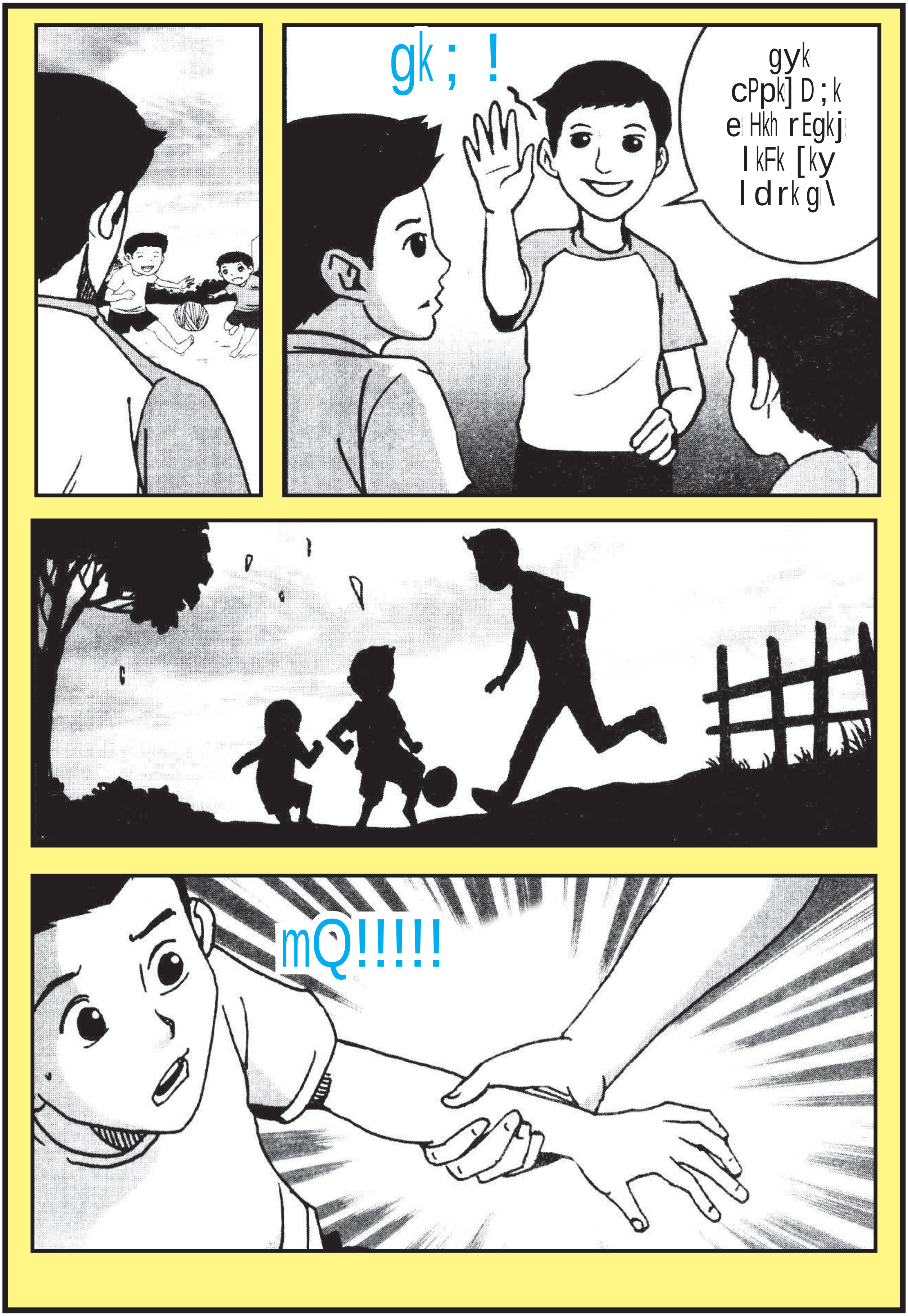
gk; !
gyk
cPpk] D;k
eSHkh rEgkjs
lkFk [ksy
ldrk g\
mQ!!!!!

Tkc Hkh e vdyk gkrk g rk vyd vD l j e> Nrk g] tl fd vkt m l u ej gkFk dk l gyk ;k tcfd b l dh dkb t :jr ugh FkhA
mQ !!
og ej furEc dk Hkh Nrk g vkj dkQh nj rd viu gkFk ogh j[k jgrk gA ;g cjk yxrk gA

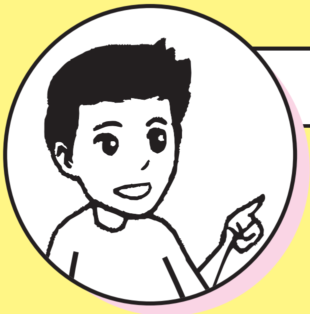

i'uk dk i<dj lgh mRrj nk&

1 vyd d lkFk jkt dlk egl l djrk g \

अ. खुश। ब. अजीब।

2 Okg viu ekrk&firk dk bl ckj e D;k ugh crkrk g \

अ. उसे यह अच्छा लगता है। ब. वह बहुत डरा हुआ है।

3 jkt dc [k'k gkrk g \

अ. जब वह अपने परिवार के साथ होता है।
ब. जब अलक उसे छूता है।

4 vkid fopkj l vyd d Nu ij jkt dk D;k djuk pkfg, Fkk \

अ. अपने किसी भरोसेमंद को यह सब बताना था।
ब. यह सब बंद होने की उम्मीद करता।

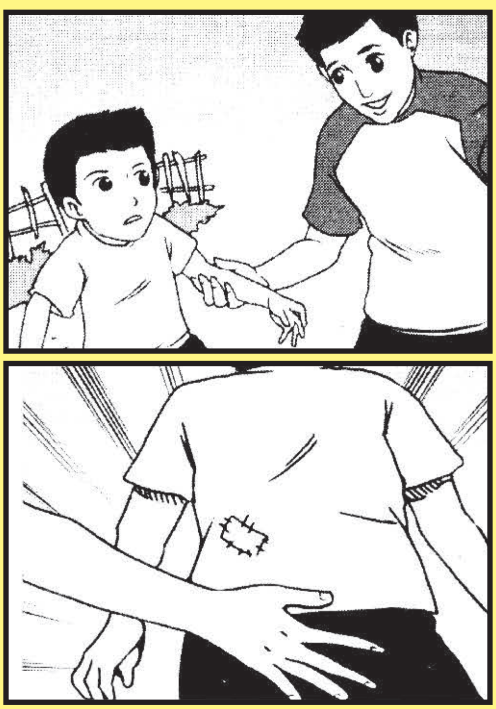

vyd d lkFk e vlgt vkj vthc& lk egl l djrk gA igy e> ;g lc le> ugh vk;k yfdu e> ge'kk fl [kk;k x;k gA

fd lh Hkh cM }kjk rEgkj 'kjhj d ikboV vxk ;k fd lh vkj txg dk Nuk Bhd ugh g ft l re cjk ;k vthc eg l l djr gkA

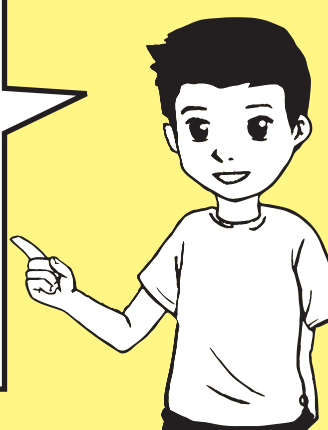

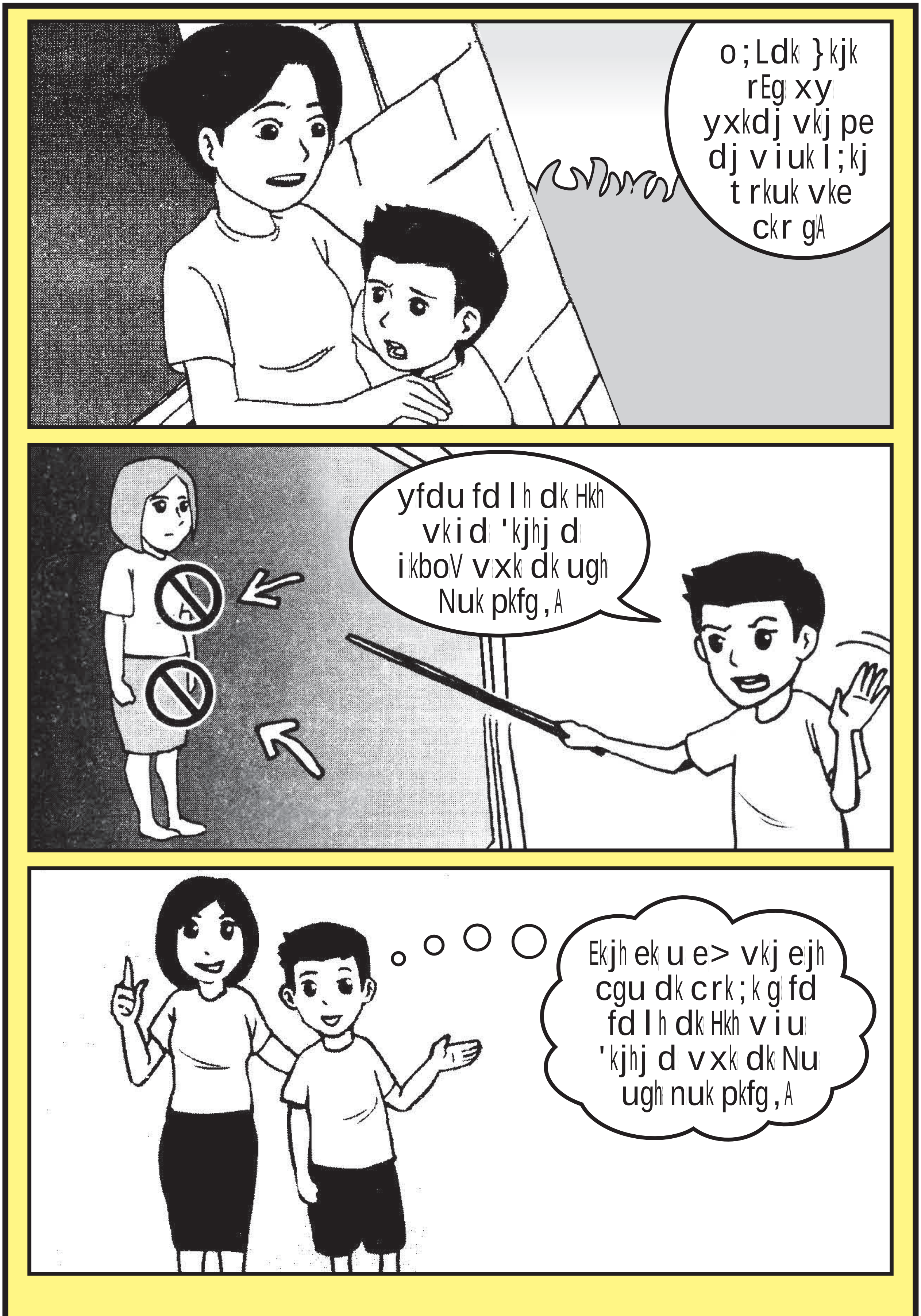
o;Ldk }kjk rEgxy yxkdj vkjpe dj viuk l;kj tkuk vke ckr gA
yfdu fdlh dk Hkh vki d 'kjhj d ikboV vxk dk ugh Nuk pkfg,A
Ekjh ek us e> vkj ejh cgu dk crk;k g fd fdlh dk Hkh viu 'kjhj d vxk dk Nu ugh nuk pkfg,A

e> ,l er Nvk vyd! e> ;g i l n ugh! RkEg bl rjg e> Nu dk dkb vf/kdkj ughA e v iuh ek dk l c dN crku tk jgk gA
vkj Okgk l Hkkx x;kA
fVd
fVd

ek] vyd e>
ij 'kku djrk g
vkj ej ikboV
vxk dk Nrk gA
jkt] re cgr
cgknj gkA reu e>
crk fn;k vPNk
fd ;kA vyd cjk
vkneh gA el okn
djrh g fd og vc
dHkh rEgkj lkeu
ugh vk,xkA

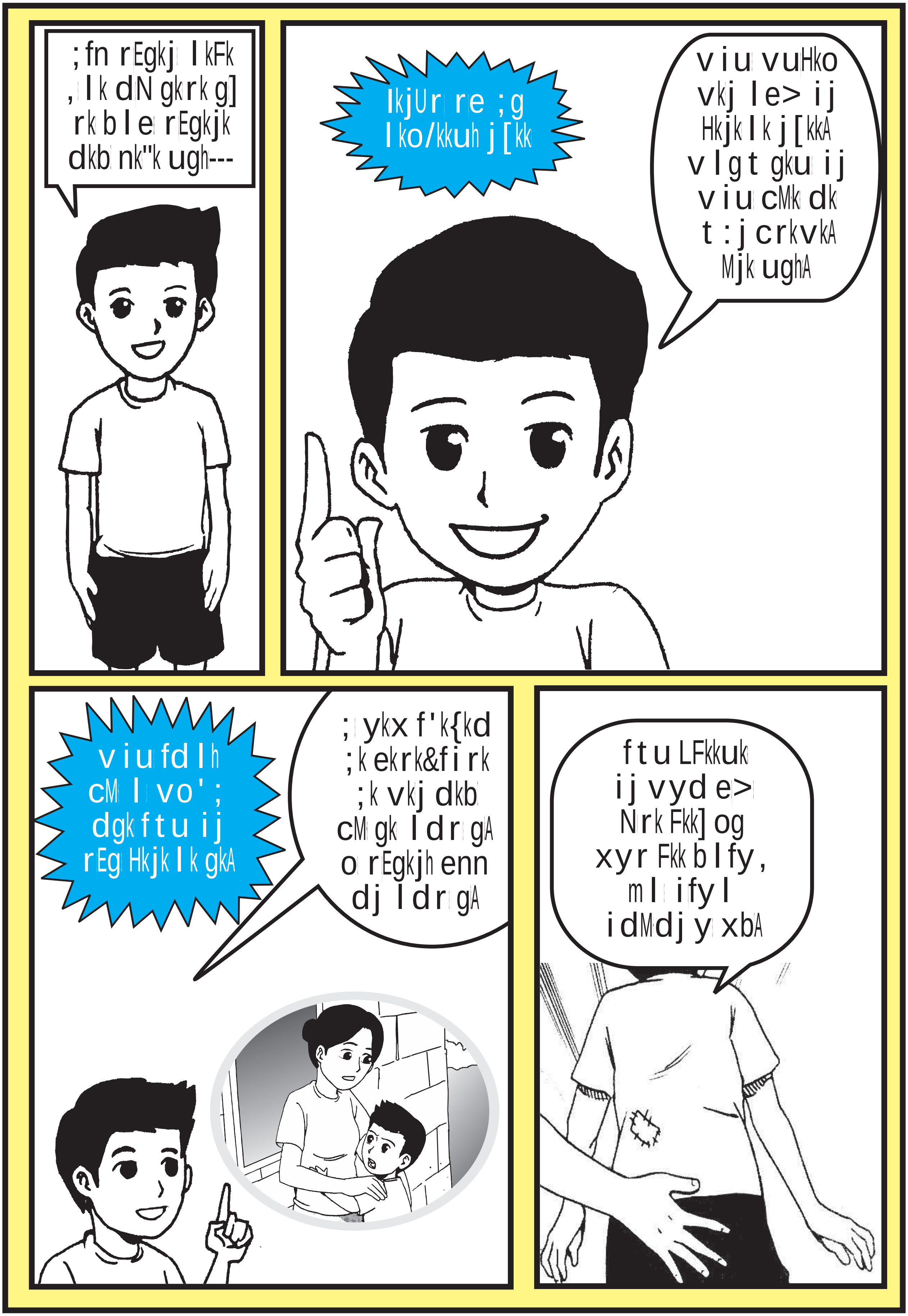
; fn rEgkj lkFk ,lk dN gkrk g] rk b le rEgkjk dkb nk"k ugh---
lkjUr re ;g lko/kkuh j[kk
viu vuHko vkj le> ij Hkjk lk j[kkA vlgt gku ij viu cMk dk t :j crkvkA Mjk ughA
viu fdlh cM l vo'; dgk ftu ij rEg Hkjk lk gkA
; ykx f'k{kd ;k ekrk&firk ;k vkj dkb cM gk ldr gA o rEgkjh enn dj ldr gA
ftu LFkkuk ij vyd e> Nrk Fkk] og xyr Fkk blfy, mlls ifyl idMdj y xbA

vc ej fy, l c dN Bhd g] D; kfd eu v iuh ek dk l kjh ckr crk nh FkhA
ejh dgkuh l rEg v iuh l j{kk dju e enn fey xhA ejh 'kHkdkeuk,

;fn re viuh lj{kk d ckj
e fpfUrr gk rk bu uEcjk
ij ckr dj ldr gk&
Hkkjr
100 & jk"Vh; ifyl
1098 & cky lgk;rk gr
¼pkbYM gYi ykbu½
viu ifjokj ;k vkl&ikl miyC/k dkb uEcj
ft lre ;gkfy[kukpkgk&

D;k jkt dh dgkuh rEg ;kn g&

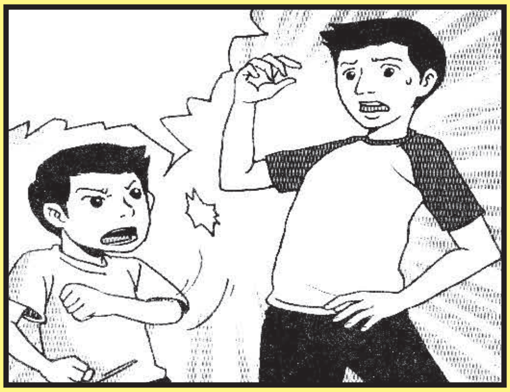

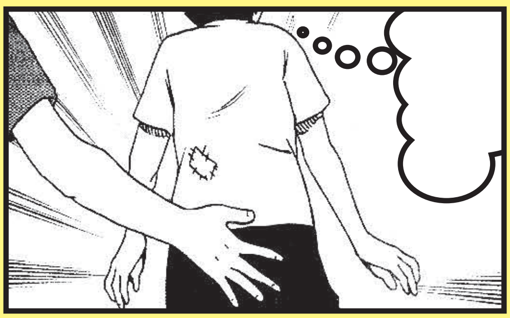

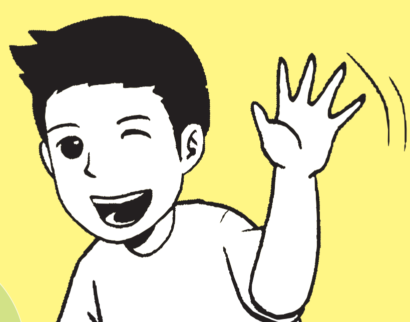

एक न्यूनतम स्वच्छ विद्यालय पैकेज

(स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय)

पेयजल है स्वच्छ, स्वच्छ है शौचालय,
स्वच्छ रहते हैं बच्चे, स्वस्थ है विद्यालय।

स्रोत – स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय, एक राष्ट्रीय मिशन, एक पुस्तिका, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

स्वच्छता के सात घटक

(स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय)

पीने के पानी का सुरक्षित रख रखाव

गंदे पानी का सुरक्षित निष्पादन

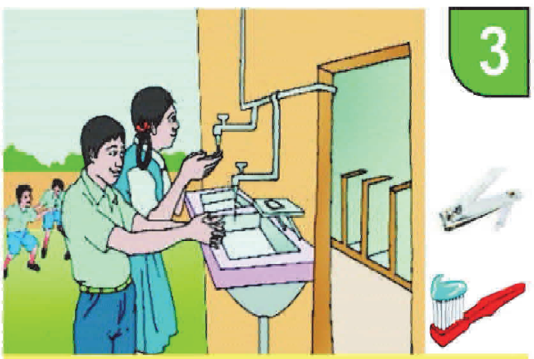

व्यक्तिगत स्वच्छता

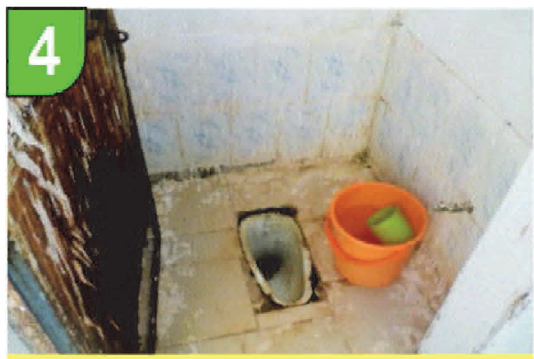

मानव मल का सुरक्षित निष्पादन

पर्यावरणीय/ ग्राम स्वच्छता

कूड़े कचरे व पशुमल
का सुरक्षित निष्पादन

घरेलू एवं खाद्य स्वच्छता

सभी रोगों की एक दवाई, बस रखनी है साफ सफाई।

स्रोत – स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय, एक राष्ट्रीय मिशन, एक पुस्तिका, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार